चौ०–निशिभरकराबिश्राम प्रातसबक्षत्रिनकोबुलवायो
राघवसिंधु तालपर जा भूपति प्रबन्ध करवायो ॥
इतै गवरि पूजन मछुला को डोला बागन आयो।
उत आल्हा निज अस्प सजा आखेट करनको धायो।
दौड़–हुआ आल्हा का आना।इधर मछुलाका जाना।
देख सूरत अनमोली ।
राघवमच्छ नृपाल सुतायों बचन सखी से बोली ॥

मछुला का

दोहा–ऐ आली यह देखतौ, कहांको राजकुमार ।
कमरबँधी तलवार शुभ, घोड़े पर असवार ॥
चौ०–घोड़ेपर असवार छबिछटा छलियाछैलछबीला
माहताब सा आफ़ताब सा चपला सा चमकीला ॥
नौजवान रुस्तम समान सजधज गुणवान सजीला।
बलनिधान अति रूप खानि सुन्दर सुज्ञान रँगीला।
दौड़–सखी यह कुमर निराला।बदन सांचेका ढाला॥
चन्द्रसा रूप उजाला ।
बयबाला रहने वाला कहां का थे घोड़े वाला ॥

सहेली का

दोहा–ऐ मैना चञ्चल चतुर, मछुलावति गुणधाम ।
ये घोड़ा वारो सखी, रहै महोवे ग्राम ॥
चौ०–रहै महोवे ग्राम नाम आल्हा बिक्रमी बलीहै ।
छबिकी चली लली क्या इन महाछबिकी छटाछली है
ये जवान दिनकर समान आली तू कमल कलीहै ॥
जो तोय यह बरमिले तो तेरी जोड़ी बने भली है।
दौड़–अमर वर इनपायोहै।सुयश चहुँदिशि छायोहै

स्वयम्बर में आयो है ।
बनाफल वंशावतन्श भट जस्सराज जायो है ॥

मछला का

दोहा—जा चन्दाको बिधाता, पायो दरश चकोर ।
सो बर मोकूं मिले प्रभु; कहूं युगल करजोर ॥
चौ०—जन्मसफलहोमोर युगल करजोर निहोरकहूं मैं।
अंतरयामी करुणाकर सुन्दर बर यही चहूं मैं ॥
बृत निरजल पूनो एकादशि नो नोरता रहूं मैं ।
होंय मनोरथ सिद्धि दानतो गो गजराज दऊं मैं ।
दौड—मिलेबर घोड़ा बारो । बनाफल कुल उजियारो।
कृपा कीजे गणनायक ।
बरदायक सब लायक सुख दायक गजबदन बिनायक

कवि का

दोहा—करातिमनोरथमनहिंमन;सखिन सहितपिकबैनि
उपबन को कीना गवन, मछुलावति मृगनैनि।
चौ०—मछुलावति मृगनैनि मैनमद मथनीकांतिप्रभाकर
सखिन मध्य शोभित ऐसे उड़गणमें पूर्ण निशाकर ।
छबि समूहमें यथा महा छबि छबिलखि छिपतछपाकर
गिरिजा भवन बनो उपवन में पहुँची तहांपरआकर॥
दो०—शशिमुखी गति गयन्दनी।नैनागढ़ ईशनन्दनी
जाय मंदिरागिरिजाके ।
पूजन करि वंदना गवरि की स्तुति करै बना के ॥

मछला का गौरी की स्तुति करना

दो०—जैरजै जग जननि जै,जै रिधि सिधि दातार ।
जै बरदायनि जै सती ; जै २ प्रिय त्रिपुरारि ॥

चौ०–जै२ प्रिय त्रिपुरारि गवरि जै२ गिरिराज किशोरी
भव २ बिभव पराभव कारिणि शिवमुख चन्द्र चकोरी
शिबा भवानी रुद्राणी बंदना करूं कर जोरी।
तोरी आशा लई मात पुजवो अभिलाषा मोरी ॥
दो०–बनाफल वंश दिवाकर। देउबर मोइ कृपा कर॥
जयति जै वेदन बरणी।
आदि शक्ति सर्वत्र सर्व व्यापक कलेश त्तय करणी।

कवि का

दो०–गवरि पूजि इत मछलदे, पहुँची राघव ताल।
शोभित सुमन सुहावनी, कर कमलन जयमाल
चौ०–कर कमलन जैमाल बदन द्वादश आभूषणधारे
कारी सटकारी लटलखि फणधारी चकित निहारे।
भारे मान रती युबती बिजली सम कोंधा मारे।
सूरतकी सोहनी रूप मोहनी नृपन पर डारे॥
दो०–कमलवत नैन खञ्जनी। मान मनमथ प्रभंजनी
निरखि नृप चकित भये सब।
राघवमच्छ नृपाल हाल बंदीजन बोल लये तब॥

बन्दीजन भाटन का

दो०–श्रीराजा महाराजजी, राघवमच्छ नृपाल।
धन्य धन्य धनि धन्य धनि, करन प्रजा प्रतिपाल
कवित्त–तोमर के बन्श अबतन्श उत्पन्न भये सुजस
तुम्हारे भूप छाये देश२ हैं। नावत निहोरशीश चापत
तुम्हारे पद झांपत बिशाल अरि कांपत नरेश हैं॥
क्रोध धारिवे में शेष तेजमें दिनेश तुल्य धनमें धनेश
आप रणमें सुरेश हैं। नीति रीति जानिवे में पेज

प्रण ठानिव में द्रुपद बतावें या बतावें मिथुलेश है।

राघवमच्छका

दो०–बंदीजन सुन लीजिये, मेरी बात चितलाय।
प्रण हमार सब नृपन से, कहो बुझाय बुझाय।

भाटन का सब राजन से

दो०–छत्रपती नृप नरपती, बड़े २ उमराय।
जो प्रण राघवमच्छ का, सब से कहैं सुनाय।
चौ०–सबसे कहैं सुनाय सुनौं सब भूपति छत्तरधारी।
उठो देखि लेउ नैन खोल ठाड़ी मछुला सुकुमारी।
फेरि निहारो राघव सागर पड़ी मच्छ बलकारी।
जो कोई मारै मीन सोई बर लेजाय राजदुलारी॥
दौड–ज़ोर जिसके भुजदंडा। उठो सो भूप प्रचण्डा॥
मारकर मछली लाओ।
अतुल कीरती बिजय पाउ और मछलावतिको ब्याहो।

कवि का

दोहा–सुनकर भाटन के बचन; दे मूंछन पर ताब।
उरईपति माहिल उठे, मारन मीन शिताब॥

माहिल का

दोहा–सिंह शिकारी के लिये; क्या ये भारी बात॥
कूद सिंधुमे मीन हम, मारें पहले हात॥
चौ०–मारेंपहले हात तुच्छ मछलीसे क्या दहलावें।
हम वे छत्री कायर नाहीं पीछे को रहजावें॥
पहलेई हल्ला वार करें यमकाल चहे चढ़ि आवें।
मुख पिटाय सब भूप जांय हम जयमाला गिरवावें॥
दौड–पिता हमरे जग जाहर। तिन्हींके हमसुतनाहर।

बंश परिहार उजागर ।
लाज रखैया श्री जगदम्बा हम कूदेंहैं सागर ॥

कवि का

दोहा—तुरत जांगिया पहर के; ताल खम्भ फटकार ।
माहिल कूदो तालमें, बांध ढाल तलवार ॥
चौ०—बांध ढाल तलवार बढ़ो दे दे हुङ्कार अगारी ।
दांये करसे तेग घुमावे बांए ढाल सम्हारी ॥
पहुँचो निकट मीनके जाकर जबमछली फुंकारी ।
तेग ढाल तालमें पटक भागो माहिल बलधारी ॥
दौड़—फेर बांदोपति मोती । कूदे कर ऊंची धोती ॥
मीन जब पलटा खायो ।
उलल पुथल जलहोत भगो तब भाटन बचन सुनायो

भाटों का राजाओं से

दो०—आए मछला को बरन, बड़े २ रणधीर ।
कूदो कोई और भट, जो होवे बलबीर ॥
चौ०—जोहोवे बलबीर तीर मछली के जायअड़ोअब।
चाहो व्याहन मछलातो हिरदो करलेउ कड़ो अब ॥
थोथी मूंछ मरोरो क्यों सागर में कूद पड़ो अब ।
या मछली के मुक्काबिले कोई भट सामन्त लड़ोअब॥
कबित्त—ताल फटकार तलवार को उघार कर उरहीके
माहिल बजाए बड़े गालहै । चुगल भिड़ाबेदूतकायर
कपूत ऊत बनि रजपूत जाय कूद परो तालहै॥मारीहै
फुंकार मीन भागे परिहार नृप कहूं तेग कहूं पाग
गिरी कहूं ढाल है । ऐसे शूरबीरन से नाहिं चलेकाम
कुछ कूदो मीन मारो कोई बीर बिकराल है ॥

दौड़–भट विरियासिंहसे हाती। डेढ़गज जिनकी छाती
और भी छत्री भारी।
किस त्रिरते पर आए हो यहां वरने राजदुलारी ॥
कवि का
दोहा–सुनकर भाटनके बचन; पटकी घरणि कृपान।
कोट कसौंदी के उठे, लोहा बूंदा ज्वान ॥
चौ०–लोहा बूंदा ज्वान प्रथम लोहा सागर में कूदा।
जिधर पड़ी थी मीन उधर को गया शूरमा सूधा।
तीन घडी तक लडो मीन से लयो खूब अजमूदा ॥
मुखहूदा दयो मीन भगो लोहा तब कूदो बूंदा।
कडा–प्यारेजी पांच घड़ी तक युद्ध मीन के संग मचायो। एक पेश नहीं गई फेर मकरन्दी आयो ॥
दु०–एक पहर युद्ध मकरन्द कीनों फिर कडिया सागर गाजो है। दोपहर मीन के लडो मुक़ाबिल आखिर पीछे भाजो है ॥
ला०–पुनि विरियासिंह धाये लंगोट चढ़ाकर। इतनेमें अम्बर छिपगयो जायदिवाकर ॥ महाराज स्वयम्बर कियो नृपति ने बन्द। निजर डेरा छत्री सोये मनमें मान अनन्द ॥ होते ही प्रात। बिरियासिंह कूदो जलहै दस क़दम रेद मछली लेगयो कर बलहै ॥ महाराज कियो जिसदम मछली ने जोर। बिरियासिंह सौ क़दम हटगयो भागो मुखको मोर॥ बिरियासिंहभागत सकल नृपति दहलाए। तब जोर बांधकर कान्हराय भट आए ॥ महाराज मीनको रेदी क़दम पचास। जादम कीनों जोर मीन ने उड गये होश हवास ॥

फिर कान्हराय ने दूसर जोर लगायो । मछलीन हटी एक कदम खुन हग आयो ।। महाराज बचाकर कान्ह राय निज जान । त्यागि मीनको भगे हांफते भैंसा के अनुमान ।। फिर दो घंटा होगये उठी कोई नाहीं । सब कान्ति हीन भये भूप डरपि मन माहीं।।महाराज बैठे सब नीची करके नार । कहै इन्द्र यह गति लखि राघवमच्छ कहे उच्चार ।।

राघवमच्छ का राजो से

दोहा—कीन किन्हू बसमें नहीं, मीन पीन पाठीन ।
अब हम जानी भई सब, पृथ्वी बीर बिहीन।।
चौ०—पृथ्वी बीर विहीनभई मैं सकल बात पहचानी।
चत्री जनो न घरणि रही कोई जगमें नहीं चत्रानी।।
हा बेटी रहगई कुआरी ब्रथां ठान मैं ठानी ।
बामनगढ़ यहां जुरे न निकसो किसी भूप में पानी ।
दोड—जाउ नृप अपनेघरघर।होगया खतम स्वयम्बर।।
तुम सबने अच्छो कीनों ।
नहीं किसी को दोष कर्म है मेरी सुताको हीनों ।।

कवि का

दोहा—आल्हा को तामस छयो, सुनत नृपतिके बेन ।
हाथ जोर परमाल से, लागो ऐसे केन ।।

आल्हा का

दोहा—क्या मछली ये चीजहै, महुबे के सरदार ।
कटुक बचन तापर रहे, राघवमच्छ उचार ।।
चौ०—राघवमच्छ उचारकहे सुनिफुको तनबदनजाऊँ।
कहो सिंधु से या मछली को बाहर फैंक चलाऊँ ।।
कहो दन्तधावन सम चीरूं तनक न देर लगाऊँ ।

तो चाचा तुम पदको सेवक आल्हा नाम कहाऊं ॥
दौड़—चचा अब देर न कीजे । हमें आयसु दे दीजे॥
बीरता सबै दिखाऊं ।
प्रण भूपति ततकाल पाल जगमें यश कीरति पाऊं ॥

परमाल का

दोहा—कर २ बल भूपति सकल; गये मीन से हार ।
कैसे तोइ आज्ञा दऊँ, बेटा प्राण अधार ॥
चौ०—बेटा प्राण अधार न निकसे मुखसेगिराहमारी।
मीन हीन बल करन मान छित्रिपाल नशावनहारी॥
लाल दिरौना छौना मोकूँ जान तुम्हारी प्यारी ।
कहा दऊं उत्तर दिवलाको आल्हा कुमर हजारी ॥
दौड़—करे तुम जाउ न न्यारे । मेरी आंखन के तारे॥
तुही महुबे की नैया ।
जान बूझकर काल गाल में भेजों जाइ न छैया ॥

आल्हा का

दो०—श्रीरघुबरने जनकपुर, कठिन कराल प्रचण्ड ।
अति लाघव लीनों उठा, शंकर को कोदंड ॥
चौ०—शङ्करको कोदंड खंड करि पटक दयो ब्रह्मंडा ।
तिमि कुंदुक सम फैंक उछारूँ सागर मीन प्रचंडा ॥
कमल नाल सम हाल बीच से करूँ चीर दुइ खंडा।
कीरति बिजय बीरताको जगमाहिं गाढि दऊँ झंडा॥
दौड़—चचा हम सिंह शिकारी कहा ये मीन बिचारी॥
नहीं मन माहिं डरूं मैं ।
दीज हुक्म मीन मारूं भूपति प्रण पूर्ण करूं मैं ॥

कवि का

दोहा—कहि इतनी आल्हा तुरत, लंगर कसो सम्हारि।
देख कहै इत सखी से, राघवमच्छ कुमारि ॥

मछला का

दो०—देख सखी ये बड़ी कुँवर, घोड़ा को असवार ।
कहां मीन बलवान अतिः कहां ये राजकुमार॥

चौ०—राज कुंमरको देख आश टूटत सब छूटत धीरा
वय किशोर चितचोर मोर बर कोमल कमल शरीरा॥
अली सिरस की कुसुमकली से नहीं छिदनको हीरा ।
कमल नाल के ताग बंधे कैसे गयंद बलबीरा ॥
दोड—मोर मन डटै न डाटो । जाय मम हिरदो फाटो
न पितुको कोई समझावे !
कैसे बाल मराल सखी मन्द्राचल मेरु उठावे ॥

सहेली का

दो०—क्यों घबराई जातहै; धर अपने मन धीर ॥
तेजवन्त छोटो बड़ो, देखो जाय न बीर ॥

दादरा सारंग—आली धीरज धाररी घबरावे मतीना।
छोटे से देख मुनि अगस्त ने सोखो सिंधु अपाररी॥
घबरावे०छोटो सो रवि मंडल नाशत त्रिभुवन को
अंधियाररी । घबरावे०।छोटो मंत्रकरे बस मैनाबिधि
मुरारि त्रिपुरारिरी । घबरावे०॥ छोटो सो अंकुश
हाथी को धरणि देइ बेठाररी ।घबरावे० । निश्चय
तोइ मिलेगो मछला इन्दरमन भरताररी।घबरवे०॥

मछला का

दो०—अतुल बली लोहा सुभट, बूंदा कंठी कान्ह ।
डिरियासिंह भागे बली, मछली से भय मान॥
छं०—बलवान बलकर मीनसे होकर सकलबल हीनहैं।
बैठे नृपति श्रीहीन कांति मलीन अति छबिछीनहैं॥
मेरे पिताकी एक संग बहना विधाता मति हरी ।
ऐसी कड़ी हट करी मेरी आवती हिलकी भरी ॥
कोई जायकर उपदेश बाबुल से सखी ऐसो करे ।
प्रण छोड़ अपनो या कुँवर के संग में मोकूं बरे ॥
सो मोइ यह सिख देन हारो नहीं दीखै है कहीं ।
बर सलोना छबि सोहना मन मोहना मिलनो नहीं॥

सहेली का

दोहा—जनक पैज कीनी कठिन, तुड़वावन शिवचाप।
बाणासुर दशशीश से, करि २ हारे दाप ॥
चौ०—करि २ हारे दाप चाप ना डिगो शम्भु को कैसे।
कामी के सुन वचन डिगेना धर्म सती को जैसे ॥
बिनु प्रयास रघुनाथ तोर धनु बरी जानकी तैसे ।
मीन मार नृप मान झारि ये कुंवर बरै तोइ ऐसे ॥
दोड—धीर धर कोकिल बैनी । मान रतिपतिहरलैनी॥
सकल सखियन सुखदैनी ।
स्वर्ग नसैनी गंग त्रिवेनी सुमिरो खञ्जन नैनी॥

कवि का

दोहा—मछलावति सुकुमारि को, सखी देरही धीर ।
उतमें राघव सिंधु सर, कूदो आल्हा बीर॥
ला०—आल्हा सागर में कूद मीनयों पकरी ।

जैसे कोई नाहर आन दबावे बकरी । महाराज जोर कर रेदी क़दम हज़ार । फिर झटका दे कुन्दुक सम ऊपरको दई उछार। थूथरो पकड़ के खेंचे इतउतडोले मुख बार २ जै जगदम्बा की बोले ॥ महाराज मीन को इस बिधि रहा नचाय । डाबे जल में कभी कभी ऊपरको लेय उठाय ॥ बहुतेरो मछली अपनो जोर लगावे । आल्हा क्षत्री नहीं पीछे कदम हटावे।महाराज तमाशा देखें सब नरनारि । दान गऊ गज के मछलाबति बोले बारम्बार। फिर आल्हा पकरी पूंछ मीनकी डटके । मछली खा पलटा तनसे गई लिपट के ।महाराज महाबल मीन लगायो होक: गज गोता जलमें तब आल्हा ने खायो है । आल्हा जगदम्बा सुमिर करो फिर बल है। मीनसे छूटकर आयो तुरत उछल है । महाराज फेर दाबा मछली ने आइ । आल्हा को सौक़दम लेगई जलके मांहिं हटाइ ॥ तब ठाडो जलमे भयो बनाफ़र लाला । लेकर उसास फिर जोर लगायो आल्हा ।महाराजमीन फिर साठि क़दम हटजाय। घरमछली रेदे आल्हाको क़दम डेढ़सो जाय । आल्हाको पुरुषारथ होतो जाय कमहै । मछली को बढ़े हैं लड़ते २ दम है। महाराज थको आल्हा अपने मनमाहिं । फिरै रेदती मछली जलमें हार मानती नाहिं ॥ बे दम कर आल्हा मछली लयो दबाई । मुख फार लीलगई तनकन देर लगाई ॥ महाराज न दीखो फेर बनाफल लाल । कहैं इन्द्रमन

रोय उठे तादम राजा परमाल ॥

परमालकाविकल होकर

दोहा–आहि प्रभू कैसी करी, श्रीपति जादौंराय ।
एक सङ्ग ऊपर मेरे, दयो बज्र सरकाय ॥

छं०–बज्जर शिला सरकाय महुबेमें अँधेरो करदयो ।
हौ रांड़को छैया कन्हैया भेट सागर ने लयो ॥
मैं नहीं स्वयम्बर आवतो जो जानतो ऐसी कहीं ।
नैया मेरी को खिबैया स्वामी तुमन छोड़ो नहीं ॥
बेटा मेरे मलखान ऊदलकी भुजाको तोड़के ॥
बूढ़े चचा को रोवतो आल्हा कहां गयो छोड़के ॥
महुबे से लायो सँग में सो सुत गमायो यहांहरी ।
चौपट में डूबी नाव हा करनी कहा खोटी करी ॥

कवि का

दो०–चंदेले परमाल इत, रोवत आंसू डार ।
इतै सखी से कहत है, राघबमच्छ कुमारि ॥

मछला का सखी से

दो०–जोबर मनक्रम बचनसे, लीनों मैंने मान ।
सो वर मेरो ऐ सखी, छीन लयो भगवान ॥

छं०–भगवानसोबरलियोंलैकाऊबिधि सबरकरनीनहीं
जोगिन बनूं मालालऊं बर दूसरो बरनी नहीं ॥
जिन्दी रहूं दुख सहूं तासे घात प्राननकी करूं ।
दे२ सखी नेक जहर मोय मैं खाय सागर पै मरूं ॥
उठती हिलोरें पेटमें नहिं सही जावै बेकली ।
मेरी मेरे पिय प्राणकी बैरिन भई मछली अली ॥
सूरत न ये चित से हटै रो २ के जान गमाउंगी ।
जग जन्म सो धरि आउंगी पर बर न ऐसो पाउंगी

सहेली का

दो०—देबी को सेवक सखी; तेरो बर सुज्ञान।
याकूं जगदम्बा दयौ, अभय अमर बरदान ॥

छं०—देबी ने करदीनों अमर मारो किसीको ना मरे।
रोवे मती मङ्गलावती जाने बिधाता क्या करे॥
सजनीसुमिरगणपतिरमापतिउमापति शक्तीसती।
कर बीनती फेरें रती उच्चरे सखी तेरो पती॥
क्यों दृग भरे बिष खा मरे भगवान सब सङ्कटहरे
कोई घड़ी गुजरे अभी निकरे यही बर तोकूबरे॥

मङ्गलाकादेवीकी स्तुतिकरना

दो०—श्रीमन्महागणाधिपति, करन सुमङ्गल काज।
एक रदन करिबरबदन, सिद्धि सदन गणराज।

ला०—गणराज बिनायक लम्बोदर गणनायक। बर देउ यही बरहो प्रसन्न बरदायक॥ महाराज बिघ्न नाशन सब बिघ्न हरो। मो दुखिया दुर्भाग दीनको दारुण दुक्ख दरो। श्रीपति समेत श्रीबिधि समेत ब्रह्मानी। ह्वजे दयाल मोपर भव सहित भवानी॥ महाराज देव अरु पितर सुकृत सब मोर। होउ सहाई आज जोरकर कहूं निहोर २। श्रीजटा शङ्करीपाप क्षय करी गङ्गा। जयकरी दुसहदुख दरी करो दुख भङ्गा। मेरी मात तुम्हारी सेबा करी अपार। बन्नाफलबंशावतन्सही मिले मोय भरतार॥ मनक्रम बच सेजो मेरोप्रण सांचोहै। जसराजकुमर पद पङ्कज मनराचोहै महाराज सकल उरबासी श्री भगवान। तो सागर

से उद्धर ये वर हानि मीन बने पति प्रान ॥
कविका
दो०—करि करुणा इत मल्हनदे, देवन रही मनाय ।
इत ऊदल से कह रहे चंदेले अकुलाय ॥
परमाल का
दो०—आल्हा बेटा जहां गयो, देकर दुक्ख कराल ।
मेरो हू शिरकाट अब, पटक उदेचँद ताल ॥
चौ०—पटकउदेचंद ताललाल बिन साहस धीरज छूटो
आज अचानक आइ वज्र गोला मम ऊपर टूटो ॥
बूढ़ेपन में हाय कन्हैया कर्म हमारो फूटो ।
जीवत दीनों मार मोइ करतार सब तरह लूटो ॥
दो०—बिन आल्हाके नैया । पारको करे कन्हैया ॥
तनक मत तरस बिचारो ।
लाल बिशाल छिपो मेरोहु हानि भाल तालमें डारो
ऊदल का
दो०—चाचा आफत कालमें, धरनी चहिये धीर ।
सो सब ज्ञान बिसारकर, लगे बहावन नीर ॥
चौ०—लगे बहावन नीर पीर क्या मुझे बीरकीकमहै।
तुम्हें कौन परवाह चचा जब तक ऊदलका दमहै ॥
क्या मल्हनी ये चीज़ मार बामनगढ़ करूं खतमहै।
बाज बेंदुला अरु यह तेग़ा रहे मेरा क़ायम है ॥
दो०—चचा मत तजो धीरको । निकालूं अभीमानको
कूद सागर जाताहूं ।
यातो जान गमाता हूं या मीन मार लाता हूं ॥
मल्हानका
दो०—ऊदल मेरी मान सिख, अभी उमरनादान ।

तू भैया मत ना परे, या मछली के ख्याल ॥
चौ०—परे मतीना ख्याल मान शिक्षा मम बीरबलीहै
तू मत कूदे कूदूं मैं टूटूं ऐसे बिजली है ॥
इन भुजान मलखान हने सागर महान बली है ।
मिसलूं पकड़ थूथरो जिमिकोई मिसले कमलकलीहै॥
दो०—मीनको तोपे ऊदल। सह्यो नहीं जावेगो बल॥
बीर मैं कूदुं सागर ।
मार पार धर मीन करूं बन्नाफल कोख उजागर ।
ऊदल का
दो०—समर मीन से मैं लडूं, ऐ भैया मलखान ।
तुम ठाड़े देखत रहो, ऊपर से मलखान ॥
चौ०—ऊपर से मलखान कूद नाहर समान सर जाऊं
बल कर मछली रेद २ जल में खलबलो मचाऊं ।
पकर बीच से ताहि बनेटी के मानिन्द घुमाऊं ।
काली नाग कृष्ण नाथो मैं मीन नाथ कर लाऊं ॥
दो०—हुक्म तुम करते जैयो । भूलूं तो अक्लबतैयो।
तमाशो देखत रहियो ।
मोबल दुर्बल होय कूद तब तुम सागर में अइयो ॥
मलखान का
दो०—एक न माने जाय तू, मीन हनन रणधीर ।
दिवला कोख बहोरियो, मती डोबियो बीर ।
ऊदल का सभा से
दो०—सकल सभासद सभाके; छोटे बड़े तमाम ।
ऊदल सागर जातहै, लीजे जे हरनाम ॥

कवि का

दो०-सकल सभाको नाय सिर, जस्सराज को लाल।
ताल खम्भ फटकार के, कूदो राघव ताल ॥
आ०-उदैराज सागर में जाकर दई मीनमें ठोकर
मार साठ क़दम हटगई पिछारी फेर मीन आईफुङ्कार।
नर ऊदलको घर कर दाबो लेगई क़दम पचासहटाय।
जब मछली ऊदलने रेदी रुकी क़दम दोसौपर जाय॥
गुसां खाय तब मछली रूरीइतसे जुटो बनाफललाल।
दोऊ लँगसे भई रेदा रेदी उथलपुथल जल डोलैताल।
खाब होगई सब सरबरमें होय परस्पर युद्ध अपार।
लिपट २ तन मछली जावै ऊदल धर २ देइ पछार।
नर ऊदल अरुमीन पीनकी भारी भई समरमें मार।
लड़त २ बल पौरुष थकगये दोनों गये फस्रूकरडार।
ना मछली ऊदल से हारे हारे नहीं उदैचँद ज्वान।
यह गतिदेखी नरबङ्काकी बोलो धवल बीर मलखान।

मलखान का

दोहा-सौ२कुञ्जरको तेरे, बिरन भुजवलन जोर।
सो बल तेरो कहां गयो श्रीजसराज किशोर।
चौ०-श्रीजसराजकिशोरविलोकत कहाचकितचहुँओरा।
मीन पीन पाठीन छीन बलहीन कीन क्या तोरा।
झखमारो न कूद झकमारो नाम बनाफल बोरा।
मारमच्छ दिवला कुमार जलमें दे दे झकझोरा॥
दो०-भयोनिर्वल ऊदलतू।सिंधु से आउ निकल तू॥

कूद सागर में आऊं ।
मीन मारकर पार ला धरूं तौ मलखान कहाऊं ।।

ऊदल का मीन मारना

दो०—कर २ बल या मीन से, शिथिल भयौ मलखान
सोचीना अनुचित उचित, दयौ ताहिनौतान।।
चौ०—दियौ ताहिनौ तान बान समधसौ।जिगरमें आई
प्रबल गर्जना करी मीन कुन्दुक मानिन्द उठाई ।।
छै गज चौड़ी नौगज मोटी सत्रह गज लम्बाई ।
मार पार ला धरी देख गये शूर सनाकौ खाई ।।
दौ०—बचे मछली से भाई । भई जगदम्ब सहाई ।।
पद शिर सब के धरता हूं ।
राम २ आदाब बन्दगी हाथ जोड करता हूं ।।

कवि का

दो०—सागर से जब निकल के, आयौ ऊदल ज्वान।
दोनों भुजा पसार कर, मिलौ बीर मलखान ।
चौ०—मिलौ बीरमलखान दान परमाल गऊनकौदीनों
ले कटार फिर धाय मीनकौ पेट चाक चट कीन्हों ।।
देखौ आंख पसार उदर दर बैठौ आल्हा चीन्हों ।
तुरत भुजा दोऊपकर बिरन बाहर निकारकर लीनों।
दौड़—रुईके पहल मँगाके। दियौ आल्हा दबका के।।
मगन मन सब नरनारी ।
बिरियासिंहके निकट जाय इत माहिल गिरा उचारी।

माहिल का

दोहा—बचन सत्य तुम से कहूं, समझो मती मज़ाक।
बामनगढ़ के नृपनकी; पड़ी पाग में खाक ।

चौ०—पड़ी पागमें खाक कटगई जड़सेनाक सबनकी
अब बनपड़ी गुलमटनकी रहतवा टुकरखोरनकी ॥
करी कुजातिन हदकबात बामनगढ़के राजन की ।
जगह न रही किसी चत्रीको बड़ो बोल बोलनकी॥
दौड़—पिसन हारिनके लाला । हाय पहरें जयमाला
भई इज्जत घटियनकी ।
कै सब मरो डूब कूआ या त्यारी करो लड़नकी ॥

बिरियासिंह का

दो०—बड़ी दूरकी बात तुम, सोचीहै परिहार ।
इसमें सब राजान की, होगी हँसी अपार ।
चौ०—होगी हँसीअपार बिलाशक लगै बातको बट्टा॥
अब जयमाल गुलामोंके पड़नी न समझिये ठट्टा ॥
बाजेगी तलवार महाभट मरें छरहरे बट्टा ।
ये रासो नहिं दूध बतासो कठिन मठा है खट्टा ॥
दौड़—जोर नृप बामनगढ़ के । लडें रणमें अडर के॥
भयङ्कर युद्ध मचावें ।
कैसे हमरे अछत ब्याहि मछला गुलाम लेजावें ॥

कवि का

दो०—इत बिरियासिंह सकल नृप जोर कमेटी कीन ।
इत माहिल आकर तुरत, ऊदल से जडदीन।

माहिल का

दोहा—देखि भानज उदैचँद इन राजनकी बात ।
करनो चाहत हैं खडो यहां कछु उतपात ॥
चौ०—करउतपात तुमारो हमरो कहा करें बदकारी ।
ऐसे ही जो शूरबीरहे मीन क्यों नहीं मारी ॥

खमु जूतिन के योग ब्याहनो चाहत राजदुलारी ।
गरये आवें लड़न करो सबकी बनाय कर ख्वारी ॥
दो०-कोट बामन क्षत्री अब। जुरे हैं नैनागढ़ सब।
अभै ऐसे अवसरमें ।
भुज पुजाय चंदेले को तेग़ा धुबाय सागर में ॥
बँदुल का माहिल से और सब राजों से
दो०-मामाजी यों लवापर, गिरे बाज करजोर ।
यथामत्तगज्ञ गणनिरखि,धावतसिंह किशोर॥
चौ-मत्त गयंदसमूह गाज्ञ मृगराज जिस तरह टूटे।
कमल सरोबर तोड़न हित गजराज जिस तरहटूटे।
ब्याल यूथ देखत बिशाल खगराज जिस तरह टूटे।
राजसमाज कराल लाल जसराज जिस तरह टूटे ॥
दो०-सकल कमेटी नृपनकी;होरही चकना चूर ।
पहुँचा वहांपर क्षणकमें. छयो क्रोध भरपूर ॥
शेर-कमेटी जोरकर बैठे सकल भूपाल बे मतलब।
इरादा लड़न का करते बजाते गाल बे मतलब ॥
मीन को मारकर मैंने पार सरबरकी ला डारी।
अजी इसको अगर कोई उठाले शूर बलकारी ॥
दो०-वही जयमाल गिराओ।शुभग मछ्लाको ब्याहो।
इरादाजो लड़नेका ।
लेउ सिरोही हाथ फेर क्या काम देर करने का ॥
कवि का
दो०-सुनकर ऊदलके बचन; उठे सकल नृपराज्ञ ।
पहले त्रिरियासिंह चले, मीन उठावन काज॥

बिरियासिंह का

दो०-इनभुजान कुञ्जर उठा. फेंक अनेकन दीन ।
मरी मराई तुच्छये; कहा बापुरी मीन ॥
चौ०-कहा बिचारी मीन मीन पर तुमभी बैठौआके।
बिरियासिंह के भुजाबलन को लेउ जोर अजमाके॥
जिमि रावण कैलाश उठायो सहितशम्भु गिरजाके।
तैसे मछली सहित गेंदमम तुझको लऊँ उठाके ॥
दो०-मीनको करपर धारूँ। कदम सोलह परडारूँ॥
बरूँ मछला सुकुमारी।
तौबिरियागढ़पति बिरियासिंह सुभट शूर बलधारी।

ऊदलका सब राजों से

दो०-जोतुम लेउ उठायकर; पूजूं भुजा तुम्हार ।
नहीं उठैगी मीनतौ, सुनो सकल सरदार ॥
चौ०-सुनोंसकल सरदारतोभुज चंदेले की पुजवाऊं।
भए भूप परमाल मुकुटमणि ये सबपर लिखवाऊँ ॥
मंडलीक की पदवी भैया आल्हा को दिलवाऊँ ।
जोकोई उज्र करे इसमें भुट्टासा शीश उड़ाऊं ॥
दो०-मेरे कर नागिन सिरोही। देख लीजे सब कोई।
उठाओ अब मछलीको।
बिरियासिंह आपही ब्याहिये राघवमच्छ ललीको ॥

बिरियासिंह का ऊदल से

दो०-बेशक भुजदें पूजकर, जो न उठैगी मीन ।
दामी भरें तमामनृप, हों तुम्हरे आधीन ॥

कबि का

दो०-ऊदलसे इस तरह कहि, बिरियासिंह भूपाल ।

तमकि ताकि गहिमीनको,लगे उठामनहाल॥
चौ०—लगे उठामन हाल प्रवल बलकरि बिरियागढ़वारे
झकझकाय झहराय पकड़ झखमें झकझोरा मारे॥
हालीतक ना मीन महाबल शाली बलकरि हारे।
पूज भुजा चन्देले की बिरिया।सिंह अलग सिधारे॥
ला०—तब कान्हराय भट आए मीन उठामन।मछला
ब्याकुलह्वै देवन लगी मनामन॥ महाराज अतुलबल
कान्हराय ने कीन।पूज भुजा चलदीन न सरकीतिल
भर उनपर मीन॥ यह हाल देख बामनगढ़ नृप दह
लाए। उठि२कर सब चंदेलेके ढिंग आए॥ महाराज
भुजा को कर पूजन भूपाल।सबने लिये बनायमुकुट
मणि महाराज परमाल।पद मंडलीक आल्हा को सबन
दयौ है। परिमाल सिंधु में खांडो धोइ लयौ है॥
महाराज बनाफल मगन होरहे खूब।उदैराजमलखान
रहे आनंद सिंधु में डूब॥ सब खुशी भये जो ठाड़ेथे
नरनारी। नर ऊदल की सब करें प्रशंसा भारी॥
महाराज नारि नर फूल रहे बरसाइ। मछुलाबती ता
समय पर फूली नहीं अङ्ग समाइ॥
दौड़—सहित मछुला अलबेली।खुशीसब सङ्ग सहेली
मिटगयौ झगड़ो सारो।
चंदेले से बचन ताघड़ी राघवमच्छ उचारो॥
राघवमच्छ का चँदेल से
दोहा—अतिपुनीत नीतज्ञ प्रभु, सब राजन शिरमौर।
बड़भागी तुमसमनृपति, कौन धरणपर और॥

चौ०—तुमसमकोई नभूप प्रशंसा। कहांतक करूंतुम्हारी
आल्हा और मलखान बीर ऊदल से आज्ञाकारी ॥
जिनके भुजबल के प्रताप सागर में तेग पखारी।
कीरति भाजन महाराजन् रख लीनी लाज हमारी॥
दौड़—मोर पुजयो परमारथ। सब तरह कियोकृतारथ
बिराजो साज समाजा।
ऊदल गल जयमाल परे आनंद निहारो राजा॥
परमाल का ऊदल से
दोहा—ऐ बेटा ऊदल मेरे, बख्तर जिरह उतार।
न्हाइ धोइ रतनन जटित, लोपोशाक निकार॥
चौ०—लोपोशाक निकार तजौयह यहबानों रजपूतीको
राजनको दिदला कुँवार श्रृङ्गार बनाओ नीको॥
बांधि सुर्ख मंडील शीशतन जामा पहन जरी को।
बैठो मंच बिशाललाल अब होय तुम्हारो टीको॥
दौड़—कुमरिमछलाबति आला।सखी सँगले नववाला
यहां आवेगी लाला।
रूप बिशाला डारेगी तुम्हरे गलमें जयमाला॥
ऊदल का
दोहा—चाचा अनुचितउचितका,ज़राकीजिये ख्याल।
बड़े भ्रात बैठे रहैं, हम पहरें जयमाल॥
चौ०—हमपहेरें जयमालहमें यह करना नहींमुनासिब
जान बूझकर घोर पापमें परना नहीं मुनासिब॥
त्यागि सुपंथ कुपंथ माहिंपग धरना नहीं मुनासिब।
जयमाला पहरना नृप सुता बरनानहीं मुनासिब॥
दौड—चाहकरि राजकुमरि की।बाम मछलासुंदरिकी

Panda Ram Nath Dabariyal
Deopariyag Galipuri

सिंधु में कूदो आल्हा ।
इसी सबब चाचा आल्हा ही पहनैगा जयमाला ॥

राघवमच्छ का ऊदलसे

दोहा—सागर मारी मीन जिन, कुँवर उदैचंद लाल ।
पहने राजसमाज में, सो गल में जयमाल ॥
चौ०—सो गलमें जयमाल डाल सबमें बिशालपद पावै
लौटूं बचन धर्म छोडूं अपकीरति जगत उड़ावै ॥
आल्हा पहनैगे जयमाला प्रण मेरो डिग जावै ।
निज मन राजी करो फ़र्क मेरे तुम्हरे मन आवै ॥
दौड़—भ्रात तुम्हरे वे आल्हा । अगर पहनें जयमाला
तो भारी समर मचैगो ।
जानें फेर बिधाता यहांपर किसको ब्याह रचैगो ॥

ऊदल का

दो०—प्रण तुम्हरो पूरो हमन. कर दीनों भूपाल ।
लेकिन भूपति पड़ैगी, आल्हा गल जयमाल॥
चौ०—जयमाला भूपाल परेगी गल आल्हा भैयाके ॥
बड़ भ्रातकी मांग हमारी है समान भैया के ॥
कौन लड़ैया मुक़ाबिले भेजो दिवला छैया के ।
देखो जौहर तेग़ा के रस बेंदुल चढ़वैया के ॥
दौड़—गले माला आल्हा के । खुशी से दो डलवाके॥
नहीं शमशेरों के बल ।
माला गिरवाऊं आल्हा गलतो दिवला सुत ऊदल ॥

कवि का

दोहा—आपसमें झगड़ो निरखि; माहिल मतो उपाय।
करगहि राघवमच्छको; ले गयो अलग लिवाय॥

माहिल का राघवमच्छ से

दो०—क्या आल्हा क्या उदैचंद, क्या धांधू मलखान।
टुकरखोर मशहूर हैं, बामनगढ़ दरम्यान ॥
चौ०—बामनगढ़ दरम्यान चंदेले के गुलाम कहलामें।
रोप जंग इन सेती हरगिज़ फ़तह आप नहिं पामें॥
जिसके डलवामें डलवादो घरो कहा माला में।
कटवा लीजो मुगड सबनके जादिन व्याहन आमें॥
दौड़—कहैं ये जैसे २। अभै कर दीजे तैसे॥
किसी बिधि इनको टारो।
देखी जाय व्याहपै भूपति अब तौ रिस को मारो॥

कवि का

दोहा—सुनकर माहिलके बचन; राघवमच्छ नृपाल।
सुता बुलाई मछलदे; डारन हित जयमाल॥
चौ—डारनहितजयमाल नृप लली चली चालगजकीसी।
रविछबि सी के संग अली नवली हैं कमलकलीसी॥
मनमोहनी कुमर आल्हाकी छबिलखि भई छलीसी।
चित्रलिखी सी चुप्पचाप ठाड़ी रहगई ठगीसी॥
दौड—निरखि आल्हा वयवाला ।डारनो भूली माला॥
चिताई चतुर सखी ने। तबी शुभ चंद्र मुखी ने॥
माल आल्हा गल डारी।
राघवमच्छ सुघाइ व्याह ऊदल से गिरा उचारी॥

राघवमच्छ का ऊदल से

दोहा—आल्हा लाला के गले. कुमर उदैचन्द लाल।
अपनी राजी कर तुमन. गिरवाई जयमाल॥
चौ०—गिरवाई जयमाल आपनी राजी कीनी मनकी।

अब महुवेगढ़ जाय तयारी कीजै ब्याह करनकी ॥
शादी सूझे दौज माघ शुक्ला गुरु दिन पावनकी ।
गऊधूलकी भांवरहै शुभ शाअत मिथुन लगनकी ॥
दौड़—जाइये आप वतनको । चंद दिनबाद लगनको ॥
लिखा महुवे भेजूँगा ।
साथ लगन के हाल पत्र में ब्यौरे बार लिखूंगा ॥

कवि का

दोहा—सुनकर राजाके बचन, सहित भूप परमाल ।
अपने २ गढन को; चले सकल भूपाल ॥
चौ०—चलदीने ततकाला सब भूपाला गढ २आए ।
चन्देले परमाल महोबे मोतिन दान कराए ॥
रानी मल्हना रहसि गवाए मंगल अनंद बधाए ।
गोगज बाज दान दे दिच्छा विप्र अनेक जिमाए ॥
दौड़—महोबे उत्सव भारी । करैं प्रति दिन नरनारी ॥
माघ महीना जब आयौ ।
नैनागढ़ के ईश बुला पंडित यों बचन सुनायो ॥

राघबमच्छ का पंडितजी से

दोहा—श्रीमान धीमान शुचि, परम पूज्य गुणधाम ।
द्विज भूषण दूषण रहित, त्वंपद मोर प्रणाम ॥
चौ०—त्वंपद मोरप्रणाम तिमिर अज्ञान महानाबिनाशक
क्षमा शील सन्तोष सिंधु विज्ञान प्रभानु प्रकाशक ॥
एकानन चतुरानन पंचानन त्रैदेब उपासक ।
पुराणादि उपबेद बेद बेदांग शास्त्र षट भाषक ॥
दौड़—गुरूजी मङ्गल मूला । दास पर हो अनुकूला ॥

बिराजो सिंहासनपे ।
लग्न सुताकी लिखो अनुग्रह कीजे इन्दरमनपे ॥

कवि का

दोहा—सुनकर राजाके बचन, लगन लिखी द्विजराज।
पुनि लई क़लम दवातनृप, पत्र लिखनकेकाज।

राघवमच्छका महोबे को पत्र लिखना

दोहा—ओंतत्सत लिखकर प्रथम, पत्री लिखूँ बनाय ।
श्रीगणेशायनमः श्री रामजी सहाय ॥

ला०—सिद्धिश्री महुबे शुभस्थान सुचि सुन्दर । सर्बो उपमा गुणधाम मुकुटमणि नृपवर । महाराज चन्द्र बंशावतंस परमालायोग्य लिखी नैनागढ़ सेती राघव मच्छ नृपाल । जोगासिंह भोगासिंह अरु ब्रजनंदन कीश्रीराम रामहो अङ्गीकार सबनकी । महाराज आप के चरण कमल परताप । अत्रकुशल तत्रास्तु निवेदन अग्रे बांचो आप।।अपनी राजीकर माला गये पहरके। ब्याहन नैनागढ़ अब आमना सम्हरके।।महाराज होय यह प्रथम द्वारपर नेग । जोगा भोगा ब्रजनंदन से चले खटाखट तेग ॥ ये जंग जीतकर फिर तोरण को मारे । अस्सीगज ऊँचा कलशा टँगा उतारे ॥ महाराज खोलता तेल कराया जाय । जिसमें दूल्हा आप फेर दो गोता लेइ लगाय ॥ जो इकलो आ द्वारे के नेग करेगो । सो लड़का मेरी मझला सुता बरेगो ॥ महाराज पिछारी होय जंग भरपूर । हस्ती रखो मेरी बस्ती पर ब्याहन चढ़ो जरूर ॥ इतना नहीं होवे काम बैठ घर रहना । जैसा कुछ उत्तर

हो नाईसे कहना महाराजकरें कुछ हम भोबन्दोबस्त
पत्री के अनुकूल यहां पर होगी रीति समस्त ॥
आगे बिधि पूर्वक कुशल क्षेम पहचानों । थोड़े
लिखने को ज्यादे करके मानो ॥ महाराज इन्द्रमन
आना हो हुशियार । मिती माघ बदि दौज दिवस
बुध पत्री लिखी सम्हार ॥

कविका

दो०-ऐसे राघवमच्छ लिख, नाई को बुलवाय ।
लग्न पात्रिका पात्रिका, दोनों दई गहाय ॥
चौ०-दोनों दई गहाय चलो चढ़ि घोड़ा पर नाईको।
धूप गिनै ना छांह रात दिन करै सफर नाईको ॥
तीन दिवस में महुबे आयो मञ्जिल कर नाई को ।
चन्देले की गयो कचहरी के अंदर नाईको ॥
दो०-भूपको शीश नवाके। सबन आदाब बजाके॥
लग्न पात्रिका निकारी ।
देकरके चंदेल को फिर नाई गिरा उचारी ॥

नाई का परमाल से

दो०-चंदेले परमाल नृप,सब राजन सरताज ।
भेजी राघवमच्छने, ये पत्री महाराज ॥
चौ०-ये चिट्ठी महाराज खोलकर भूप चंदेले बांचो।
दमराखो रासो राचो मो राजाको बल जाँचो ॥
सजा बरात चढ़ो नैनागढ़ झेलो तेग तमाँचो ।
डरपो तो लिख देउ ज्वाब राजाजी सांचो २ ॥
दो०-भूप पत्री को पढ़कर। देउ लिखि जाको उत्तर॥

लौट मोइ जल्दी जानों।
यहां को हाल वहां जा कहनों इंतिजाम करवानों ॥

कवि का

दो०—तुरत खोल पत्री पढ़ी, नृप चंदेले हाल।
हो ब्याकुल कहने लगे, आल्हा से परमाल ॥

परमाल का आल्हा से

दो०—ये चिट्टी भेजी कुमर, राघबमच्छ नृपाल।
ब्याह संदेशे के बदल, लिखौ संदेशौ काल ॥
चौ०—लिखो संदेशो काल पत्रिका मैं नृपनैनागढ के
इकला दूल्हा आय द्वारपर करै नेग ये बढ के ॥
जोगा भोगा ब्रजनंदन से जंग जीत जाय लड़के।
तोरण मारै कलश उतारै अस्सी गज पर चढ़के ॥
दो०—तेल तातौ करवामैं। लगावै गोता तामैं ॥
होय जो बूतौ तेरौ।
तौ तुम इतनौ काम करो नातर चिट्ठी को फेरो ॥

आल्हा का परमाल से

दो०—दीजे चिठ्ठी फेरकर, भली करें ब्रजचन्द।
ऐसे बेईमानसे, करैंन हम सम्बन्ध ॥
चौ०—करैं न हम सम्बंधनित्त नौतम उतपात उठावै
इकले दूल्हा को बुलाय भट तीनन से लड़वावै ॥
मौन मराई प्रथम तेल तत्ते में अब कुदवावै।
ऐसे हत्यारे सारे के कौन ब्याहने जावै ॥
दो०—देर चाचा नहिं कीजे। फेर यह टीको दीजे ॥
उडेंगी पीछें चोटें।
बामनगढ़ में या टीके को देखें तो को ओटें ॥

कवि का

दोहा—चिट्ठी फेरन की सल्हा, की आल्हा परमाल ।
ताला सैयद ता समय, कहन लगे ततकाल ॥

ताला सैयद का आल्हा से

दोहा—श्रीमणि चंदेले भये, छायो जगत प्रताप ।
लेकर आये नृपन में. मंडलीक पद आप ॥

चौ०—मण्डलीक पद पाय समरसे ऐसे मुख मोड़ोगे।
जोड़ोगे ना जङ्ग तो क्या शिरपर सारी ओढ़ोगे ॥
अब जब ही तारीफ़ मिले चढ़ नयनागढ़ तोड़ोगे ।
सात साख की डोबोगे जो वरी मांग छोड़ोगे ॥

दौ०—बने बलकारी डोलो । वक्त पर धोती खोलो ॥
अगर टीका लौटाओ ।
बन्नाफल चन्देले दोऊ कुल को बट्टा लगवाओ ॥

आल्हा का ताला से

दोहा—अकल देउ खोटी हमें, क्या पीलीनी मांग ।
सरासरी ये दीखती, काल निशानी मांग ॥

चौ०—काल निशानी मांगगमावे जानसो जायबरनको
कौन अकेलो चढ़े द्वारपर ऐसे नेग्र करन को ॥
गरम तेल में कूदे क्षत्री ऐसो भयो घरन को ।
जान बूझकर काल गाल में जावे कौन मरन को ॥

दौड़—प्रथम ही काल निशानी।पैज मछलीकी ठानी॥
बचे जब जैसे तैसे ।
गरम तेल में कूद चचा अब कहो बचेंगे कैसे ॥

ऊदल का आल्हा से

दोहा—केहरि को मृग हननको, चाहे फिरे स्वभाव ।

पूरब दिश से गङ्ग को, पश्चिम होय बहाव ॥
चौ०—पश्चिम फिरै बहाव पाप हरणी श्रीगङ्गाजीको।
फिरै पर पुरुष निरखि करन आलिंगन हृदय सतीको
वैश्या फेर पाप से मन ब्रत धारै पतिब्रती को ।
सकल जमानों फिरै मगर यह नहीं फिरैगो टीको ॥

सवैया—शीतलत राकेश तजै चाहैं वारिद जल बरसामन छोडैं। सिर्जन पालन संहारन, बिधि एकानन, चतुरानन छोडैं । सिंधुतजैं मरियादा कोधरणी धरनों सहसानन छोडैं । समर सजैं न भजैं रणसे चाहैं प्राण तजैं परि मांगन छोड़ैं ॥

दौड—काल से खर्ग चलावैं । नहीं दिलमें दहलावैं ।
घोर संग्राम मचावैं ।
मंडलीक करदिये तिन भुजन भ्रात ब्याह कर लावैं ॥

मलखान का परमाल से

दोहा—आल्हा भैया के निमत; बेशक जाओ प्रान ।
महा काल से मोर मुख, हटै नहीं मलखान ॥
चौ—हटै नहीं मलखान पाणिजिसदम कृपाण पकरूंगो
जोगा भोगा ब्रजनन्दन तीनों के शिर कतरूंगो ॥
कोपर कर कटक काट लहाशन पर लाश धरूंगो ।
राघवमच्छ नृपाल सुता आल्हा के सङ्ग बरूंगो ॥
दौड—मेरे बल लगन चढ़ाओ । मती दिलमें घवराओ।
होय सो देखा जावे ।
भू दहलावे नभ दहलावे मलखे ना दहलावे ॥

कवि का

दोहा—उदैराज मलखे दोऊ, रहे कचहरी गाज ।

सभा मध्य आए तभी, उरई के महाराज ॥

माहिल का

दो०–क्यों दोनों बिगड़े खड़े, ऊदल और मलखान
जीजाजी हमसे सकल, कहो खुलासा व्यान।

परमाल का

दो०–चिट्ठी भेजी व्याहकी, राघवमच्छ नृपाल ।
बांचो तो नेक खोलके, कहा लिखो अहवाल

चौ०–कहालिखो अहवाल पढ़ोगे जब यकीन आवेगो।
सिवा आपके और कोई नहीं इनको समझावेगो ।
गरम तेल में कहो भला किसपे कूदो जावेगो ।
बिन द्वारे के नेक करें को मछुला बर लावेगो ॥

दौड–ज़िद्द भारी ठानेहै । नहीं मेरी मानें है ॥
बहुत समझाकर हारो ।
तुमहीं इनको समझाओ जो माने कह्यो तुम्हारो ॥

माहिल का

दो०–जबतक जीवत जगतमें, मयाराम परिहार ।
तबतक ऐसी बात का; करो न सोच बिचार।

चौ०–करो न सोच बिचार साज सेना करदेउ चढ़ाई
याद करो नैनागढ की माला पर रुपे लड़ाई ॥
तनक बात में रारि मिटाई जयमाला गिरवाई ।
तैसेहिं व्याह कराइ दऊं देखो मेरी चतुराई ॥

दौड–व्याह के साज सम्हारो । आप नैनागढवालो॥
हाल गिरवाद् फेरे ।
नेग न होने दऊं द्वार के रहो भरोसे मेरे ॥

परमाल का

दोहा—जोकुछ तुम्हरी राय है, सोई सय्यद की राय ।
सोई ऊदल मलखान के चितमें रही समाय ॥

छं०—जोकुछ सल्हा तुम सवनकी मंजूरहै मुझकोवही
नाहीं करूं मैं चलन की तो कय चलै मेरी कही ॥
मलखान आल्हा उदेचँद धांधू सुनों चितलाय के ।
जाओ कुमर रणवासको सैयदको साथ लिवाय के ॥
मांगो बिदा निज मात पै बेटा भुजा पुजवाइ के ।
चरणन में शीश नवाइ के आओ तिलक करवाइके।
फिर सैन सकल सजाइ के चालो गणेश मनाइ के।
रण जङ्ग रङ्ग मचाइ के आल्हा को लाओ ब्याहिके।

कवि का

दोहा—चन्देले परमाल के करके बचन प्रमान ।
आल्हा धांधू उदेचँद धवल बीर मलखान ॥

चौ०—धवल बीर मलखान संग सैयदको लेचलदीने।
पहुँचे महलन जाय चरन रानी मल्हना के लीने ॥
पाइ अशीष मात दिवला के पास गये रँगभीने।
उठी गायसी धाय माय आवत लखि पुत्र नवीने ॥

दोहे—मान आनँदमन भारी । लगाए उरसुतचारी॥
ढोरने लगी पवन है।
चरणन शीश नवाय मात से ऊदल कहै बचन है ॥

ऊदल का

दोह—चारो पुत्रनकी भुजा पूज देउ तुम मात ।
ठोक हमारी पींठको धरदे शिरपर हाथ ॥

झू०-धरदे सिर पर हाथ हम जात चारो बिजय होय मुख कहो हरषाय मैया। मती मांग छोड़ो नैना गढ़ चढ़ो अब बनरस पती की यहीहै राय मैया॥ जो उपदेश दीनों हमें चचा सैयद सोई गयो हम चित्त समाय मैया। कट २ लड़ें रणमें मारें चोटझटर लावें भ्रातको ब्याह करवाय मैया॥

दिवला का

दोहा-सुन २ कर तेरे बचन, भर २ आवें नैन।
बछरा छैया कन्हैया, कहा कहे तू बैन॥

झू०-तेरे बचन सुन भई बेचैन ब्याकुल हिलकीभरै छाती फटी जाय बेटा। बारे छोड़कर मरगयो पिता तुम्हरो पाले तुम्हें मैं महा दुख पाय बेटा॥ देखो नैननसे कभी रण नहीं तुमने रह्यो सोच भारी मो मन छाय बेटा॥ करे जाउ न्यारे नहीं नैन तारे बिना दरश कैसे जिये माय बेटा॥

ऊदल का

दो०-सगुन समय अशगुन करे, डारे नैनन नीर।
दे अशीष जय होय रण, माता धारो धीर॥

झू०-माता बांधो धीर मत भरे हिलकी छाती लगा कर आरती साज माता। बरी मांग को देइ जो छोड़ कर के डूबे बन्शको लाज जहाज माता। बावनकोट में दूध कर तोर जाहिर करे म्यान जब तेग उदैराज माता। ठोको पीठ धरदे सिरपर हाथ जल्दी कीजे तिलक पूजो भुजा आज माता॥

दिवला का

दो०—जाओ नैनागढ़ कुँवर, समर करनके काज।
दूध मेरो लज जायगो, जो आओगे भाज॥

छं०—भागो समरसे मोडमुख जो सुनलऊं बेटा मेरे।
तनमांहिं मार कटार तो तजि प्रान दऊं बेटा मेरे॥
सुत जाय नैनागढ़ समर कर कोख मेरी बहोरियो॥
मत नाम अपने बापको संग्राम के बिच बोरियो॥
जो बिजय तुम्हरी सुनूंगी दे दान मन हरषाउँगी।
बेटा पराजय सुनूंगी तो खा ज़हर मरजाउँगी॥
बट्टा लगायो मोहि तो हीरा की कनी चबाउंगी।
देखूं तुम्हारो मुख नहीं अपनों न तुम्हें दिखाउंगी॥

ऊदल का

दोहा—दे अशीष मन मगनहो, क्यों रही नीरबहाय।
मैया होकर सिंहकी, गैया तुल्य रम्हाय॥

छं०—गैयाके तुल्य रम्हायकर क्यों विकलहोछातीभरै।
मत धीर छोड अधीर हो भगवान सब अच्छी करै॥
संग्राम नैनागढ़ भयङ्कर करे ऊदल जाय कें।
तेरी उजागर कोख कर आल्हा को लामें ब्याहि कें॥
काटें कटक कोटिन बिकट भट पटक धरणी परधरें।
जसराजको बछराजको हम नाम जग ज़ाहिर करें॥
आशीषदे पूजो भुजा होकर मगन मन मात है।
चाचा तलन्सी को हुकम जननी न टारो जात है॥

कवि का

दो०—सुनकर पुत्रन के बचन, गदर कंठ गंभीर।

ताला से कहने लगी, दिवला दृग भर नीर ॥

दिवला का ताला से

दोहा—बिना बापके पुत्रहैं, हैं तुमको इख्तयार ।
चाहै तैसे राखियो, सौंपूं गोद तुम्हार ॥

छं०—सौंपूं तुम्हारी गोद इनके मियां मालिक आपहो।
वहबाप तो मरगयो बिन वारिसके तुमहीं बापहो ॥
मो रांड़की ये आस है इतनी अनुग्रह कीजियो ।
देखो नहीं रण आंख से हुशियार इनपर रीजियो॥
इनकी खता सब माफ़ कीजो तरफ़ मेरी जाइयो ।
बेटनकी पींठ दिखावते यों मुखभी मोइ दिखाइयो ॥
मलखान आल्हा उदैचंद धांधू पै हुक्म चलाइयो ।
एक ये कहन मोकूं निपूती मत मियां कहवाइयो ॥

ताला का

दोहा—ऐ भाभी क्यों रोवती, क्यों मन करती ख्याल।
अपने पुत्रन से अधिक, मुझको तेरे लाल ॥

छं०—ये लाल तेरे प्राणमेरे खा क़सम सांची कहूं ।
जबतक मेरा दम रहै इनपर आंचनहिं आमन दऊं।
मलखान धांधू उदैचँद आल्हा को नहिं बिसराऊंगा ।
इनको पसीना जहां गिरे तहां अपना खून बहाऊँगा॥
तिल २ पै झेलूं तीर जो २ पर सहूं तलवार है ।
तेरे सुतन को समरमें ना होय बांको बार है ॥
देखे नजर भर गर कोई भुट्टासा शीश उड़ाइदूं ।
जैसे लिए जाऊं इन्हें तैसे ही लाइ मिलाइदूं ॥

दिवला का भुजा पूजना बेटनको

दोहा—चारो बेटन को मैंने, सौंप दिवर की गोद ।
कीनों पूजन भुजनको: अतिमन मान प्रमोद ॥

छंद—अति मोद मन पूजीभुजा रोलीतिलककरनेलगी।
अच्छत लगा छाती लगा सुत हिलकियां भरनेलगी।
खांड़े दिये निज हाथ से ईश्वर बिजय तुम्हरी करै ।
अब होत खाली गोदसो भगवान फिर मेरी भरै ॥
नित देख चन्द्रासो बदन रहती मगन दिनरात है ।
कैसे सबर अब होयगो सूनों भवन भयो जात है ॥
जे कीजियो बेटनकी प्रभु करुणा करे करुणा भरी ।
तुम जाउ छोना समरको बज्जर की मैं छाती करी ॥

इति श्रीप्रथम मँजिल समाप्त

अथ द्वितीय मंजिल प्रारम्भ ॥

कवि का

दोहा—पूजन भुजबलनको करा, मात चरण शिरनाइ
चारो सुत ताला सहित, गये कचहरी आइ ॥

चौ०—गये कचहरी आय तुरत लीनों बुलाइनाई को।
चन्देले नृपराय दयो सादर जिमाइ नाई को ॥
दीनों द्रव्य अघाइ चकित चित रह्यो चाइ नाईको।
बेशुमार धनपाय नहीं फूलो समाइ नाई को ॥

दोह—चंदेले नृप शिताबफिर। लिखा खतकाजवाबफिर
दई नाई को पाती ।
बर जवान मलखान ज्वान यों बोला सभा सुहाती

मलखान का नाई से

दोहा—जा अपने जिजमानसे, कहियो ठाकुर बात ।
नैनागढ़पर बनाफल; चढ़ें सजाय बरात ॥
चौ०—चढ़ें सजाय बरात आपका नैनागढ़ तोड़ेंगे ।
जोगा भोगा ब्रजनन्दन के संग जंग जोड़ेंगे ॥
नेग क़रारे द्वारे के सब करें न मुख मोड़ेंगे ।
रवि शशि धरणी टरे बिन बरें मांगनहीं छोड़ेंगे॥
दौड़—कहांमें जैसे २ । जाय कर कहना तैसे ॥
समरको जांय सम्हरके ।
इंतिजाम संग्राम हेत अपना तमाम ले करके ॥

कवि का

दोहा—कहि इतनी नाई तुरत, बिदा कियो हरषाय ।
कर मंजिल गयो पहुँचकर; नैनागढ़ में जाय ॥

नाई का राजानन्द से

दोहा—श्रीराजा पालक प्रजा, अनदाता गुणधाम ।
इंतिजाम संग्राम हित; करिये भूप तमाम ॥
चौ०—इन्तिजाम करिये तमाम बारूद तोप गोलाको।
आवें आल्हा बरन तेज बल करन बनाफल साखो॥
लश्कर छोड़ो सजत हमन्ने चन्देले राजा को ।
आज कल्ल में जंग रुपे बन्धेज लेउ कर ताको ॥
दोड़—पे चिट्ठी उनन दई है । ज़बानी यही कहीहै ॥
फ़ौज अब सजवातेहैं ।
एकदो दिना में आल्हा का ब्याह करन आते हैं ॥

कवि का

दोहा—सुनकर नाई के बचन, पढ़ पत्री का हाल ।

इंतिजाम कीनों इते, राघवमच्छ नृपाल ॥
छं०–कीनों है बन्दोबस्त नैनागढ़ के भूपति ने इते ।
साजे कटक अपनों बिकट महुबे में बन्नाफल उते ॥
चरखिन धरी तोपें तरलताड़िता सी तड़ २ तर्जनी ।
गिरि ढाहनी गढ़दाहनी मानिन्द घनके गर्जनी ॥
सजगए इकदंता युगलदन्ता समर हंता बड़े ।
ऊँचे अत्यन्ता बल अनन्ताहास्तिनी कन्ता बडे ॥
कुम्मेत नुकरह सब्ज मुश्की अस्प आली शानके ।
तातार तुर्किस्तान के साजेहैं अरब ईरान के ॥
साजे शुतर सुन्दर सुघड़ मखमली काठी गेर के ।
बुग़दाद बीकानेर सागानेर जैसलमेर के ॥
जंगी करैया जंग के राचे समर के रंग में ।
पहरन लगे बख़्तर झिलम फूले समाय न अंग में ।
ला०–सजगये सजलि समर करैया बांके । हिंदुस्तां अफ़गानिस्तां तुर्किस्तां के ॥ महाराज सजे फ़ारिस इँगलिस्तां के । सजे बिलोचिस्तांन अरबअरु कुस्तुन्तुनियां के ॥आस्ट्रिया फ्रन्स अरु जर्मन अमरीकाके यूरोप एशिया ब्रह्मा अफ़रीकाके । महाराज सजगए महाराष्ट्र के ज्वान। कर्णाटकी द्रावडी और तेलँग बड़े बलवान।साजे रुहेलखंडी अरु बघेले खंडी।रूमी रूसी गुजराती बुँदेले खंड़ी॥महाराज कबुलियापंजाबी सबसाज । आल्हा ब्रह्मा सहित सजगए चंदेले महाराज॥ऊदल मलखे धांधू अरु जागन ताला ।सजगया संगमें माहिल उरही वाला ॥ महाराज कूंच का डंका दिया बजाय । मंजिल दर मंजिलकर पहुँचे

सब नैनागढ़ में आया। सबने अपने२तम्बू तनवाये। चढगई रसोई क्षत्रिन भोग लगाये । महाराज रात भर कियो सबन बिश्राम । सुबह होत बोले माहिल से चंदेले गुणधाम ॥

परमाल का

दो०-अति प्रवीन गुण आगरे, उरई के सरदार ।
नैनागढ़ को जाइये, अब मत करो अबार ॥

चौ०-अबमत करो अबार खबर कीजे बरातकी जाके
दरबाजे के नेग जोगका झगड़ा सकल मिटाके ॥
साम दाम अरु दण्ड भेद से राजा को समझा के ।
आल्हा अपने भानजकी लाओ भांवर गिरवाके ॥
दौड़-आप अति ज्ञानवान हैं। कौन तुम्हरे समानहैं॥
दूरहो फ़िक्र हमारी ।
ये कर काज लौट आओ तब भेजें ऐं पनबारी ॥

माहिल का

दोहा-ऐपनबारी भेजिये; जीजाजी परमाल ।
किसी बात का करो मत, दिलपर रञ्ज मलाल॥

चौ०-छोड़ो रञ्ज मलाल न होने दऊँ नेग द्वारे का ।
अक़्ल तमाचे से मुख फेरूं वा नैनागढ़ बारे का ॥
ब्याह करामें मयाराम आल्हा भानज प्यारे का ।
देखो हुनर चुस्त चालाकी फन अपने सारे का ॥
दौड़-धीर धारो निज मनको । बुला लीजे रूपनको॥
छोड़ अब सकल फ़िकरदो ।
लाज रखे जगदम्ब रवाना ऐंपनवारी करदो ॥

परमाल का

दोहा—ऐपनबारी हाथ ले, ऐ रूपन बलवान।
दुर्गम नैंना दुर्ग को; ततच्छण करो पयान ॥

चौ०—ततच्छणकरोपयानध्यान धरिमनमें जगदम्बाको
चाखो मजा समर साखो करि लेउ नेग तेग्रा को ॥

बड़ो खिलारी बारी बांको गदका फरी पटाको।
शूरबीरता को नैंनागढ़ अइयो गाढ़ि पताको ॥

दौड़—तेग्र करियो डट डटके। समर लड़ियो कटकटके
मती दिलमें दहलइयो।
श्रोमणि पद पद मंडलीक दोनों की शरम निभइयो ॥

रूपनबारी का

दोहा—तेग्रा घोड़ा दीजिये, बांधन के हथियार।
भिलमटोप बख्तर मिले, आल्हा का सरकार॥

चौ०—आल्हाका सरकार हमेशा पड़ा नमक खाताहूं।
ऐपनवारी लिये आपकी नैनागढ़ जाता हूं ॥
लेकर तेग्र नेग में अपना पलभर में आता हूं॥
नृपति मुकुटमणि का बारी हो किससे दहलाताहूं॥

दौड़—राम ये वक्त दिखायो। मेरे मन चाव सवायो ॥
नहीं मन माहिं डरूंगा।
महुबेयद का नाम जाय नैनागढ़ बीच करूंगा ॥

परमाल का

दोहा—आल्हा के लीजे सकल, बख्तर शस्त्र तुरङ्ग।
नैनागढ़ को जाइये, सुमिर शम्भु श्री गंग ॥

कवि का

दोहा—तनपर सज बख्तर जिरह, बांध ढाल तलवार।

ऐंपनवारी हाथ में, रुपना हुआ सवार ॥

चौ०-रुपना हुआ सवार छोड़ घोड़ा दीना चटपट है।
कुदकाता नचकाता क़दम चलाता उलट पलट है ॥
कभी रेविया अरु दुरकी सागाम कभी फरवट है ।
फांद कोटका परकोटा नैनागढ़ धसा झपट है ॥
दौड़-जाय बंगला राजाके । अस्पको रहा नचाके ॥
तुरत आदाब बजाके ।
ऐंपनवारी वारी ने राजा पर दई चला के ॥

रुपना का

दोहा-ऐंपनवारी लीजिये, करो ब्याह के काज ।
आए लाल बरात लै, चंदेले महाराज ॥
चौ०-चंदेले महाराज मुकुटमणि भूपनमें पद पायो ।
मंडलीक के ब्याह करनको तिनको लश्कर आयो ॥
भेजो शरबत रशद उन्हें भूपति क्यों बिलम लगायो।
मेरो नेग मोइ दीजे कीजे कारज मन चायो ॥
दौड़-आपभी क्षत्री भारी । मुकुटमणि का मैं वारी॥
बचन मेरे चित धरिये ।
नेग हमारे देने की अब फ़िकर भूमिपति करिये ॥

राजा नन्द का

दो०-ऐंपनबारी का यहां; क्या ले आया गीत ।
होती है पहले मेरे; दरवाज़े की रीत ॥
चौ०-दरवाज़े की रीति प्रथम ही होती मेरे सदांसे ।
बनाफलों ने नया निकाला यह दस्तूर कहां से ॥
अव्वल ही नेगों का खत भेजा था मैंने यहां से ।
लेजा वापिस ऐंपनबारी लाया वहीं जहां से ॥

दौड़—यहांसे वापिस जाकर।इसतरह कह समझाकर॥
द्वार के नेग करावें।
अगर नहीं हिम्मत उनकी तो ले बरात घर जावें॥

रुपना का

दो०—अव्वल बन्नाफलनके, होइ यही दस्तूर।
ऐपनबारी आपको, लेनी पड़े जरूर॥
चौ०—लेनी पड़े जरूर ख्याल करिये हमरे आनेका।
तुम जानों बे जानों मैं गरजी इनाम पाने का॥
क्या मतलब होवे हासिल बे सबब जिद्द ठाने का।
नेग करें बिन लिये नेग वापिस न कभी जाने का॥
दौड़—ये ऐंपनबारी लेकर। नेग महाराजा देकर॥
हमें तो बिदा करो तुम।
नेग कराओ कटो कटाओ मारो चहै मरो तुम॥

राघवमच्छ का

दोहा—अव्वल ही तुझसे कहा, जातू लौट शिताब।
तिसपर भी सन्मुख मेरे, देने लगा जवाब॥
चौ०—देने लगा जवाब पेश बे अदबी से आताहै।
क्यों कमीन कुलहीन ज़रा भी खौफ़ नहीं खाताहै॥
तू गुलामका गुलाम होकर हमको समझाता है।
बंगले से बदज़ात नीच क्यों नहीं लौट जाता है॥
दौड़—न थामेगा ज़बान को। गमावे मुफ्त जानको॥
नेग की फेर कहैगा।
नेग मिलेगा तेग़ा का धरपर सर नहीं रहैगा॥

रुपनाबारी का

दोहा—देकर मैंतो जाऊंगा; ऐंपनबारी राव।

क्योंजां बेजा बोलकर, करो ज़बान ख़राब ॥
चौ०–करो ज़बान ख़राब किस लिये शूरोंको बुलवादो
दो क्षत्रिनको हुकम दो घड़ी भूप तेग़ चलवादो ॥
यही नेग ऐंपनवारी का सोई मुझे दिलादो ।
होजावे कुलरीति मेरे आने की सो रखवादो ॥
दो०–ये ऐंपनबारी लेकर । नेग महाराजा देकर ॥
हमेंतो बिदा करो तुम ।
नेग कराओ कटो कटाओ मारो और मरो तुम ॥
राघवमच्छ का
दो०–उठो शूर एकबारगी, करके कोप कराल ।
बारी को चौतर्फ़ेसे, घेर लेउ ततकाल ॥
चौ०–घेरलेउ ततकाल नेग इसको परखाओ नीका ।
गाल चलाना सतराना सब भूल जाय बारी का ॥
माला छीन करो काला मुख लाल लगादो टीका ।
अगर जरा उछले फड़के सर काट लेउ पाजी का ॥
दो०–नहीं माना समझाया । कचहरी दुंद मचाया ॥
धरणिपर धमकि पछारो ।
तेग़ा घोड़ा ढाल छीन शिर परसे पाग उतारो ॥
कवि का
दो०–सुनकरभूपतिके बचन, तनक न कीनी देर ।
रुपना को क्षत्रिन लियो, चौतरफ़ासे घेर ॥
चौ०–चौतरफ़ा से घेर फेर लागे भट चोट चलावन ।
बरछी परिघ त्रिशूल तेग़ भाले लागे चमकावन ॥
कोई मारत भुजदंडन पै कोई मारत आनन ।
अस्त्र शस्त्र बरषा समान लागे क्षत्री बरषावन ॥

छा०-ये गति जिसदम बंगला के बीच भईहै। तब सुत सिरोहीरुपना हाथ लई है।महाराज ढालकोबांए करसे रोप। त्यागि आसरो जिंदगानी को बारीकीनों कोप। भृकुटी चढाय रिस खाय चलो बंगलामें।मारेहै इतमें उतमेंजामें बामें॥ महाराज कटक लाईसी करतो जाय। एक २ खञ्जर में शिर दस २ के देइ उड़ाय॥ खेलतो कबड्डीसी बंगला में डोलै॥ एक २ भालेसे छेर सीने खोले। महाराज बाज फेंके नीचे से लात। जाके लगजाय लात कलामुंडीसी खातो जात। नैना गढ़ बारी ऐसे जौहर कीने,हन हन कर भट मेरुसेढेर करदीने॥ महाराज ये गति लखि राघवमच्छ नृपाल जोगा भोगा ब्रजनन्दन हङ्कारे तीनोंताल। राजाके सुत जब रूरे तेग्रउठाके।घोड़में कोड़ा रुपनादिया लगाके॥ महाराज बाज उड़ आसमान गयो छाय। कोई घड़ीमें रुपना बारी दलमें पहुंचो आय॥

दो०-उतर घोड़ा से आयो। सबै आदाब बजायो।
देखकर लाल गुलाला।
रुपना से तब कहै शिरोमणि महुबेके परमाला॥

परमाल का रुपना से

दो०-शिख नखसे रुपनाधवल,होरहा लाल गुलाल
नेनागढ़ के बीचमें, क्या गुजरा अहवाल॥

चौ०क्या गुजराअहवालहाल सबकरो उचारणताको।
तेज प्रताप प्रभाव शील कैसो वैभव राजा को॥
कैसे शूर कराल नेग कैसो पायो तेग्रा को।

बँगलामें तलवार चला कैसो कर आयो साको ॥
दो–गया बँगलामें जिसदम। हुई क्या बातें तिसदम
तेग्र किन कीनी बढ़की।
नैनागढ के बीच बात कैसी रही महुबेगढ़की ॥
रूपनावारी का
दो०–श्रीजगदम्बाकी कृपा, तुम्हरे पुन्य प्रताप ।
बन केहरि गज भटनमें,तेग्ररूप दई थाप ॥
चौ०–तेग्ररूप दई थाप दाप धारिनसे मोहरा जोडे।
खंडे बीर प्रचंड झुंडके झुंड कमल से तोड़े॥
दे भाले की भाल भाल उर गाल धड़ाधड़फोड़े
मारे कछुक मर्दिडारे कुछ कुछ घायल करछोड़े॥
दो०–नाम करि तुम्हरो आयो।हाथ ना तनपे खायो।
चलाई ऐपनघारी।
बिना द्वारके नेग न होगा। भूपति ब्याह सुखारी ॥
कवि का
सो०–सुनत बचन परमाल,तनमनमें ब्याकुलहुए।
छायो सोच कराल, माहिलसे कहने लगे ॥
परमाल का माहिल से
दो०–क्या करनो चहिये यतन,पड़ो मूंढसे काम ।
मयाराम अटकी कठिन;नैनागढ के धाम ॥
छं०–आकर कठिनअटकीयहां अब क्या करूंतदबीरहे
अग्गन लगी सब अङ्ग मम एक संग छूटो धीरहे ॥
अबनेग द्वारे के करै ऐसो को भट बल धाम है ॥
बट्टो लगत दीखे मुझे महुबे को डूबत नाम है ॥

एक दिन यहां सब नृपनमें पद मुकुटमणिलेकरगयो
बिनबरें जाऊं मांगतो सब जगतमें अपयश भयो ॥
मेरी समझ पर परे पत्थर मान सिख तुम्हरीलई ।
कीरति के बदले हा दई अपकीरती जगमें भई ॥

माहिल का

दो०-क्यों रोओ छाती धुनों,त्यागो सोच तमाम ॥
नेग बंद सबरे करूं, मयारामतो नाम ॥
चौ०-मयारामतो नाम काम सब पलमें करवाताहूं ।
नेग जोग द्वारे के अब सब बन्द करे आता हूं।
सारे बैठ चुप्प बंगला में नैनागढ जाता हूं ।
आल्हा भानज के फेरे मझला से गिरवाता हूँ ॥
दो०-कहूं मैं जैसे जैसे । जाउँ तुम करते तैसे ॥
जो मेरी कहन बिसारो।
कान खोलकर कहे दऊं हूं आल्हा रहजाय क्वारो ॥

परमाल का

दो०-जैसे २ कहो तुम; उरईके सरदार ।
तैसे २ करें हम, मयाराम परिहार ॥

कवि का

दो०-बचन नृपति के सुन चुगल,फूलो नहींसमाय।
पाग बैंजनी बांध शिर, नैनागढ़ को जाय ॥
चौ-नैनागढ़को जाय मगन लिल्ली घोड़ी कुदकावत
हाथ फिरावत मूंछन पै मनही मन में मुसकावत।
कलह भरे विग्रहकारी नोतम मजमून बनावत ।
बिन उत्पात उठाये कब उत्पातीको नहिंआवत ।
दो०-चलाचल गयो कचहरी। रमरमी कीनी गहरी॥

निरखि भूपति उठि धायो ।
सादर राघवमच्छ पास माहिल नृपको बैठायो ॥

राघवमच्छ का

दो०—महरबान मन आपका, हूं मैं शुक्र गुज़ार ।
करम फ़ज़ल मुझपर किया,दिखा दरश दीदार

श्र०—पाकर के दीद दिल हुआ खुरसन्द हमारा । बंदा है दिलोजानसे पावन्द तुम्हारा॥जोकुछ करो इरशाद । हीदूं बजाइ करा।खैराफ़ियत मिज़ाजकी दीजे बताइ कर॥जो कुछ कियाहै मैंने शादी का इन्तिजाम। हैगा पसन्द यानहीं माहिल तमाम काम । तोरण बँधा ये कलशटँगा। देखो भर नज़र ॥ लवरेज़ गर्म तेलसे रक्खा कढ़ाव भर॥अब हाल बनाफलनका हमको सुनाइये । कवि इन्द्र से महताब यार मत छिपाइये।

माहिल का

दो०—अति पुनीत ठानी तुमन, इन नेगनकी ठान।
इज्जत हुरमत सब तरह, राख लई भगवान॥

चौ०—राखलईभगवान आपकीसकल बात पुरखनकी बड़ी चूर होती जो कहूं भांवर परती गुलमनकी ॥ उनमें से ना कोई रखे है हिम्मत नेग करन की । गरम तेलके मारे उड़रही अक़ल टुकरखोरन की ॥
दोह- व्याह आशा बिसार के । जांय झकमार हारकें
नेग करने नहिं आवें ।
इसी बातपर बने रहोगे सब कारज बन जावें ॥

रावचमण्ड का

दो०—मालापै भी आपकी, कीनी सीख प्रमान।
अबभी छोडूंगा नहीं, जो मैं ठानी ठान॥
चौ०—जोमैं ठानी ठान टरैना त्रिकाल में टारे से।
अव्वल तो दुल्हा आकर जिंदा न जाय द्वारे से।
गरम तेल में कूदत ही मरजाय बिना मारे से।
बदला लऊं बेईमानी का सुत दिवला वारे से॥
दौड़—नेग द्वारे गर करदें। तभी पुनिरोप समर दें।
मरूं चाहें मारूंगा।
प्रण पालूंगा आल्हा सँग भांवर न कभी डारूंगा॥

माहिल का

दो०—सम दम दंड बिभेद से, ले निज काम सुधार।
यही धर्म क्षत्रीनके राज नीति अनुसार॥
चौ०—राजनीति अनुसार आपने ये सब बातकहीहै।
अब सब तरह तसल्ली मेरे मन को भूप भई है।
मछुला बरूं न आल्हा को जब यहकर पैज लई है।
सबी तरह होगया इशर अब ना कुछ कसर रहीहै॥
दौ०—धन्य तुम मात पितन को। धन्य तुमसे राजनको
ज्ञान तुम सोचौ नीको।
बरते सुता गुलामन को लगतो कलङ्क कौ टीको॥

कबिरा

दो०—कलह कलेशकी नीव को अच्छी तरह जमाय।
चन्देल के पास फिर, माहिल पहुँचे आय॥

परमाल का

दो०—क्या कर आए आप अब नैनागढ़ में जाय।

नेगनकी कैसे रही; दीजै हमें बताय ॥

माहिल का

दो०—क्या बतलावैं आपको, नैनागढ़ का हाल ।
अटकी आन कुढब्ब अति, जीजाजी परमाल

चौ०—जीजाजी परमाल कठिन प्रण रायवमच्छकरोहै।
तोरण बँध रह्यौ कलश टंगो भट्टा पर तेल धरो है
हारि गयो समझाय नहीं माने ऐसो बिचरो है ।
नेगनको चढ़रह्यो भूत सो नहिं हमपे उतरो है ॥

दौड़—द्वारके नेग करेगो । कठिन रण तेग्र करेगो॥
तेल में कूद परेगो ।
जो लड़का ये काम करे सो मछलावती बरेगो ॥

परमाल का

दो०—अब बतलाओ यहांपर, करें कौन सो काज ।
नैनागढ़ जलनिधि मेरो, डूबो लाज जहाज ॥

बेलमा—डूबो जहाज लालको मंजधार में आकर ।
खेवट न दीखे कोई पार देइ लगाकर । अब कौनकरे
नेग जोग द्वारके जाकर । सब भांति कीनी अपति
मेरी तुमने ह्यां लाकर।एक दिना गयो मैं यहां पद
श्रीमणि पाकर । सो आज राम मेरो यहीं लेय छिना
कर । सौ बार नाहीं करी मेरी एक न मानी । अब
चले यहां से लेके अपकीर्ति निशानी ॥

चौ०—हाय राम ये कैसी कीनी । दारुण विपति कौन
बिधि दीनी ॥ बामनगढ़ हो कुजस हमारो ।
आल्हा बेटा रहजाय क्वारो ॥

दु०—तृण से परवत कर दयो मोइ परवत से तृण अब राखो ना। जस को फल कछु दिन चाखो ना। अपजस भयो हारो साखो ना॥

माहिल का

दो०—इज्जत हुरमत लाज सब, परो भार में आज।
असल खैर घरको चलो जीजाजी महाराज।

चौ०—जीजाजी महाराज चूल्हमें जाउब्याहअरुगौना
घरसे बढ़ती ना आल्हा रंड़िया दुखियाको छौना॥
मारो जाय भैन दिवलाको होय निशि दिना रोना।
नाक छुए जासे जीजाजी पजर जाउ वह सोना॥

दो०—खाक दुलहनिपै डारो। महोबे भूप पधारो॥
मैं खुद गढ़ २में जाकर। ब्याह सो दऊं कराकर॥
होय क्या सोच करे से।
ले दमाद की जान कहा अटकी ऐसे सुसरे से॥

कवि का

दो०—ऐसे नृप परमाल को समझावत परिहार।
तात्तण सैयद तलन्सी बोले वचन सम्हार॥

ताल्हा का

दो०—बणिक बाम वैरी विकल व्यसनी बधिकलवार
चतुर चोर चाकर चुगल ना इनको इतवार॥

चौ०—नाइनको इतवार बदों की सदा रहे बदनीयत।
याद करो ऊदल ने इनकी छीनी सकल बसीयत॥
श्रीमाणि पदवी धूर होय माहिल की लेउ नसीहत।
बाम्हनगढ़ में जाय करेगो खूब बनाय फजीहत।
दोड—मांग मत भूपति छोड़ो।शीश तुडवाओ तोड़ो

अगर महुवे जाओगे ।
श्रीमणि पद पर मंडलीक को बट्टा लगवाओगे ॥

परमाल का

दो०—छोड़ो ना निज मांगको; कही आपने ठीक।
बतलाओ को करैगो, दरवाजे की लीक ॥
चौ०—दरवाजे की लीक भए बिन नृपनबिवाहकरैगो
कहो शेखजी नेग करे बिन कैसे काम सरैगो ॥
अस्सीगज ऊंचो कलशा ना आल्हापै उतरैगो ।
गरम तेल में कूदेगो कैसे जीवत निकरैगो ॥
दौड़—सीख माहिलकी लीजै।लौट महुवे चल दीजे ॥
मेरी तो मरजी ऐसे ।
आगे राजी होय आपकी करूँ मियांजी तैसे ॥

तालासैयद का

दोहा—आल्हा से ना होय ये, असर नेग सरकार ।
जोड़ कचहरी सभा में, तो बीड़ा दो डार ॥
चौ०—बीड़ा दीजे डाल सभा में सबका बलकुतजावे।
आगे पीछे कोई शूरमा कहन न कहने पावे ॥
हुक्म सुनादो सब क्षत्रिन को जोपे पान चबावे ।
जो राजा के नेग करे सो मछुलाबति को ब्यावे ॥
दौड़—नेग द्वारे के करके। जो मछुलाले कोईबरके ॥
जगह बोलन की पावें ।
क्या मुख लेकें बोलें जो बिन किये कछु भगजावें ॥

कवि का

दो०—तालाकी सिख मानकर, सभा जोर परमाल ।
कञ्चन कलश मँगायकर, बीड़ा दीना डाल ॥

परमाल का शूरों से

दोहा–आल्हा ऊदल जगन्सां: धांधू और मलखान।
जोर सुभट बरातमें, सुनों सकल दे कान ॥
चौ–सुनों सकल दे कान ज़ोर जिसके भुजानमेंभारी।
हिम्मत धारी बलकारी कोई इज्जत रखे हमारी ॥
बढ़आओ बीड़ा खाओ जो जनों सिंह महतारी ।
नेग द्वारके करौ वरौ सो राघवमच्छ दुलारी ॥
दौड़–है भट कोई च्त्री छैया । द्वारके नेग करैया ॥
तेल ताते कुदवैया ।
लाज रखैया मह्वे की नैया को पार लगैया ॥

कवि का

दो०–सुनकर राजा के बचन, कांपे सुभट तमाम ।
बीड़ा कोई न खातहै, बीत गये दो याम ॥
चौ०–बीतगये दोयाम नज़र बीड़ेपर कोई न लावे ।
कोई कुरेदे धरण शूर कोई लघुशङ्का को जावै ॥
दस्त छूटगये किसी किसी को चढ़त तापसी आवे ।
काईको हुलकार लगी कोई उरमें दर्द बतावे ॥
दौड़–भई गातियह शूरन की। उड़गई क्रांन्तिसबनकी
सुमिर जगदम्ब भवानी।
उछल एकदम पान खाय कर धांधू बोला बानी ॥

धांधू का परमाल से

दोहा–समझ सत्य लीजे मेरी, चाचाजी मनमांहि ।
गढ़ महुबेकी बातको, बिगरन दूंगा नांहि ॥
रागिनी–सकल नेगमें करूं धीर चाचा मनमें धारो।
नैनागढ़ इकलौ धसूं करूं जाय सब नेग । जोगा

भोगा व्रजनन्दन से करूं भयङ्कर तेग ॥ द्वार करिं दऊं घोंटुन गारे॥सकल।तसनस करि अरिको कटक तोरन मारूंघाय।अस्सी गज ऊंचो टंगो कलशादऊँ गिराय । उड़ाकर घोड़ा मतवारो ॥ सकल॥ कूदूंतत्ते तेल में तुम्हरे पुन्य प्रताप । चाचाजी रख दीजिये हाथ शीश पर आप । दाप चढ़जाय भुजन भारो। सकल० । इन्दरमन उस्ताद परजो कृपाकरैं गोबिंद । मछला सुकुमारी वरूं तो जस्सराज को बिंद। नाग बिषियर धांघू कारो ॥ सकल०॥

परमाल का धांधू से

दो०—जोगा भोगा आदिसे, बेशक रोपे जङ्ग ।
तोरण मारे कलशको, गेरे उड़ा तुरङ्ग ॥

झू०—उड़ा बाज गेरे कलश। जमीं ऊपर तेरी कहन को मोइ बिश्वास बेटा । तत्ते तेल में कही तैं कूदने की मेरे गये उड़ होश हवास बेटा । कैसें बचे गिरि कालके गालमें से जल भुन खाकहो हाड़ मांस बेटा । खाये पान तापर तैंने गज़बकीनों कीए इन्द्र मनदास निरास बेटा ॥

धांधू का परमाल से

दो०—जैसे शीतल नीरमें, न्हांइ सकल इन्सान ।
तेल मांहिं ... करूं, बिमल २ स्नान ॥

चौ०—बिमल २ स्नान करूं चाचाजी तजो फ़िकरहो। नहीं खबर है तुम्हें मुझे श्री जगदम्बा का बर है ॥

गर्म तेल का मुझे न डर है बदन मेरा पत्थर है ।
दरवाज़े पर दिखलाऊं देखो कैसे ज़ोहर है ॥
दो०—नेग कर सकल द्वारके । सबनके मान मारके॥
कोई दममें आता हूँ ।
चाचाजी आदाब लीजिये नेग करन जाता हूं ॥
परमाल का
दो०—सब बिधि राखी बाततैं, धांधू सुत सुज्ञान ।
जैसे पीठ दिखावतो, मुख दिखलइयो आन॥
कवि का
दो०—इते बीर धांधू करे, चलने को सामान ।
उत माहिल गए पहुँचकर, नैनागढ़ दरम्यान॥
माहिल का राघवमच्छ से
दो०—छत्रपती नृप नरपती. सुनहु आजका हाल ।
बीड़ा डाला सभा में, चंदेले परमाल ॥
चौ०—चंदेले परमाल पान लशकर के बीच गिरायो।
नेगनको सुनहाल सबनको ज्वर जाडो चढ़िआयो ।
आल्हा ऊदल ब्रह्मा मलखे सहित कटक दहलायो ॥
बांदी जाम हराम तुरक धांधू ने पान चबायो ॥
दो०—नेग करनेको आवे । न दिलमें दहशत खावे॥
आपको दई सुनाकर ।
देउ हुक्म तीनों पुत्रनको रोकें उसको जाकर ॥
कवि का
दो०—सुनकर माहिलके बचन, राघवमच्छ नृपाल ।
जङ्ग करनको द्वारपर, भेजे तीनों लाल ॥
चौ०भेजे तीनों लाल काल की शङ्का तिन्हेंन मनमें ।

इतसे धांधू चलो जिस तरह जाय केहरी बन में ॥
अस्प नचावत जाय घुमावत भाला दो उंगरिनमें ।
आइ मोरचा जुड़ो द्वारपर दोऊ तरफ़ छत्रिन में ॥
दौड़—चला धांधूजब बढ़कें।जोगालिया अस्पपकड़के॥
भोगा दई तेग़ा झपटके ।
उतसे ब्रजनन्दन छत्री ने मारो खर्ग सपट के ॥
धांधू का
दोहा—मैं इकला तुम दल सहित; मारो डट २ तेग़ ।
हरगिज़ लौटूँगा नहीं, बिना करे सब नेग ॥
चौ०—करूं द्वारसबनेग जोर अब देखो मेरी भुजनको
नालत तुम्हरी जननीको अरमान न खोलो मनको॥
शीश उड़ाऊँ धरन सुलाऊं मजा चखाऊं रनको ।
तोरण मारूं कलश उतारूँ झारूं मान सबनको ॥
दौड—तेलमें गोता मारूं। मछला संग भांवर डारूं॥
पांय तुमपर पुजबाऊं ।
जो ये काम न करूं तो बेटा जस्सराज को नाऊं ॥
जोगा का
दो०—चबर २ क्यों कररहा. रख ज़बान को थाम ।
उछले कूदे बहुत क्यों; बांदी जाम गुलाम ॥
चौ०—बांदी जाम गुलाम काम तेरा तमाम करताहूं ।
चन्द मिनट के बीच काटकर जमीं शीश धरता हूं ।
ज़रा तअम्मुल खा सारे कैसी मछला बरता हूं ।
या तेग़ा की धार प्राण पाजी तेरे हरता हूं ॥
दौड़—खर्ग मारूं खडाक दे। शीश झारूं भड़ाकदे॥

तो कहियो जोगा मोकूं ।
गुलाम के गुलाम कायर जो जीवत छोड़ूं तोकूं ॥

धांधू का

दो०—चन्देले महाराज के, बेशक पिता गुलाम ।
जोगराज तिनकी असल. हम बांदी के जाम ॥
चौ—हम बांदी के जाम थामतू करमें तनक दुधारो ।
देखूं कैसो धवल प्रवल है तेग चलामन हारो ॥
नेग करूं तब भैन बरूं नहिं टरूं समर से टारो ।
तेरे बाप को नगद बनूं बहनोई बनूं तुम्हारो ॥
दौड़—इरादा खोलो मनको । बार कीजे तेगनको ॥
सकल तनपै झेलूंगा ।
समर फाग खेलूंगा मछलासंग भांवर ले लूंगा ॥

कवि का

दोहा—जिसदम धाधूं के बचन; सुने भरे अभिमान ।
जोगराज तादम उछल, मारी तान कृपान ॥
चौ०—मारी तान कृपान ज्वान धाधूं दी ढाल अड़ाकर
दूजे शेल पेल जोगा तीजे दी सांग घुमाकर ॥
तीनों बार निकार धवल धांधू फिर गुस्सा खाकर ।
अस्प बढ़ाकर भौंह चढ़ाकर मारो तेगा जाकर ॥
दौड—शीश जब धरो दुधारो । खूनको छुटो फुहारो॥
हवा जब घाव समाई ।
जोगा गिरा मूर्छित हो भोगा को गुस्सा आई ॥

भोगा का

दोहा—गिरत भूमि जोगा लखो. क्रोध गयो तनछायव
बिज्जु छटा सम तेगले, पडो तुरत अरोय ॥

चौ०—घनसमान घहराय तड़ितसम तडतडायकरचालो ।
झकझकाय झहराय क्रोधमें छकछकाय कर चालो ॥
फणपति सम लहराय तेग्रसो लफलफाय कर चालो ।
कटकटाय रिसखाय मेघसम कडकडाय कर चालो ॥
सवैया—बांदी के जाम गुलाम तिलाम करूं कतलाम न देर लगाऊं । भालेकी भाल से छेद कपालकोतेग्र से बाहु बिशाल उड़ाऊं । मारके त्वार करूं मिसमार गमार तुझै यमद्वार पठाऊं । गाल छरूं मैं हलाल करूं तब राघवमच्छ को लाल कहाऊं ॥
दौड़—भूमि जोगा गिरायकर । रह्यो मनमें सिहायकर ॥
सम्हर घोड़े पर साले ।
पाले पड़ो आज भोगा के करदऊं काल हवाले ॥

धांधु का

दोहा—उछल कूद मरदूद क्यों, बित बाहर बतरात ।
शूर बीर जननी जनों, करले दो २ हाथ ॥
चौ०—करले दो २ हाथ बहुत क्यों बढ़२शेखी मारत ।
धसक धरा कलमलातकमठ करचन्द्रहास को धारत ॥
टारत फण फणपती चीखदे दिक गयन्द चिक्कारत ।
भारत में पारथ को मैं पुरषारथ कीनों ग़ारत ॥
सवैया—मोर अगार उघार रह्यो तलवार गंवार बडो गरबायो । राघवमच्छ नृपालके लालतो भालपै काल बली चढ़िआयो । जंगकरूं बल भङ्गकरूं मनशङ्क करूं न हटूं न हटायो । बांदी को जाम गुलाम तेरो कत लाम करे जसराज को जायो ॥
दौड़—कहा दलकत घोडापै । धमकि दऊं पटकि धरापै ॥

देख मेरे भुजबल को ।
दलको मल तव बलको मल तोड़ूं तेरी कलकल को ॥
मोगा का
दोहा—कल न लेइ कल २ करै, काल रह्यो सिर खेल ।
कलमलाइ धरणी गिरै; ऐसो मारूं सेल ॥
चौ०—ऐसो मारूँ सेल पेल जा जेल झमेल करैगो ।
कहूं रुण्ड भुज दण्ड कहूँ खण्डन हो मुण्ड परैगो ॥
एक साथ हो रात दिवस की जब मोगा बिचरैगो ।
गाल फोर अरु भाल तोर पलमाहिं मरोर धरैगो ॥
शेर—कोप करके कराला में हाथ लीना दुधारा है
झपट के सपट के चटपट शीश दुश्मन के झारा है ॥
काट कर ढाल गेंडा की खटाका जा हुआ सर में
खण्ड भये तीन खांडे के मूंठ खाली रही कर में ॥
दौड—पुण्य कोई तेरा सहाई । हुआ इसदममें आई ॥
चोटसे बचगयो धांधू ।
शोर करे फिर टुकड़ेखोर तो धरसे शीश उड़ादूं ॥
धांधू का
दोहा—गढदई खोटे लोहकी, कोई गँवार लुहार ।
तासे मोगासिंह तेरी, टूटी ये तलवार ॥
चौ०—टूटी ये तलवार बार खाली तेरे गए परके ।
के जननी ने नाम जनानों तोकूँ जनों सुसर के ॥
बार सम्हार धवल धांधू को हो हुशियार सम्हर के ।
खञ्जर से घरपर से सर भुट्टा सो लऊं कतर के ॥
शेर—लगाया तानकर कोड़ा दिया घोडा उडाकर के ।
तुरत मोगा के सर ऊपर बाजसा गिरा आकरके ॥

भाल पर ढालकी ओझड तमकि मारी जमा करके ।
मैं राघवमच्छ का नन्दन लिया नीचे गिरा करके ॥
दो०–बांध भोगा भट भारे । फेर रणमें ललकारो ॥
कहांपर है ब्रजनंदन ।
आवे मेरे अगार छुड़ावे भोगासिंह का बंधन ॥
ब्रजनंदनका
दो०–ओ कुलहीन गुलाम क्यों, गरजन करे कराल।
अब आवत ऊपरतेर, बन वृजनन्दन काल ।
चौ–बन वृजनंदन कालव्याल बिकरालपौनियांकारो
फणरूपी तलवार मार धरसे शिर करदूँ न्यारो ॥
घोर शोर कर टुकरखोर क्यों शोर कर रह्यो भारो ।
धूर करूँ मग्ररूर क्रूरतो राघवमच्छ दुलारो ॥
दो०–न मैं जोगा भोगासो। देखियो मेरो तमासो॥
रोप मेरे सङ्ग रासो ।
ब्रजनंदन को रण धांधू मत समझे दूध बतासो ॥
धांधू का
दो०–तू ब्रजनंदन पौनियां, मैं खगेशको लाल ।
फण रूपी तेगा तेरो, चोंच रूप ममढाल ॥
चौ०–चोंचरूप ममढाल ढालके ऊपर जब मारूंगो।
चार चार तेरो कपार कर मार धरणि डारूंगो ॥
किर्च २ तन होय किर्च से कदम नहीं टारूंगो ।
खण्डू कटक प्रचण्ड झुण्डके झुण्ड मुण्ड फारूंगो ॥
दो०–दूरसे उछर २ के । बकै क्यों मेरे सुसर के ॥
आउ नेक मुकाबिलेपर ।
जोहर देख दिखा अपना नैनागढ़ के द्वारे पर ॥

ब्रजनदन का

दो०-सुन कठोरबाणी बिशिष, महा जोर कर घोर
चन्द्रहास लेकर चलो, भट धांधूकी ओर ॥
चौ०-भट धांधूकी ओर।सिंहसम चलो गरजनाकरके
तमकि ताकि रिसखाय शीशपर मारी तेग उछरके।
खांडा खाली पडा दुबारा लिया दुगाडा भर के ।
बादी जाम तुरङ्ग तङ्ग पर अब बैठियो सम्हर के ॥
दो०-तमञ्चा मारो जचकर।तऊ बैरी गयो बचकर ॥
फेर गुस्सा खा मारो ।
मारो गुर्ज घुमाय धवल धांधू घोड़ा से डारो ॥

कवि का

दो०-गिरत धवल धांधू सुभट,उठो बहोर सम्हार ।
फुरती से चढ़ अस्प पर;कहन लगोललकार ॥

धांधू का

दो०-चोट प्रबल ऐसीकरी, धरणि गिरायो मोइ ।
ध्वाई श्रीजसराजकी: अब नहिं छोडूं तोय ॥
चौ०-अबना छोडूं तोय करै शङ्करसहायजो आकर ।
सम्हर २ कायर तुरङ्ग पर ले मम चोट बचाकर ॥
तड़तड़ाय तड़िता समान वैरी पर टूटा जाकर ।
तान डिढची दई दुहत्ती लीनो धरण गिराकर ॥
शेर-लिया बैरीको कसकर केभगाया कटक साराहै।
दिया घोड़ा बढा आगे शराशन कर सम्हारा है ॥
तान कर वान मारा है तुरत तोरण को मारा है ।
पड़ देते उड़ा घोड़ा झपट कलशा उतारा है ॥
छं०-जहां तेल होवै गरम पुनि उतरा वडांमें आपको।

बस्तर उतारेहैं सकल लंगोट कसि हरषाय के ॥
श्रीसङ्कटा सङ्कट हरण दुख हरण मात महेश्वरी ।
बिश्वेश्वरी परमेश्वरी जगदीश्वरी भुवनेश्वरी ॥
बिन्ध्येश्वरी सर्वेश्वरी उद्धारिणी उद्धारियो ।
कूदूं हूं तत्ते तेल में जन जान मोइ उबारियो ॥
दोहा—श्री जगदम्बा मनहिंमन, बारम्बार मनाय ।
शीश हथेली पर धरो; कूद पड़ा हरषाय ॥
चौ०—कूद परो हरषाय तेलमें मार कुलांच उछलके ।
शिवा कृपासे तप्त तेल मानिंद सर्द भयो जलके ॥
इक दो तीन चार पांच लगाए गोता बिमल २ के ।
सकल नज़र भर देखो जौहर धांधू सुभट धवल के ॥
दौड़—तेल में मलर न्हाऊं । अजायब खेल दिखाऊं॥
न छोड़ी तनक कसरहै ।
नेग करे दरवाज़े पर सब बिधि कर दयो हशरहै ॥
कवि का
दोहा—ऐसे धांधू तेलमें, लोटे करे तिलिस्म ।
राघवमच्छ नृपालको, थर्रायो सब जिस्म ॥
चौ०—थर्रायो सब जिस्म भूपके मन संदेह भयो है ।
धांधू धवल तेलमें हँस २ खेल मचाय रह्यो है ॥
तादम राघवमच्छ सोच शूरन हङ्कार लयो है ।
ले तलवार अपार सिमिट भट हल्ला बोल दयोहै॥
कड़ा—प्यारेजी जगी मूर्छा इते द्वारपर जोगामलकी॥
खोली मुश्क तुरन्त बृजनँदन भोगामलकी ॥
दु०—जोगा भोगा ब्रजनन्दन हूं रूरे फिर गुस्सा

खा करके । सबने धांधू पर एक सँग दीनी तलवार
झुका करके ॥
दौड़–शस्त्र धांधू के तनपै । अनगिनत पड़ें बदनपै।
मारु ध्वनि पूरि रहीहै ।
तब अपार जसराज कुमरको गुस्सा आय गई है ॥
धांधू का
दोहा–अकस्मात एकसाथ मोय, शूरन लीनों घेर ।
उछलो तेल कराह से, तड़तड़ाय जिमिशेर ॥
चौ०–तड़फड़ाय जिमिशेर फेर लीकी शमशेरसम्हरके
धमकि धरा पर धरे धवल धरसे लए कतर के ॥
आगे पीछे इधर उधर से भगे शूरमा डर के ।
बगद आउ कहां जाउ नेग सब लेजाउ झगर २के ॥
दोहा–जोगा अरु भोगा सुभट; ब्रजनन्दन से बीर ।
जान बचा तज समरको, भागे सब रणधीर ॥
दौड़–सकल अरिको दल दरके। लाश पर लाशेंधरके।
चौर चौपट्टा करके । अस्प पर चढ़ा उछर के ॥
एड़ एक दई लगाकर ।
तम्बू आकर बाबा के पद पङ्कज परसे आकर ॥
कवि का
दोहा–पग परसत धांधू लखो, चंदेले नृप राय ।
भुजा पकरके धवलको; छाती लियो लगाय ॥
परमाल का धांधू से
दोहा–कुमर पुत्र नंदन सुवन, छोना बेटा तात ।
नैनागढ़ की सुनइये, सकल चेम कुशलात ॥

बांधू का

दो०—जोगा भोगा आदिसब, नृपके सुभट तमाम ।
दाहि मलिबल इन सबनको, विजय कियोसंग्राम

चौ०—विजयाकियो संग्राम मारतोरणपुनिबाजउड़ायो
अस्सीगज ऊंचो कलश खांड़े से धरण गिरायो ॥
गरम तेलमें खेल २ हँस बिमल २ कर न्हायो ।
कर साखो बीरता पताको चवा गाढ़कर आयो ॥

दो०—आपके पद प्रतापसे । चन्द्रहासकी थाप से ॥
सबनकी कलकल तोड़ी ।
नैनागढ़ सब नेग किये कोई बात न बाकी छोडी ॥

परमाल का ताला से

दो०—नैनागढ़ में जायकर, जोहर किया कमाल ।
करके आयो नेग सब, बिंदुमतीको लाल ॥

चौ०—बिंदुमतीकोलाल काम करआयो महा प्रबलहै ।
तोरण मारो कलश उतारो न्हायो तेल बिमल है ।
जोगा भोगा ब्रजनन्दन से छत्री किये शिथल है।।
अब क्या करना जतन मियां बतलाओ असलरहै।

दो०—रही कोई बात न बाकी। नैनागढ़पति राजाकी
कियो सुत कारज बढ़को ।
श्रीनारायण कृपा नाम सब बिधि रह्यो महुवेगढ़ को॥

ताला का

दो०—नेगहए पर कोनसी, बाकी रहगई बात ।
अब सजाय कर सबनको, दीजे चढ़ा बरात ॥

चौ०—दीजे चढ़ा बरात सजें शूरन को हुक्म सुनादो
सजें अस्प दिल चस्प शुतर फ़ीलोंपर झूल गिरादो।
जामा पगड़ी पहना शिर बांधू के मुहर बँधादो ।

बिंदुमती फ़रज़न्द चन्द्र को दूल्हा इन्द्र बनादो ॥
दो०–तुरत पिन्नस बैठारो। भूपको दाबो द्वारो ॥
तोपकी दयी सलामी।
नथाराम के काज आज सब कीने अन्तरयामी ॥
कवि का
दो०–सुनकर तालाके बचन; हुक्म दियौ परमाल।
धांधूको उबटन करो, रूपनबारी हाल ॥
चौ०–रुपनाबारीहाल धबलको उबट न्हवाय दयौहै।
बासुदेव ने आय पाग जामा पहनाय दयौं है॥
कङ्कन बांधो बिहँस शीशपर म्हौर सजाय दयो है।
मरुवट लगा बना बरना सुखपाल बिठाय दयौ है।
ला०–धांधूबैठौ सुखपाल न बिलम लगायौ।चन्देलेने तब नक्कारौ बजवायौ।महाराज अनीसाजी बिशाल उसदमाएकरसे बिकट सुभट नहीं कोई लड़ैया कम। ढेबा ऊदल ब्रह्मा मलखे संग आल्हा। बाईसौं बेटन सहित सजगये ताला॥ महाराज सकल सजकर तुरङ्ग भये त्यार। तिनपर छटे छरहरे छट्टा छैलभये असवार॥गज सजे तिन्होंपर चढ़े बड़े भट भारे। पलकिनमें बैठे बड़ी २ थोंदन वारे॥ महाराज एक गजसुन्दर सजो बिशाल। तापर सहित गुरूके बैठे चंदेले परमाल ॥ माहिल साजे शिरपाग बैंजनी बारे। दोऊ तरफ़ कलहकी नीम जमावन हारे॥ महाराज संग लीलीपरहैं असवार। इंतिजाम सब इधर उधरकोहै जिनके इख्त्यार। जिसदम बरात सज

नैनागढ को चाली।उसदम छूटीं तोपें बंदूक दुनाली॥ महाराज बाजने बाजे लगे अपार ॥ प्रलयकाल घन माल बराबरहैं जिनकी धधकार । तड़२तड़ाक तड़२ तड़ बाजे तांसे । सङ्गीनें खांड़े चमचमांय चपलासे॥ महाराज बड़े जलसे से चढ़ी बरात । साथ फूलटट्टीकें आतिशबाजी छूटत जात । घर २ बरातकी सुनकर सकल अबाई । देखने तमाशा धाये लोग लुगाई ॥ महाराज वृद्ध अरु बालक और जवान । छये आन छज्जेन परसब देखें बरातकीशान।चलकर बरात जब दरवाजे पर आई। राघव नृपने महलनमें खबरपठाई महाराज सजा सब टीकेको सामान । मछलावतिकी मात सङ्ग सखियन ले कियो पयान । सुकुमारीनारी रतिहिं लजामन हारी । बूढ़ी बारी ब्याहुली घूंघटन बारी । महाराज कमर तिनकी केहरि अनुहारि।खञ्जन नैनी कोकिल बैनी गावें मङ्गलचार ।।सखियन समेत मछलावति चढ़ी अटारी । देखे बरातकी शोभा नैन निहारी ॥ महाराज धवलधांधू पर म्हौहर निहारि । होकर चकित सखी से बोली राघवमच्छ कुमारि ॥

मछला का

दो०—जैमाला मेरी मैंने, जा बरके गलमांहिं ।
सो बर ये आली मेरी; मोकूं दीखे नाहिं ॥

छं०—वह बरनजर आवे नहीं दीखे येबर कोईऔरहै। मैना सुनैना खोल नैना देख करके गौर है ॥ शिर सेहरो को बांधकर आयो बरन मोकूं सखी ।

पहचान करले सबनकी पहचान है तोकूं सखी ॥
जसराज छैया हय चढ़ैया यही था या और था।
सेयां मेरा माला पिन्हैया यही था या और था ॥

सहेली का

दो०—तोकूं क्या मालूम ना, भैना चतुर सुजान।
ठानी तुम्हरे पिताने. जो नेगन की ठान ॥
छं०—ठानीथी जोकुछठान पूरणकरी सब याने सखी।
मद मर्दि जोगा आदिको सेना दरी याने सखी ॥
तोरण कलश मारो इन्हीं और तेलमें न्हायो यही।
नृप प्रण निभायो इन्हीं सब तोकूं बरन आयोयही॥
इन नाम पायो बीरता में करे नेग तमाम है।
जसराज बांदी जामहै और धवल धांधू नाम है ॥
माला पहन जो गयो ताको खोल नैन निहार ले।
पलकी के सँग घोड़ा चढ़ो आवै नगिन तलवार ले।
पायो अमर बर अखै खञ्जर चन्द्रमा उनहार है।
ऊदल को जेठो भ्रात है दिवलाको राजकुमार है ॥

मछली का व्याकुल होना

दो०—कहा पाप कीनों मैंने, ऐ मेरे करतार।
बांदीजाम हराम जो, मिले मोय भरतार ॥
छं०—मोकूं मिले भरतार ये कहा पाप मैं ऐसो कियो।
जो दीनपति मो दीनको ये दुसह दुख दारुण दियो ॥
तुम नाम करुणासिंधु करुणा अयन करुणा मय हरी।
करुणा यतन करुणा सुनो करुणा करे करुणा भरी ॥

गल माल पहनाई जिसे जाऊँमैं प्रभु ताको बरी।
सुधि लेउ स्वामी सर्व व्यापक धार में नैया परी ॥
राग आसावरी—सखी कहा गजब भयो भारो। बनो मेरो प्रभु काज बिगारो॥ नौ नौरता रही निर्जल ब्रत नवदुर्गा को धारो। जा बरहेत गजब जो बोयेसो बर मिलो न प्यारो॥ बनो मेरो०॥ या तो मरूं जहर खाकर या मारूं कंठ कटारो। बरूं तो बरूंबर घोड़ा बारो दिवलाराज दुलारो॥ बनों मेरो०॥ मनः क्रम वचन मान पति लीनों कुल जसराज उजारो। बरूं और बर पतिब्रत छोड़ूं होय जगत मुख कारो। बनों। माला पहराई पद परसे सोई बर सखी हमारो। प्राण जांइ पर इन्दरमन को टरे नहीं प्रण टारो॥ बनों०।

मछला की सखी का

दोहा—काहे को मछलावती, रोवे भर भर नैन।
जा बरसे जूरी बदी, सोई बरेगो भैन॥

रागिनी—राघवमच्छकुमारि, बृथां क्यों नैन बहातीहै। बांदी जायो बरबहन लिखो तेरी तक़दीर। रोइ २ क्यों आपनों बीर भिगोवे चीर॥ धीर मन क्यों नहीं लाती है। राघव०॥ दीन धर्म प्रतिपालकी जगमें बेटी गाय। जाके सँग करदे पिता ताहीके सँग जाय चली जुग २ से आतीहै। राघव०॥ सोच फ़िकर तजि शशि मुखी सबर करो मनमांहिं, घोड़ादारो बर

सखी कर्म तुम्हारे नाहिं॥ यादकर क्यों घबरातीहै।
राघव०॥कहन ग्रहनकर बहनमम रोवै मतसुख देन।
बनै भैन मथनीतेरे करैं हमैं बेचैन । भैन मत पीटै
छाती। हैराघव मच्छ कुमारि० ॥

मछला का सखी से

दोहा–बांदी जाम गुलामकी, मोइ बनाई नार ।
जन्म हमारो पिताने, सब बिधि कीनों ख्वार॥
छं०–ममजन्मसबबिधिख्वारकीनोंक्यापिताकरनीकरी।
बरतो चकोरहि चन्द्रमा सों हाय राहू को बरी ॥
यासे तनक दे मोय ज़हर अहसान हो तेरो सखी।
बोदी भली कहूं पिता से बिगरे जनम मेरो सखी॥
अब को सुनें कासे कहूं कैसी करूं जाऊँ कहां ।
माता पिन्हैया सम सखी सैंया बता पाऊं कहां ॥

कविका

सो०–कमठ उदेचंद राय, मछलावति कौ रुदन सुन ।
ऊपर कौ रह्यो चाहि, तबी बचन बोली सखी॥

सखी का मछला से

दोहा–सबर सुंदरी कर हृदय, मती गमावे प्रान ।
बर दीनों भगवान जो, ताहीको पतिमान ॥
दादरा–हमारी कही मानो राजकुमारी। तुम चकोर
मछलावति सुन्दर याहि चन्द्र कर जानों॥ हमारी०
मन क्रम बचन धवल धांधू को प्यारो पति पहचानों
हमारी० । बरन कहो बर धोड़ा बारो ऐसी ठानन
ठानों ॥ हमारी० ॥ मङ्गल समय हाय नहिं
अच्छो नैनन नीर बहानों । हमारी० । रोवत देखि

रह्यो तेरो देवर उदैराज मरदानों ॥ हमारी० ॥ फिर फिर मलखे हू देखतहैं कनका कुमर दिवानों ।हमारी० इन्द्रकहैं मनमें पहचानों अपनों और बिरानों।हमारी

कवि का

दोहा—सुनत सहेली के बचन, सकल ज्ञान बिसराय।
ऊदल मलखे से कहै; मछलावति बिलखाय ॥

मछला का ऊदल और मलखानसे

दोहा—दग़ा मोइ तुमने दई; ऐ ऊदल मलखान ।
चौरे पटपर बीजुरी, परियो तुमपै आन ॥

छंद—बिजली परो तुम पै दई मँजधार मोय डुबाइके।
खाये न कारे नागने मोइ मुख दिखायो आइके ॥
तुम मीन मारन के समय केहरि बने सो क्या हुआ।
फिर नेग करने के समय कायर बने सो क्या हुआ ॥
धिक २ दोऊन को शूरपन बद २ यही तुमसे कहूं ।
मेरो बिगारो है जनम में आनसी पल्लो गहूं ॥
मैं मांग हूं दिवला कुमर की भेरी तो हिलकी भरे।
बांदी को जायो बरे तुमपै ग़ज़ब गोला ना परे ॥

ऊदल का मलखान से

दोहा—बाण सरीखे बचन ये, मारे मछुला तान ।
सहे न हमपै जातहैं,ऐ भैया मलखान ॥

चौ०—ऐ भैया मलखान भ्रात हम हीरा कनी चबामें।
माता से कह आये हम आल्हा को बर कर लामें ॥
धांधू बरले मांग तो फिर महुबे मुख कहा दिखामें।
आल्हा क्वारो जायतो हम तुम धिक जीवनदुनियामें

दौड़–न धांधू अदब करे है। बड़ेकी मांग बरे है ॥
कौन को है ये भैया।
जल्दी म्हौर उतार शीश से हय मनसुख चढ़वैया॥

मलखान का ऊदल से

दोहा–इत बिगरे धांधू धवल, उतमें राघव भूप।
जमें यहांपर जङ्गको, पूरो २ रूप ॥
चौ०–पूरो २ रूप समर को भैया खूब समर ले।
बिगर न जांय चचा चंदेले नीच ऊँच मन धरले ॥
है यह वक्त नाम करने को करो जाय तो करले।
अगर भुजबलन जोर तेरे आल्हा सँग मछुला बरले
दौड़–सल्हा है मेरी तुम्हारी। न दूजो है हितकारी॥
सोचले दिवला छैया।
अपने और बिराने में अपनों न कोई है भैया॥

ऊदल का

दोहा–ओटूं धांधू धवल की, भैया मैं तलवार।
राघवमच्छ नृपाल से, बरणी रही तुम्हार ॥
चौ०–बरणी रही तुम्हार धवल धांधू को दऊं ढकेला।
लऊं शीश पर से उतार के मौर सेहरो शेला॥
सबरे महुबे वालों से ऊदल भट लड़े अकेला।
नैनागढ़ पति की तुम जानों मैंतो जांपर खेला॥
शेर–बचाके बिगर जानेका मुझेकुछडर फिकरनहै।
मान धांधू का दरनाहै भ्रात आल्हा को बरनाहै॥
रखाजब शिर हथेली पर तो फिरक्या सोच करनाहै
समर के बीच मरनाहै सो भवसागर से तरनाहै॥

दौड़–होय जो प्रभु रचि राखो । मचावें हमतो साखो ।।
हनूं भट छट्टा छट्टा ।
प्राण जांय ना हौन दऊं हरगिज्ज धांधू का पट्टा ।।
कवि का
दोहा–ऊदल मलखे बीर इत; आपस में बतरात ।
तिलक करन त्यारी करी, उत मछलाकी मात ।।
चौ०–उत मछुलाकी मात हात टीको करने को काढौ।
इत ते धांधू आइ भयो पट्टा के ऊपर ठाड़ो ।।
तादम ऊदल उछल जाय धांधू के पास दहाड़ो ।
लाल २ लोचन बिशाल कर खननन खेंचो खांड़ो।।
दौड़–इधर मलखे बलधारी । नगिन शमशेर सम्हारी
महा मन गुस्सा खाकर ।
बोलो ऊदल धांधू से रानी का हाथ हटाकर ।।
ऊदल का
दो०–कैसो पट्टा पर चढो, टीके के हित दौर ।
तिलक करामन के लिये, मुख बनवाले और ।।
चौ०–मुख बनवाले और तिलककया मुखसेकरवावेहै।
म्हौर बांधि शिर काई को खातिर में नहिं लावे है।।
सोचे अनुचित उचित नहीं डूबो घमएड जावेहै ।
बड़े भ्रातकी मांग बरे तोइ लाज नहीं आवे है ।।
दौड़–करावे टीको आल्हा । पहनी जिसने जयमाला
उतर पट्टा ते आओ ।
चाहो कुशल मान जाओ मत अपनों तिलक कराओ
धांधू का
दोहा–कहा सोच मोसे रह्या, तू टेढ़ो बतराय ।

पट्टा से उतरूं न अब, चाहे सो होजाय ॥
चौ०—चाहे सो होजाय नहीं पट्टा से मैं उतरूँगो ।
तिलक कराये बिना यहां से हरगिज़ नहीं टरूंगो ॥
बुरो मान चाहे भलो मान अबतो नृप सुता बरूंगो
अगर लड़ाई लडे लडूं मारुंगो और मरूँगो ॥
दौड़—नेग्रकर लौटगयो जबाक्योंन समझाय दयोतब
मेरो तन बदन जरेहै ।
अब मेरे सँग ऐन वक्तपर घाती घात करे है ॥

ऊदल का धांधू को धक्का देना

दोहा—देखूँ कैसो धवल तु; लइ तिलक करवाय ।
सुनकर तेरे बचनको, क्रोध गयो तन छाय ॥
चौ०—क्रोधगयो तनछाय धाय धांधूमें धक्का दीनों ।
झपट शीशपर से उतार चट म्हौर सेहरो लीनों ॥
दूल्हा बना वीर आल्हा ठाड़ो पट्टा पर कीन्हों ।
भूपति ये दामाद तुम्हारो नैन खोल कर चीन्हों ॥
दौ०—तिलक याको करवाओ।न भूपति देर लगाओ॥
तुम्हें पहले समझाऊं ।
अगर उज्र कुछ करो तिलक तेग्रा के बल करबाऊं॥

कवि का

दोहा—गिरत धरणि धांधू धवल; बिगरगयो एकसंग।
खांड़ा खींचा म्यान से, गुस्सा भरगई अँग ॥
छं०—इतसे चलो धांधू धवल ऊदलपे गुस्सा खाइके ।
भट बिकट राघवमच्छ के इत से परे अराय के ॥
नप पुत्र भोगा आदि भट रहे मार २ मचाइ के ।
यह गति निरखि कनका कुमर नाहरसो टूटो आइके।

छूटो कुमर बसुदेवको जागन सिरोही धारहै नृपद्वार पर तलवार की होरही मारा मार है ॥

आल्हा—बजन सिरोही लगी द्वारपर चोटें परें झड़ाक झड़ाक बख्तर चटकजांइ फौलादी टूटें बन्द तड़ाक तडाक ॥ एकलंग नैनागढ़ वारेन से लड़े बीरजागन मलखान। एक लंग धांधू उदैराज में बाजन लगी कठिन किरपान॥ऊदल तेग दई धांधूके टूट तेग चूरी सी जाय। धांधू जिसदम चोट चलावे देइ उदैचन्द ढाल अड़ाय ॥ कबहूं चोट खाय ऊदलकी धांधू जाय धरनपरलोट।ऊदलगिरैधरणपै कबहूंखाइधवलधांधूकी चोट ॥ करें भयङ्कर युद्ध दोऊ भट कोईन मन में मानै हार। धांधू धवल रोसखा मनमें श्रीजगदम्बा लई सम्हार ॥ तेग दुहत्ती दई ऊदल के सिरपर भयो खड़ाको आय। छे अँगुल धसगयो दुधारो ऊदल गिरो मूर्छा खाय॥ऊदल गिरत लखो आल्हाने पजरो देवकुमरि को लाल। खर्ग म्यान से खननन खेंचो भेष लिया करके बिकराल ॥

ला०—कर भेष कराला दिवला लाला कोपा। जाकर धांधूसे समर समर में रोपा ॥ महाराज खर्ग धांधूपर छोड़ा तान। ढाल फटी गेंडेवाली शिर हुआ खटाका आन॥पत्थर तन धांधूका नहिं चोट समाई। तब नर धांधू गुस्साखा चोट चलाई॥ महाराज भई जगदम्बा आन सहाय। अमर शरीर बीर आल्हा का नहीं चोट अनियाय॥जगदम्बा ने आल्हा कर दिया अमरथा।

घांधूको भी बरथा जिससे पत्थर था। महाराज ये गुण आल्हा में एक अपार। अहै तेग्र क्षत्रीकी जगमें कोई न ओटनहार॥ जब तेग्रा ले घांधूपर आल्हा धायो। तब धांधू के मनमें कायरपन आयो॥महाराज एकदम काँपन लगो शरीर।आल्हाके मुक्काबिल्लेसे भागा धांधू बलबीर ॥मूर्छा जागी। इतमें कलिहा ऊदलकी। उत्पात करैया छैया बन्नाफलकी॥ महाराज लड़ें जहं जागन अरु मलखान। गुसा खाइकर वहां एकदम पहुंचो काल समान॥ ऊदल मलखे जागन तेग्रा डट कीना। नैनागढ़का सब कटक गर्द कर दीना॥ महा; राज भटनको भ्कारो सकल घमण्डाजोगाभोगाब्रजनंदन के कसे तानकर दंड॥ये हाल देख राजाको कांपो सीनों ऊदल मलखे के चरण आय शिर दीनों॥ महाराज ठाडो कर आल्हा राजकुमार। दियो तिलक करवाय भूपने बुला आपनी नार॥ फिरकर बिनती नप लियो छुटा पुत्रनको। बन्नाफल चाले सब अपने तंबुअन को॥महाराज सकल निज २ डेरा गये आन। माहिल चुगलखोर धांधू के भरन लगे तब कान॥

माहिल का धांधू सें

दो०—देखी सुनी न आजतक, जो यहां बीती बात।
घात साथ तेरे करी, ये किनके हैं भ्रात॥

चौ०—ये किनकेहैं भ्रात साथ तेरे में ऐसो कीनों।
आप बरें हु मांग नेग तोपे कराय सब लीनों॥

तेरो म्हौर उतार शीश आल्हा के पै धर दीनों।
अब इनके सँग रहनों ।धिक २ जगमें जाना ॥
दो०-कहन जो मानै मेरी । तौ पर जांय भांवरतेरी
मांग तोड़ यहीं दिलाऊं।
आल्हा ऊदल मलखे सबकी मिट्टी ख्वार कराऊं ॥

धांधू का

दो०-कहन सुनत इसदम कछू, मोकूं नहीं सुहाय।
जरा जहर ला दीजिये,मामा सोऊं खाय ॥
चौ०-मामा सोऊं खाय जहरया हीरा कनी चबाऊं।
प्राण राखकर अपनी ना जगमें अपकीर्ति कराऊं ॥
मुख इनको देखूं न कभी ना अपनों इन्हें दिखाऊं।
कीजे जल्द उपाय जाय ढकि परदा जो मरजाऊं ॥
दो०-कहीं जाऊँ ना आऊँ। खाय बिष प्राणगमाऊं।
बचन तुम मानौसच्चौ।
ऐसे जीने से मामाजी मरजानों ही अच्छौ ॥

माहिल का

दो०-जहर खाय जूती तेरी, चावै कनी बलाय ॥
या अनीति को भानेज,दऊं बदलो चुकवाय ॥
चौ०-बदलोदूं चुकवाय तोइ दिल्लीपतिसे मिलवाऊँ।
नौलख दल के सहित चढ़ाकर प्रथीराज को लाऊं ॥
मार टूँक उड़वा इनके तोड़ तेरी मांग दिवाऊँ।
याही नैनागढ़ में भानज ब्याह तेरो करवाऊँ।
दो०-साथ धांधू चल मेरे । होंय सिधि कारज तेरे ॥
न मानें पछितावैगा।
इन पाजिनके सङ्ग रहेतो बहुत दुक्ख पावैगो ॥

कवि की

दो०–शिक्षा माहिलकी लई; धांधू भट बलवीर ।
आयो ढिंग परमालके, नैनन डारत नीर ॥

परमाल का

दो०–क्यों रोवै धांधू धवल, मनमें धीरज धार ।
आल्हा ऊदल दोउनको, तांसू तेरे अगार ॥
झू०तांसू तेरेअगार घबराय मतना। नैनन नीरअपने मती भरै बेटा। तेरे ब्याहमें बार कर दऊं छैयागुस्सा थूक मत सोचमें परै बेटा॥रखूं पास तोकूंअपनीलगा छाती। धांधू धवल मनमें मतीडरै बेटा।बिंदुमतीफरजंद सुखकन्द नन्दन किसी बातका मती ग्रम करै बेटा॥

धांधू का

दो०–चरणन शीश नवायकर, कहूं युगल करजोर ।
जहां आल्हा ऊदल रहै, तहां रहनों नहिंमोर ।
झू०–तहां रहना नहिं मोर करजोर कहता किसी तरह यहां चैन नहिं मेरे दमको।जहां रामलेजायतहां रहूं जाकर सहूं बिपति आफत दुखसुख रञ्ज गमको वाचा आपसेयही अरदास मेरी राजीखुशी देउफौज बटवाय हमको। कहैं इन्द्र राखिये आल्हा उदेचँदको धांधू बीरतो बंदगी करै तुमको॥

परमाल का

दो०–तारे नैननके मेरे, पांचो सुत सुज्ञान ।
आल्हा ऊदल ब्रह्मानँद, धांधू अरु मलखान ।
झू०–धांधू अरु मलखान सब मोइ प्यारे बचन

सुनतेतरोजीघबरायबेटा।नैयाखिवैया मेरीहोतुम्हींछैया
त्यागा मोइ मरजाऊँ बिलखाय बेटा।। बिंदुमतीमरती
बार तोइ धांधूमेरी गोदमें गई बैठाय बेटा।।जो तू जाय
तो बज्रकी शिला धांधू छाती मेरी पैजाउसरकायबेटा।

धांधुका परमाल से

दो०-चाचाजी क्यों रोवते,रोने में क्या सार ।
काउ बिधि रहने का नहीं,मालिक कहूं पुकार ।।

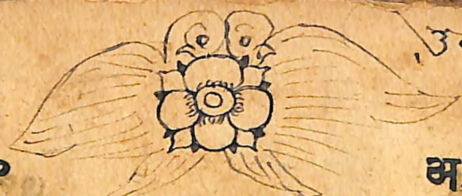
छं०-मालिक सुनों मैं आपने भोगू करमका भोगहै ।
मेरा तुम्हारा बिधाता इतना ही लिखा संयोग है ।।
आल्हा उदैचँद ब्रह्मानन्द मलखानके सुत मानियौं।
कर लीजियो मनमें सबर मरगयो धांधू जानियो।।
छाती लगा पुचकार हमको चचा आज्ञा दीजिये ।
अपराध सब धांधू कुमरके क्षमा मन से कीजिये ।।
कुछना कही देखत रहे तुम घाव ना ये भरेंगो ।
ऐसी मेरे सँग में करी बैरी न कोई करेगो ।।
अच्छी करी नेकी मेरे सँग जान बिन मा बाप को।
सूबस बसो गढ महोबो जुगर भलोहोय आपको।।

इति दूसरी मँजिल समाप्त

परमाल का

दो०-शोक सह्यो ना जाइगो,मरजाऊं बिलखाय ।
बूढ़ेपनमें छोड़ मोइ, बेटा मतना जाय ।।

छं०-बेटा कुमर छौना मेरे तू जाय मोकूं छोड़के ।
ऐसो हियो कर बज्रलीनों मोह दीनों तोड़के ।।
बिछुरन सह्यो ना जाय हा रोवन लगो किलकारके।



गयो लिपट धांधू कुमरसे गलबांहि गलमें डारके।
बेशक महोबो त्यागि दीजो मोइ फूंक पजारकर ।
इसदम कन्हैया जाय मत मेरो बुढापो ख्वार कर ॥

कवि का

दो०—चंदेले छोड़ें नहीं, रखी भुजा गलडार ।
धांधू एकन मानता, तब बोले परिहार ॥

माहिल कापरमाल से

दो०—क्यों घबराये जात हो; चंदेले महाराज ॥
इत उत इसे डुलायकर, लाऊं लोटा आज ॥
चौ०—लोटा लाऊं आज जाय आगे डरपाय दऊंगो॥
नीच ऊँचकी बात सकल याको समझाय दऊंगो ॥
बरै आग याके तन में सो भूप बुझाय दऊंगो ।
कहीं न जाने दऊं लायकर यहीं बिठाय दऊंगो ॥
दो०—भूप गलबांहि बिसारो । धीर दिलअंदरधारो।
सङ्ग में याके जाऊं । यहीं लोटाकर लाऊं॥
सीख मेरी उरधरियो।
जबतक जाऊंनहीं ब्याहकामत प्रबन्ध कोईकरियो ॥

कवि का

दो०—ऐसे नृप परमालको; उरही पति समझाय ।
धांधू को ले सङ्ग अब, गढ दिल्ली को जाय।
चौ—गढ दिल्लीको जायमगनमनश्री गणराजमनाके।
उरई पति मूंछनके ऊपर ताउ देत मुसका के ॥
करत सफर पर सफर रात दिन दहली पहुँचे जाके
किया जाय आदाब शाहको दे उन शीश नवाके ॥
दो०—भूप माहिलको चीन्हा ।पास बिठलाकर लीन्हा

करी अति खातिरदारी ।
इन्द्रप्रस्थ पति प्रथीराज माहिल से गिरा उचारी ॥

प्रथीराज का

दो०—आमन तुम कहां से भयो, उरईपति परिहार ।
लाए अपने साथ ये, किनको राजकुमार ॥
चौ०—किनको राजकुमार बीरता यापर छाय रही है।
तेगन के होरहे चिन्ह दृग सुरखी आय रही है ॥
झलक कांति द्युति तनकी क्षत्रीपन दरशाय रहीहै।
रण बिशाल कहूं भयो ढाल फाटी दिखलाय रहीहै॥
दौड़—भूप माहिल सुज्ञानी । सुनाओ सकल कहानी॥
कौन को है यह छैया ।
बीर रूप अदभुत अनूप अलबेलो शूर सिपैया ॥

माहिल का

दो०—गढ़ महुवे ये रहत हैं, धांधू धवल कराल ।
जस्सराज कौ बिंद है, बिंदुमती को लाल ॥
चौ०—बिंदुमती कौ लाल बांट याके तलवार परीहै ।
इकले ने नैनागढपति की सैना सकल दरी है ॥
महुवे बारेन याके सँग महाराजा बुरी करी है ।
मांग छीन लीनी याकी आल्हा के सङ्ग बरी है ॥
शेर—बिगड़कर उनसे आयाहैहुक्मनितप्रतिउठावेगा॥
मदद कुछ करोगे इसकी तो तुम्हरे गुन ये गावेगा॥
धवल हैं आठ सरकारी न इसके कोई सानी है ।
लेउ अजमाय चाहे तुम जो मानों झूंठ बानी है ॥
दौ०—समरमें समर करैया । तेग़को कठिन चलैया ॥

है बांको शूर सिपैया।
लायो हेतु आपके मैं सोने की पकर चिरैया॥

प्रथीराज का

दो०—ऐसे २ धवल मम, बल बिशाल बिकराल।
दोऊ करसे दन्तन पकर, अधर करें गजहाल॥

चौ०—अधरकरें गजहालफेंक कुन्दुकमानिंद उछारत।
चरण प्रहारत धरा हलै अरुदिशिकुञ्जर चिक्कारत॥
मूलक के मानिन्द विटप चट मूल समेत उखारत।
तनक छोकरा की उरहीपति ऐसी शेखी मारत॥

दौड़—कहां ये कहां धवल हैं। आपकी कहांअक्कलहै॥
ये क्या रण छाती देगो।
मृग शावक क्या पञ्चानन की कर बराबरी लेगो॥

माहिल का

दो०—नृपति आपके धवल ये, एक गज लेइ उठाइ।
दो२ लेइ उठाय ये, लेउ चाहैं अजमाइ॥

चौ०—लेउ भूपअजमाइ न ऐसा धवल फेर पाने का।
कर कङ्गन मौजूद काम क्या दरपन दिखलाने का॥
दीखै है प्रत्यत्त कौन मतलब प्रमाण लाने का।
झूठ सांच लो जांच जांच बल धांधू मरदाने का॥

दो०—समर में समर करैया। कठिन तलवार चलैया॥
अनोखो शूर सिपैया।
लायो हेतु आप के मैं सोने की पकर चिरैया॥

कवि का

दो०—सुनकर माहिलके बचन, दो गज लिये मँगाय।
धांधू ढिंग ठाड़े किये, फ़ीलवान ने आय॥

धांधू का हाथीन को उठाना

दो०—येही गज नृप आपके; योधा लँइ उठाय।
ऐसे २ चार छे, लीजे और मँगाय॥

चौ०—लीजे और मँगाय एकदो कुञ्जरकहा उठाऊं॥
पइरा से गज इन्हें उठावत में मनमें सकुचाऊं॥
पकर सुण्ड इन हाथिन को गोफिन मानिंद फिराऊं।
जो इतनी ना करूं तो जायो जस्सराज को नाऊं।

दौड—तनक ना बिलम लगायो। पास हाथिनकेआयो
लई जगदम्ब सुमर है।
पकड़े दन्त तुरन्त करे दोनों गजराज अधर है॥

कवि का

दो०—जिसदम धांधू धवल ने, कुञ्जर लए उठाय।
दिल्लीपति तादम कहा, माहिल से समझाय।

प्रथीराज का

दोहा—देखतको छोटो लगे, लेकिन बल अत्यन्त।
ऐसा मेरे यहां कोई, नहीं धवल सामन्त॥

चौ०—ऐसा नहीं सामन्त हमारे आवे कोई नजर है।
फुर्ती हिम्मत जोरदार तन में अपार जोहर है॥
सिपह फौज पलटन सारी का किया इसे अफसर है।
शूर धवल सामन्तों में सबसे अव्वल नम्बर है॥

दौड—बताया था जैसाही। बली निकला तैसाही॥
मेरे यहां मोज उड़ाओ।
बना दिया कप्तान फौज सारीपे हुक्म चलाओ॥

माहिल का

दो०—छोटी सी एक बातको, कीजे भूप करार

जीवैगो जबतक रहे, तुम्हरो तावेदार ॥
चौ०—तुम्हरो तावेदार बने परफ़िकर छुटानी होगी।
जो कर पेज चला वहां से सो तुम्हें निभानी होगी ॥
आल्हा मांग बरेहै इसकी इसे दिलानी होगी।
नैनागढ़ चल बनाफलों से जङ्ग मचानी होगी ॥
दौड़—आपजो सङ्ग पधारो। तो नौकर बनै तुम्हारो।
समझ लीजे मन माहें।
लेन देन की कोई इसे परवाह भूमिपति नाहैं ॥

प्रथीराजका

दोहा—छोटीसी यह बात क्या; करवाते इक़रार।
एकमांग की क्या चली, मांग दिलादूं चार ॥
चौ०—मांग दिलादूं चार अभी दल अपना सजवाताहूं
तङ्ग तुरङ्गों पर फ़ीलों पर झूलें गिरवाता हूं ॥
चलते २ बनाफलों के पुरजे उड़वाता हूं।
नैनागढ के बीच ब्याह धांधू का करवाता हूं ॥
दौ०—महुबिया महुवे वारे हमारे देख भारे ॥
जरा मत देर लगाओ।
चन्द्रभाट मन्त्री मेरी सेना को जल्द सजाओ ॥

कवि का

दो०—जिसदम दीनों हुक्म नृप, सजवामन निजसेन।
रोयो स्वान पुकारतब, कहैं चंद्र कबि बेन॥

चन्द्रभाट का

क०—श्रीमन महाराजजी चौहान ज्ञान वान भूप दल सजवाउगे तौ आप पछिताउगे। होयगो बिघन पे शगुन मेरो बोल रह्यो चत्रीपन कीरती को रनमें

गमाउगे। जाय जङ्ग जोरौगे तौ होगो सब मानभंग नैनागढ़ घांधू को न ब्याहि कर लाउगे॥कहतकबिंद बाणी। बोलत रुद्राणी। यही अभै भूप जाओगे तो जंग हार आउगे॥

माहिल का प्रथीराज से

दोहा—सगुन देखनों वैश्य को, है महाराज जरूर।
कहीं हमन देखें नहीं, सगुन बिचारत शूर॥
चौ०—सगुन न देखें शूर क्रूर कायर बकरह्यो भटाको।
कैसो ठाट बना राखो या भिकमंगा ॥
खाखी उड़वाओ अपनो उपदेश सुनोंग याको।
अच्छे जनम हीजरा को दीवान बनाकर राखो॥
दौड़—हुक्म तुम्हरो लौटावे। न मनमें दहशत खावे। कटा शिर चौड़े डारे।
कुली उचारा हाथ पसारा इस दम शगुन बिचारे॥

कवि का

दोहा—तनक नहीं चितमें भेर, चन्द्र भाट के बैन।
माहिल की उस वक्तपर; प्यारी लागी कैन॥
चौ०—प्यारी लागी कैन सजा सैना दिल्ली पतिवाले
बादल रूप कटक बिजली संगीन तेग्र और भाले।
गर्जन रूपबजत नक्कारे। सुनत धराधर हाले॥
योजन एक रह्यो नैनागढ़ तहांपर डेरा डाले॥
दौड़—फेंट खोलीं रजपूतन। न्हाइ धो कीनों भोजन। सफर की छुटी हरारत।
प्रथीराज से बचन तापड़ी माहिल भूप उचारत॥

माहिल का पथीराज से

दोहा–शादी मच्छलादती की, धांधू सँग नृपाल ।
राजी करने के लिये; राघवमच्छ नृपाल ॥
चौ०–राघवमच्छ नृपाल सब तरहराजी सुताबरनको ।
लेकिन आल्हा ऊदल मलखे रहे उठा धरनको ॥
काफ़ी राघवमच्छ प्रथम तो उनके मान दरन को ।
अगरहारजाय भूप आप तब चलना जङ्ग करन को ॥
दौड़–पूछेकोई आइ पिछारी। कहियोहम हैं न्योतारी।
मैंतो नैनागढ़ जाऊं ।
अवसर पाऊं जभी तुम्हारे कारज सिद्धि कराऊं॥

कवि का

दोहा–कहि इतनी माहिल चलो, हो लीली असवार ।
जाय महुबियन से कही: उरही के परिहार ॥

माहिलका परमाल से

दोहा–एक कही मानी: उन, ऐसो भयो घमण्ड ।
दिल्लीपति सें जामिलो, धांधू धवल प्रचण्ड॥
चौ०–धांधू धवल प्रचंड चढ़ा दिल्लीपति को लावैगो ।
दल बादल सो नोऊलाख दल नैनागढ़ आवैगो ॥
सोलह साभँत आठ धवल सो शूरन लड़बावैगो ।
पूरो समर होय आल्हा कैसे ब्याह्यो जावैगो ॥
दौड़–सोच ये मोकूं भारी । न हिलकी रुके हमारी ॥
भयो सब बिधि से ठट्टा ।
गढ़ महुबे की आज बात को लगतो दीखे बट्टा ॥

परमाल का ताला का

दो०—क्या करना चहिये यतन, अटकी कठिन कराल
काहूबिधि बननेे नहीं, ये दिवला के लाल ॥
चौ०—ये दिवलाके लाल समरमें कहांतक मियांअड़ैंगे
इतसे नैनागढ़ बारे उतसे चौहान चढ़ैंगे ॥
ऊदल अरु मलखान अकेले कित२ जाय लड़ैंगे ।
अब काऊ बिधिसे आल्हा के फेरे नहीं पड़ैंगे ॥
दौड़—बिघन आपस में डारो।आपनों परतापबिगारो
कहा अब करना चहिये ।
जाबिधि से अब लाज रहे सो मियां अकल बतइये॥

ताला का परमाल से

दोहा—ऊदल छोटे बड़े की, मेंट दई मरयाद ।
सल्हा हमारी ना लई, घरमें किया फिसाद ॥
चौ०—घरमेंकिया फिसादबात अब मोसे क्यापूछनकी
मनमें उठत हिलोर देख करतूतें इन लड़कन की ॥
जस्सराज गये सोंप मुझे सो शरम बांह पकरनकी।
होवे सो देखा जावे त्यारी करो ब्याह करनेकी ॥
दौड़—बुला धामन को लीजे ।एक पत्री लिखदीजे ॥
जाय नैनागढ़ देगा ।
पत्री देखत ब्याह करै नृप या पकरैगा तेगा ॥

कवि का

दोहा—सुनकर ताला के बचन; लिखो पत्र परमाल ।
राघवमच्छ नृपाल पर, पहुँचाया ततकाल॥
चौ०—पहुँचाया ततकाल पत्रको राजा पढ़त भयो है ।
ब्याह हाल आल्हा को बाचत गुस्सा बदन छयोहै ॥

जोगा भोगा ब्रजनन्दन तीनों को बुला लयौ है ।
ब्यौरे बार पत्रिका को सब हाल सुनाय दयौ है ॥
कड़ा—प्यारेजी सुन पत्रीका हाल गुसा तीनों कोछाई
जंग करनको सकल सैन चतुरंग सजाई ॥
दु०—बजवाय जुझाऊं नक्कारो संग्राम हेत तीनोंचाले
सुन घोर दुन्दुभीकी घनसी इतत्यार भये महुबेवाले
दौड़—मोरचा जुटा समरका । आयकर इधर उधरका॥
छूटने लागे गोला ।
अपना हाथी बढ़ागर्ज कर जोगा क्षत्री बोला ॥
जोगा का
दोहा—आओ है भट कौनसा, महुबे का सरदार ।
जोगराज के सामने, लेइ हाथ तलवार ॥
चौ०—लेइ हाथ तलवार जंग मो संग लड़े कट २ के।
सहो बार तलवार हमारा समर भूमि में डट के ॥
दौड़ काट लऊं सर भुट्टासा जोकोई जावै हट के ।
ऐसे पटकूं सुभटनको यों मृगराज मृगनको पटके
दौड़—तेगकर मेरे कराली । भूमि रण करदऊं खाली॥
आउ बढ़ आगे कोई ।
जोगराज बहनोई की झेलो तो सही सिरोही ॥
कवि का
दोहा—समर भूमि जोगा रहा, केहरिसा ललकार ।
इतसे सैयद तलनसी, सबसे कहे पुकार ॥
तालासैयद का
दोहा—सेनासे सेना भिड़े, समर भूमि दरम्यान ।
जोगा से ऊदल लड़े; भोगा से मलखान ॥

चौ०—भोगासे मलखान तुम्हें होगी। कृपान रणकरनी
ब्रजनन्दन सन्मुख आल्हा को हो तलवार पकरनी॥
नृपके रिश्तेदार तिन्हें जागन पछार दे घरनी। ।
महाराज राघव नृपाल से रही हमारी बरनी ॥
दो०—तनक मत देर करौअब कमरतलवार धरौअब॥
समर में खूर परौ अब ।
अपनी २ बरणी के जाकर के मान दरौ अब ॥

कवि का

दो०—तालाके सुनकर बचन, कर नङ्गी शमशीर ।
जोगा सन्मुख जाय अस, कही उदैचंद बीर ॥

ऊदल का

दो०—गरज रहा गजपर कहा, करकर जोर महान ।
गाल छरैया मैं तेरो. जोगराज बलवान ॥
चौ०—जोगराज बलवान मान भारूंगो ना हारूंगो॥
डारूँगो गजसे नीचे तोइ दुखिल २ मारूंगो ॥
प्रवलधवल बल दालिमलि दल जलकाईसम फारूंगो
लङ्क दहन हनुमान कियो जिमि नैनागढ़ जारूंगो ॥
दौड़—मर्दमी की दम राखो । करो निष्कंटक साखो ।
कदाचित हिम्मत हारो ।
तो आल्हा के संग भांवरें मछलावति की डारो ॥

जोगा का

दो०—तैने सुनों के ना सुनों, जोगा मेरा नाम ।
उछरे घोड़ापर मती, जाति कुजाति गुलाम ।
चौ०—जाति कुजाति गुलाम गामके गाम फूंकदीनेहैं॥
मार तोपदे गढ़ अपार मिसमार छार कीने हैं ॥

अतुल बली भटमान मलिन के पुरुषारथ छीनेहैं ।
तोसे तेग्रा चलबैया सैकड़ों देख लीने हैं ॥
दौड़—समर जिन मोसे जोड़ो। बंश तिनको नहिं छोड़ो।
कहूं समझाकर तोसे ।
कहा समर तु करै पिसन हारी के छोरा मोसे ॥

ऊदन का

दो०—श्रीदुरगा की कृपासे, जोगराज सरदार ।
इन्हीं भुजन से करदऊं, नैनागढ़ मिस्मार ॥
चौ०—नैनागढ़ मिस्मार च्चार करदऊं न बाक़ी छोड़ूं ।
होय दिवसकी रात जिसघड़ी समर समरमें जोड़ूं ।
छट्टा २ हनूं सुभट्टा भुट्टा से शिर तोड़ूं ।
धर्जी २ तन किर्चे किर्चे है जाय नहीं मुख मोड़ूं ॥
दौड़—मुश्क हन तेरी चढ़ावें । भ्रातके पग पुजवावें ॥
मछलदे बर ले जावें ।
तबतो नहीं पिसनहारी के हम छोरा कहलावें ॥

कवि का

दोहा—सुनकर ऊदलके बचन, प्रबल गुसा तन खाय।
तड़तड़ाय कर तड़ितसो; खांड़ो लिया उठाय॥
चौ०—खांड़ो लियो उठाय महारिस खाय ज़ोरकरभारी
बदल पैंतरा ऊदल के शिर चोट बज्रसी मारी ॥
पटा खिलैया दिवला छैया कर महान हुशियारी ।
उका चोट जोगा च्त्री के धमकी उदर कटारी ॥
दौड़—तीन अंगुल समियाई। रक्त संग लेती आई ॥
हवा जब घाव समाई ।
जोगा चक्कर खाय गिरो भोगा ने तेग्र उठाई ॥

जोगा का ऊदल से

दोहा—गिरत भूमि जोगा लखो, छयो रोस एकसंग।
अट्टहास कर गर्जना, चला करनको जंग ॥
चौ०—चला करनको जंग रंग रणका मम अङ्ग उमङ्ग।
काल समान कराल भेष कर लिया दुधारा नङ्गा ॥
ऐसे धाया ऊदल पर जैसे पौनिया भुजङ्गा।
रे शठ बंगा सहित तुरंगा करूँ तोर शिर भंगा ॥
दौड़—समर घोड़ा पर जैयो। हमारी चोट बचैयो॥
प्राण नहिं छोड़ू तनमें।
मनमें कहा सिहाय रहतवा जोगा गिरा धरनमें ॥

मलखान का जोगा से

दो०—उधर कहां जाता चला; नागिन दुधारा तान।
इधर देख तेरा ठाढ़ो, बहनोई मलखान ॥
चौ०—बहनोई मलखान खड़ा क्योंनहीं इधर आताहै।
मेरी तेरी बरणी है क्यों ऊदल पर जाता है ॥
गर्ज २ अति तर्ज तर्ज तेग़ा को उचकाता है।
गीदड़ भवकी दिखलाता सिंहों को डरपाताहै ॥
दौड़—हमारे सन्मुख आओ। इधर कुंजर लौटाओ॥
जोर जौहर दिखलाओ।
चोट चलाओ जंग मचाओ ऊदल पर क्यों जाओ ॥

जोगा का

दो०—आउ निवट तोसे लङूं. होनी होय सो होय।
पीछे ऊदल को हनूं, पहले मारूँ तोय ॥
चौ०—पहले मारूं तोय खोय दऊँ नामनिशानजमींसे
आप बने तेग़ा धारी महतारी पिसने पीसे ॥

नैन बिहीन कमीन करूं तोकूँ संगीन अनीसे ।
देख नज़र भर ये खञ्जर धरसर लूं कतर इसीसे ॥
कवित्त—डारूंगो गुमान मर्दि ऐरे मलखान तोर करमें कृपान जब क्रोध कर धारूंगो । धारूंगो कराल भेष ब्याल सम तुल्य किधों मुंड भुज भालनपै तेग फन मारूंगो ॥ मारूंगो नृपाल लाल बनूं कालहू को काल होयगी गुलाल धरा शूरमा प्रहारूंगो । हारूंगो गुलाम के गुलाम तोसे जंग नहीं थामें ना जबान क़तलाम कर डारूंगो ॥
दौड़—बार तलवार झेलनों । न गेंड़ी पार खेलनों॥
समर के काम क़रारे ।
कनका बारे संग हमारे तू क्या लड़े बिचारे ॥

मलखान का

दो०—उछल २ गजपर कहा. रहा जबान चलाय ।
जरा देर में भातई, सब मालुम परजाय ॥
चौ०—सब मालुम परजाय धाय दल नाहरसा छूटूंगा।
यथा लवापर बाज किधों बिजली समान टूटूंगा ॥
काटूं कटक कराल भाल भट धमकि २ कूटूँगा। ।
भैना बरूँ तेरी आल्हा संग नैनागढ़ लूटूंगा ॥
कवित्त—बार बार काहे तलवारको उछार रह्यो करले प्रहार क्यों बजावै गाल खाली है । ठाली देत गाली ना सहारी बदकारी जात फेर कछु कहै दऊं झोकके दुनाली है॥लाली तेरे बापकी बरूंगो बीर आल्हा सङ्ग कोप चन्द्रहास अब हाथ में सम्हाली है ॥

देख ये भुजाली समझाली मलखान वाली पैनी धार वाली ये कराली महा कालीहै ॥

दो०—आपहैं भूप त्रकत्ता। हीन कुल हम अलवत्ता ॥
पिसनहारी के जाए।
तेरे बापके भोगामल दामाद बननको आए ॥

कवि का

दो०—सुनकरमलखे के बचन, राघवमच्छ कुमार ॥
खाइ प्रबल गुस्सा बदन, लीनी तेग निकार ॥

चौ०—लीनी तेग निकार बार कनकाकुमारपरकीनौं।
खाली खांड़ो परो शरासन भोगामल ने लीनों ॥
चाप श्रवणलागि तान बान रिसमानज्वान फिरदीनों
बच्छराज के लाल हाल सन्मुख कर दीनौं सीनों ॥

दो०—बाण ऊको भोगाकौ। बचो छैया कनका कौ ॥
सांग तिस्सरफिर मारी।
गिरगई सांग धरन ऊपर बोलो भोगा बलधारी ॥

भोगा का मलखान से

दो०—या तेगाकी धारसे, किये खंड भुज सुण्ड।
कल्ला काटे हयन के गजराजनके सुंड ॥

चौ०—गजराज के सुंड झुंड के झुंड झार दीने हैं।
जिनपर किया प्रहार भेज यमराज द्वार दीने हैं ॥
हने बली बिकराल गाल उर भाल फार दीने हैं।
पनियांढार अपार दुर्ग कर चार २ दीनेहैं ॥

दो०—चोट खाली गई मेरी। कोई शुभ शाअत तेरी॥
मान अबहू समझाय॥

अबकी बार गमार किसीबिधि बचे न प्रान बचाया॥
मलखान का जोगा से
दो०—श्रीरघुबरकी कृपासे, है शुभ शाअत मोर ।
पल शाअतमें मरनकी, आवै शाअत तोर ॥
चौ०—आवै शायत तोर तोरसिर धरण गिराएदेता ।
धरणी से सूरत मूरत जल अन्न उठाए देता ॥
बज्र प्रहार वार एक कर यम द्वार पठाए देता ।
पञ्च तत्वमें पञ्च तत्व अब तेरा मिलाए देता ॥
शैर—ये कह कर म्यानसे खननन खेंच खांडा लिया
करमें तानकर एड़ धर मारी उड़ाया बाज अम्बरमें॥
बाजसा टूट कर एकदम जाय हाथी के ऊपर में ।
ढालकी दी इधर ओझड़ इधर खांडा दिया सरमें ॥
दो०—दिया गजसे गिरायकर लई मुश्कें चढ़ायकर ॥
कटक दीना भगायकर ।
ब्रजनन्दनकी ओर चला बिजलीसा तड़तड़ायकर ॥
बृजनंदन का
दो०—समर बैठियो अस्पपर,कनका के मलखान ।
अब जिंदा छोडूं नहीं, हनूं छनक में प्रान ॥
कबि का
दो०—जब ब्रजनन्दन शूरमा, ले करमें शमशेर ॥
मलखेके ऊपर चलो, आल्हा लीनों घेर ॥
आला का
दो०—बढ़े जात आगे कहां बृजनन्दन सरदार ।
तुम्हरी बरनी पर ठडो, मंडलीक अवतार ॥
चौ०—मंडलीक अवतार अखे जिसकी हारहीसिरोई।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण जानत हैं सब कोई ॥
फाड़ूँ कटक शीश भुदासौं पटक पछाड़ूं तोई ।
मैना तेरी बरूं बनूं कुलपूज्य सगो बहनोई ॥
दो०—मद्धबियनसेरण ठानों।कुशल अपनी मतजानों
सकल दलको दुचिल्लूंगो ।
पकर थूथरी तेरी मूंठ तेगाकी से कुचिल्लूंगो॥

ब्रजनंदनकी

दो०—ऊदल मलखे के सहित, ऐ कुलहीन गुलाम ।
करूं तेरा कतलाममैं, तो ब्रजनन्दन नाम ॥
चौ--तो ब्रजनंदन नाम धामयमके पहुँचाय दऊँगा।
करूं खण्ड भुज दण्ड रुण्डसे मुण्ड उड़ाय दऊँगा॥
धरूं लाश पै लाश रक्त की नदी बहाय दऊंगा ।
या तेगाकी धार मार सबको निबटाय दऊंगा ॥
दो०—समर मेरे सङ्ग रोपे ।काल आ छायो तोपै ॥
टुकर खोरा कुल बोरा ।
तनक देर जा ठहर ब्याह कैसो करबाऊँ तोरा ॥

आल्हा को

दो०—बल बखान डरपावते, कर २ नैना लाल ।
मानौं लाये हांक कर, हेतु हमारे काल ॥
चौ०—मानौं लाये काल तेग्र को बारबार दिखलावत।
भौंह मरोर २ जोर कर अधरन दशन चबावत ॥
बन्दर की सी दे घुड़की केहरि किशोर धमकावत ।
शूर बीर रणधीर बने क्यों नहीं, शमशेर चलावत ॥
दो०-तोह कोई तेग्रा धारी। मिलोना भट बलकारी॥

बनो घरही में बढ़िया ।
मालुम परै आज आल्हासे काम परो है गढ़िया ॥

कवि का

दो०—सुनत बचन पजरो बदन, ब्रजनन्दन बलवान।
खननन २ म्यानसे; काढी कठिन कृपान ॥

ला०—काढी है कठिन कृपान वीर ब्रजनंदन । मारी आल्हाके करि दुर्गाको बंदन।।महाराज ढालरोपी जस राजकुमार।प्रथम बार राघवकुमारको आल्हा दियो निवार दुस्सर ब्रजनंदन सांग घुमाकर मारो । त्रिशूल हूल पुनि शैलपेल दियो मारो । महाराज मारही मार मचाय दई। लगे न आल्हाके तनमें जगदम्ब सहाय भई।तबखाय गुस्सा आल्हा कर लियो दुधारो।भयखाय भगयोबीर।घव मच्छ दुलारो।। महाराज सैन सब भागी पींठ दिखाय चले महुबिया तँबु अनको जय का डङ्का बजवाय।जोगा भोगा दोऊ बंधे बँधाए लाकर । कर नजर दिये परमाल भूप को आकर। महाराज सुनो अब ब्रजनंदन का हाल।मात भगवती के मंदिर में जा पहुँचा ततकाल।भारी खुदवायो कुंड बिलम्ब न कीनो। सब सामग्री को मंगा हवन रच दीनो । महाराज डार घृत अग्नि देव चेताय ।आहुति देय मंत्र पढ़ २ मुख स्वाहा बोलतो जाय ॥ सैकडों भरे घट मदिरा के लुढकाये । भैंसा बकरा मेंढा बहु भेट चढ़ाए ।। महाराज भवानी प्रगट भई हरषाय । हाथजोर तब ब्रजनंदनने स्तुति करी बनाय।

ब्रजनन्दन का

दो०—नमो भद्रकाली शची, नमो मुण्ड माली ।
नमो कृपाली कराली, कङ्काली काली ।।

छंद भुजंगप्रयात—नमो सृष्टि कर्त्री नमामीश प्यारी ।
नमो पालनी सृष्टि संहारकारी।।नमो शंख चक्रं गदा
पद्मधारी । नमो दक्ष पुत्री चतुर्बाहुधारी । नमो संकटा
संकट कष्ट हारी । नमो शांभवी शक्ति सिंह सवारी
नमो शङ्करी चण्ड मुण्ड प्रहारी । नमो नारसिंही वयं
क्लेश टारी । नमो अम्ब स्वच्छन्द स्वेच्छा तारी ।।
चिरञ्जी नथाराम शर्ण तुम्हारी ।।

कवि का

दो०—स्तुति मख इत कर रह्यो, बृजनन्दन रणधीर ।
धूआं लखि उत यज्ञ का, कहै उदेचन्द बीर ।।

ऊदल का

दो०—प्राची दिश तालन चचा, देखो नजर उठाय ।
प्रलयकाल घनमाल सम; घटा उठी घहराय ।।

चौ०—घटाउठी घहराय घनी घुमड़ी घन घना बली है
चकाचौंध चख लगे चमाचम चमचमाय बिजली है ।।
घनाघट्ट कर घटाटोप आवे घनमाल चली है ।
बरसे तो करदेइ प्रलय ना बरसै भलाभली है ।।

दो०—प्रलय घन जबसे हेरो । धीरं मन धरेन मेरो ।
अगर ये जल बरसावे ।
हमें तुम्हें गज अस्प तुरत तम्बू दल सकल बहावे ।

ताला का

दो०—ना बादल ना बीजुरी देखो करके गोर ।

बँदुल चढ़वैया लला, ये चरित्र कुछ और ॥

चौ०–यहचरित्र कुछओर लड़ाओ बेटाज़राअक़लहै
धवल उदेचँद लाल बहुत इसमें बादल में बल है ॥
सूरत सकल चमचमाहट से मालुम परत असल है।
अचरज मुझे न गर्जे घोरे ये कैसा बादल है ॥
दौड़–खबर इसकी मँगवाओ। रुपनको जल्दपठाओ
मुझे तो यही जची है।
राघव नृप या बृजनन्दन कोई माया नई रची है ॥

कवि का

दो०–सुनकर तालन के बचन, रूपन लयो बुलाय।
तासे दिवला कुमरयों, कहन लगी समझाय।

ऊदल का रुपना से

दोहा–प्यारे अस्प बढ़ाय के, नैनागढ तक जाउ।
ये बादल या और कुछ जल्द देखकर आउ ॥

कवि का

दोहा–शासन दिवला कुमरका, शिरपर रूपन धार।
नैनागढ़ को चलदिया होकर अस्प सवार ॥

चौ०–होकर अस्प सवार चलोकर श्रीगणेशकोबन्दन।
बांधे ढाल कमर तेग़ा लगरहा भालपर चन्दन ॥
पहुँचो मंदिर अम्बा के जहां यज्ञ करे ब्रजनँदन ॥
आहुति देय अग्नि घृत डारे पढ़ि श्रुति स्मृतिछंदन।
दौड़–हाल ये नैन निहारी। लोट दीनों फिर बारी ॥
तनक ना बिलम लगायो।
चंद मिनट के अरसे में ढिंग उदेचंद के आयो ॥

हमाचारी का

दो०—श्रीजसराज कुमार मम, विनय सुनौं दे कान।
बिजय हेत मखकर रह्यौ, वृजनन्दन बलवान।

चौ०—ब्रजनन्दन बलवान भवनदुर्गाके हवन करें
ताको धूआं नभ छायो बादल सौ नजर परै है।
जब घृत आहुति देइ प्रबल बैसान्दुर देय बरै है।
ताही की झरको प्रकाश दामिन की छटा छरै है॥

दौड़—देखि वहां जोकुछ आयो।हाल सो आयबतायो
जरा नहिं इसमें बल है।
अग्नि देवकी दमक दामिनी धूआं को बादल है॥

ऊदन का ताला आल्हा इत्यादि से

दोहा—चाचाजी तालन मेरे, और आल्हा बलवान।
और जागन रण बांकुरा, धवल बीर मलखान

चौ०—धवल बीर मलखान सुनौ अबयही हमारीमंशा
करै विजय मख वृजनन्दन सब चलौ करैं विध्वंशा॥
आगे रावण यज्ञ ध्वंस करि हंस बंश अवतंशा।
बंश सहित दसमुंड खण्ड पाई जय अखिल प्रसंशा।

दो०—यज्ञ पूरण होजावे। तौ सबरो काम नसावे॥
बिजय ना मिलै सुखारी।
चलौ करैं बिध्वंश यज्ञ ये मानो कही हमारी॥

कवि का

दो०—उदेराज की कहन को; कीनी सबन प्रमान।
आल्हा ताला जगन्सी, धवल बीर मलखान।

चौ०—धवलबीर मलखान आदि सब लेरतेग्रकराली
मंदिर के जा निकट करैं छिप मखकी देखा भाली॥

ब्रजनंदन तप निरखि मगन काली नैनागढ़ वाली ॥
बरम्ब्रूहिबर देन उठी अति किलकिलाय के काली ॥

दौड़—जोरसे अट्टहासकर। दामिनी सम प्रकाश कर॥
ठढ़ी भई नैना मैया।
भय खा भगन लगो ब्रजनंदन रोको दिवला छैया॥

ऊदल का

दोहा—आयो रणसे भागयहां फैलायो पाखण्ड।
सोभी तज अघबर भगो, ताको भुगतोदण्ड।
चौ०—ताको भुगतो दंड खंड तप तेरो भयो भुसर के।
रे प्रचण्ड बरबण्ड मुंड पर मारूं तेग्र उछर के॥
जीवत दऊं न जान लऊँ धरपर से शीश कतर के।
माल ज्वाल में डाल पूर्ण आहुती दऊंगा कर के॥
दौड़—भाजकर जान न दूंगा। काट शिर तेरा लूंगा॥
गुसां तन आयरही है।
बचे न काहू विधि तोपै देवी रिसयाय गई है॥

ब्रजनन्द का

दो०—सुनकर ऊदल के बचन, उमगो क्रोध अपार।
अरुण बरण लोचन भये, खांड़ो लियो निकार
चौ—खांड़ो लियो निकारभाल जिन महाबलिनकोकूटो
धर सिर किये बिरक्त रक्त को मजा युद्ध में लूटो॥
सम्हर करूं क़तलाम रामतोपै गुलाम अब रूठो।
शिरपर दयो खटाक चटक चूरीके मानिंद टूटो॥
दौड़—इसीसे सुंड गजन के। मुंड खंडे छत्रिन के।
सोई मम तेग्रा टूटो।
मनमें लीनी जान आसरो अब जीवनको छूटो॥

ऊदल का ब्रजनन्दन का सिर काटना

दो०–यथा बिघ्नपर गज बदन, दशकन्धरपर राम।
सहस बाहु पर परशुधर, रति पति परअरिकाम ॥

चौ०रतिपतिपरअरिकामतडित जिमिदामिनपरतसुमन
पर।यौंमृगराज बितुंडनपरजिमि चीतो मृगझुंडनपर॥
तनपर अर्क शक्र गिरिपर हरिबाहन जिमिसर्पनपर।
बाज बिहङ्गन पर तैसे मैं टूटो ब्रजनन्दन पर ॥

दो०–तेज जिमितिमिर अंशपर कन्हैयायथाकँसपर।

दो०–दत्त प्रजापति हेतु जिमि, बीर भद्र बलवान।
अहिरावणके बधन हित,पवन पुत्र हनुमान॥

दो०–तिमि ब्रजनंदन हेतुमैं, बनो कालको काल ॥
भाल हाल खंडन कियो; दियो ज्वालमें डाल।

दो०-ज्वालमें भाल डारकेहँसा खिलखिला मारके।
बचन तालासे बोला।
अब चाचाजी चलो बजावें नैनागढ़पे गोला ॥

ताला का

दो०–बेटा होना अभेतो, होने आई शाम।
यासे अब तंबुअन चलो, कल्ज करें संग्राम ॥

कवि का

दो०–सुनकर तालाके बचन,आल्हा ऊदल आदि।
धाये तंबुअन को करत, आपस में सम्बाद ॥

चौ०–आपसमें संबाद करत गये प्रातयुद्ध करनेके।
इतमें राघव समाचार सुन पाए सुत मरने के ॥
अश्रुपात नृप नैनन से मानिंद गिरें झरने के॥
व्याकुल देवी भवन हवन में चलो काज जरने के ॥

दो०-पीटतो छाती अरु सरा गयो मंदिरके अंदर ॥
कुण्डकी करी प्रदच्छण ।
लगा हवन में कूदन दुर्गा प्रगट भई तब ततच्छण ॥

दुरगा का राघवमच्छ से

दो०-क्यों तू ज्ञान बिसारकर, बनै नृपति अज्ञान ।
वृथा कुंड कूदो परै, खोवै अपनी जान ॥
चौ०-खोवै अपनी जान पापके मोकूं डारै बंधन ।
मैंतो बर देकर कर देती अमर अखे व्रजनन्दन ॥
मैं क्या करूं यज्ञ ताजि करके भागो तेरो नन्दन ।
खंड करो निजतप मतिमन्दन तासे भयो निकंदन ॥
दो०-परिश्रम करो करायो तो सुतने सकलगमायो ।
भजो ताजि यज्ञ अधूरो ।
भई प्रसन्न महुबियनपर निज यज्ञ करादियो पूरो ॥

राघवमच्छ का दुरगासे

दो०-मनक्रम से सेवा तेरी, करी मैंने दिनरात ।
अरि पर भई प्रसन्नतू, मोइ तजदियो मात ॥
छं-मोकूं तजो अरिकी भई माता बता अबक्याकरूं ।
दऊं होम तन तेरे भवनया मारगल खञ्जर मरूं ॥
जेठो कुमर खायो तैंने लघु सुत दोऊ बंधुआ भए ।
मोकूं भरोसो हो तेरो सो तैं बचन ऐसे कहे ॥
होंगे न दुश्मन पराजय अब जान ये मैंने लई ।
अम्बा तुम्हारी शरणमें सब बिधि अपति मेरीभई ।
मेरो तो लाज जहाज अब मँझधार डूबो जात है ।
चाहे पार कर चाहे ख्वार कर बलजीतो तेरे हाथहै ॥

दुरगा को राघवमच्छ से

दोहा—दुश्मन होय न पराजय, आगम दऊं बताय ।
आएकीसी रखदऊं, नैनागढ़ नृपराय ॥

छं०—राखूंगी तेरी बात जारण महाबिपन से करूंगी।
हे अमर आल्हा उसे तजि सबको धरणि परखरूंगी।
भुज मुंड खंडन करूं रण संग्राम घोर मचाऊंगी ॥
एक बारतो राघव नृपति तेरी बिजय करवाऊंगी ॥
आगे लड़न को फेरतो रहियो भरोसे मत मेरे ।
अबतो मैं राघवमच्छ नृप सब कर दऊं कारज तेरे ॥
होतेही प्रात निपात कर बन्नाफलों का दल दरूं ।
कविइन्द्र नैनागढ़ नृपति तेरी कही पूरी करूं ॥

राघवमच्छ का

दोहा—जोतू बैरिन को कटक: देसब धरणि गिराय ।
तोमेरो श्री भगवती, सकल काज बनजाय ॥

झू०—कारज सकल बनजायगो मात मेरो फेर आय तब यज्ञ पूरण करूंगा । बेदी रचूंबिधि पूर्वक हवन करके कई शूरमन के चढ़ा शीश दूंगा। करूं तृप्त अम्बा तोकूं सब तरह से किसी बातकी कसर मैंना रखूंगा। कहैं इन्द्र ब्रजनंदन कासवन सेती अम्बा आज बदला चुकालूंगा ॥

कवि का

दोहा—ऐसे कहि भूपति गयो, भयो निशाको अन्त ।
प्रात होत श्रीभगवती; साजी सैन तुरन्त ॥

ला०—नैना देवी सेनासाजी अति भारी। चौंसठ जोगिन छप्पन कलुआ बलकारी ॥ महाराज सजे

बामन भैरों बिक्राल। भूत प्रेत शाकिनी डाकिनी सजे बीर बेताल ॥ सजगयौ तुरत लांगुरा बीर अगवानी। बिक्राल भेष धरचली मात रुद्रानी॥महाराज शीशपर धारो मुकुट बिशाल। बिहँस२पहरी बनाय गलमें मुंडन की माल ॥ कर खर्ग खर्प त्रिशूल चक्र को धारो।केहरिके गलमें घण्टा भारी डारो॥ महाराज पिये प्याले मदिराके हाल। लाल २लोचन बिशाल कर लियो रूप बिक्राल।ले कटक सङ्ग नैनागढ चाली चाली ॥ लफलफाइ जिह्वा किलकिलाइ कंकाली ॥ महाराज धराधर सहित धरा हाली॥दिशि कुञ्जर कलमले कमठ की पींठ कसक साली ॥

छंद–साली कमठके कसकजब चाली कराली कालिका भव भयकरन प्रतिपाल का पुनि घालिका श्रीज्वालिका कर अट्टहास बिशालका किल किलत लांगुर बालका गावें बजावें तालिका संग जोगिनी बिकरालका ॥

ला०–महाराज कटुक बामन तर्जे किलकार । घन समान गर्जना करै अम्बाको सिंहअपार ॥अनगिनत भूत प्रेतादिक नाना रूपा। नाना प्रकार के कौतुक करें अनूपा॥ महाराज कोई बलहीन कोई तैयार । मुंड हीन कोई२ काई के मुंड हजार ॥ कोई २ चिम चिमा नकटो बूचो जानो।अन्धो भैंड़ो कैंड़ो कोई ऐंचा तानों ॥महाराज किसी की नाशा बड़ी बिशाल। कोई गल फुल्ला घल्ला से कट्टा के बेटा गाल ॥ कोई मुख फट्टा है कोई हट्टा कट्टा । कोई मुख

कट्टा मुख ताको सिलपट्टा॥महाराज किसीके लम्बे २ दांत।कोई टिडमुंहा कोई पोपला रूप अनेकन भांति। कोई इकहत्ता और कोई इकटङ्गा।कोई अनेकभुज टंगा कोई पङ्गा॥महाराज करेहैं चरित अनेक प्रकार। कोई मटकावै सेन कोई मुख फारे जीभ निकार॥

छं०-यहभांत दल उतपात करतौ जातहै लम्बी डगन। भयमान तजि निज थान बनके जीव सब लागेभगन बहुभांति के पच्छी हजारन उड़के जा छाए गगन। ये सब चरित मलखान ने नभधरण का देखा दृगन॥

दा०-महाराज चकित भयौ बच्छराज को लाल। जानी आयौ समर करनको राघवमच्छ नृपाल॥ मन गयौ सनाको खाय न बिलम लगायौ। एकदम से अपने सब दलको सजवायौ॥ महाराज चलयौ महा क्रोध में छाय। आल्हा तालन जागन ब्रह्मा संग उदेचन्दराय॥ बढ आगे जा अपनों मोरचा लगायौ। तबतक दुर्गाको दल गर्जत वहां आयौ॥ महाराज भगवती कटक झुका किलकार। महुबे के महुबियन हजारन खाई धरण पछार॥ जो बड़े २ सामन्त शूररहे बढकोसो ठड़ेरहेरण अंदरतेग्र पकरके। महाराज कोप तब लांगुर ने कीना। तालासैयदकी छाती तिरशूल हूल दीना॥ मीया जो रण में गिरे तमारा खाके। ब्रह्मानंद पर लांगुर दौड़ा अर्राके॥ महाराज झुको जागनपर भैरों लाल। जागन ब्रह्मा दोऊ शूर धरणी पर डारे हाल॥

छं०-जो बीर अरु बेताल सों ऊदलपै दौरे आयके ।
दिवला का छैया भी समर में जुटा गुस्सा खाय के ॥
जो बीर मारैं चोट सो तन मांहि जाय समाय के ।
ऊदल चलावे चोट सो धरतीपै लगती जाय के ॥
खामनी-महाराज दो घड़ी कीनो युद्ध कराल ।
आखिर गिरो मूर्छा खाकर धरण उदेचंदलाल ॥
नैनागढ़ वाली मलखे ऊपर धाई । बछराज कुमर ने भी तलवार उठाई ॥ महाराज भगवती दिया त्रिशूल चलाय । कनका छैयाके सीने अगुल भरगयो समाय। दुस्सर मलखे पर अम्बा खर्ग चलायो। कनका कुमार घोड़ा आकाश उड़ायो ॥ महाराज बाज टूटो केहरि पर धाय । दई सिरोई तान ज्वान मलखान बीर ने आइ ॥ दो घंटा तक भगवती संग रण साजो । घायल होकर हय मनसुख रणसे भाजो ॥ महाराज तुरत तब कूद परो मलखान । दोऊ हाथ से तेग़ चलावे ठड़ो समरम ज्वान॥ भगवती चलावे चोट मार हुंकारो । मलखान बीर ना टरै समर से टारो ॥महा-राज लड़ो काली से युद्ध कराल । सब तन घायल भया मल्हारो हैगयो लाल गुलाल ॥
छं०-फिर गर्जकर एक सिंहने तब थाप दीनी मारहै।
मलखान रोपी ढाल पुनि मारी तमकि तलवार है ॥
तब चक्र मारो भगवती कर क्रोध अपरम्पार है ।
कनका कुमर मूर्छित भयो दल मची हाहाकार है ॥
दा०-महाराज कोपकर आल्हा बलधारी । गहि पद धरण पछार सिंह मुख बानी उच्चारी ॥

आल्हा का भगवती से

दोहा–तेरो ही दीनों भयो, मोइ अमर बरदान ।
जो माता तोसे लडूं; होय तेरो अपमान ॥

छं०–होय तेरो अपमान ये जान मनमें दे बर मोइ कीनों जनम ख्वार मेरो । सकल कुटुम गारत करो मात तैंने कारो खूब मुख करो संसार मेरो ॥ मलखें और ऊदल दोऊ भुज मेरे काट अब निज हाथ से शीश उतार मेरो । कहें इन्द्र क्या मुख लेके जाऊं महुवे जगमें जीवनों मात धिक्कार मेरो ॥

देवी का

दोहा–बाचा में मोकूं लई, नैनागढ़ नृपराय ।
यासे महुवे को कटक, दीनों धरण गिराय ॥

छं०–दीनों धरण गिराय दल सकल यासे किसीबात से मती मन डरे आल्हा । मरो नाहिं कोईसबी मूरछा गत क्यों बेबात हिलकी को तु भरे आल्हा ॥ मैं प्रसन्न अति तोपे सब तरहसे हूं धरि मन धीर अब सङ्कट ना परे आल्हा । अब रण नहीं आऊं अपने भवन जाऊँ कहें इन्द्रमन सोच कुछ मत करे आल्हा ॥

आल्हा का

दोहा–गवन भवनको तू करे, कुटुम सकल वे हाल ।
रक्तरङ्ग में कर चली, सबको लाल गुलाल ॥

छं०–सबको लाल गुलाल करदयो माता कैसे धरूं धीरज फाटीजाय छाती । भयो हाल बेहाल सबकटक सोवे नैनन नीर बरसे हिलकी भरी आती ॥ मलखेऔर ऊदल ब्रह्मा जगन ताल्हन कबकी बनी तु आय कर

प्राणघाती । तोरी भुजा मोरी जैसे अम्ब तैसे खञ्जर मार शिर काट क्यों नहीं जाती ॥

देवी का

दोहा—तीन घडी में सब कटक, उठै तुम्हारो तात ।
जान हानि ना होइ इन, क्यों घबरायो जात ॥

झू०—क्यों घबड़ात सबको गात होय चंगौ कोई घड़ी बीत सुना कहू तोकूँ । कीरतिबढ़े संसारमें तेरी छौना सदां समरमें दाहिनी रहूँ तोकूं॥जहां आन तोपै परे कठिन सङ्कट वहीं आइ उबार मैं लऊँ तोकूँ । कहैं इन्द्र बामनहूं कोट जीते हारे नहीं बरदान ये दऊँ तोकूँ ।

कबि का

दोहा—नैना देवी रही इत; आल्हा को समझाय ।
तभी बीर मलखान की, जगी मूरछा आय ॥

मलखान का गुर्सा होकर

दो०—तनक होश तनमें भयो; देखो नैन पसार ।
शुभग शिरोमणि भ्रातके, देवी खड़ी अगार॥

चौ०—देवी खडी अगार निरखि केहरकरालसो चालो।
लफलफाय फन तेग्र बेग पोनियां ब्यालसो चालो॥
कडकड़ाय अति तड़तड़ाय कर मेघ मालसो चालो ।
लाल २ लोचन बिशाल कर महा कालसो चालो॥

छं० भुजँगी—कहां आइ तेने यहां जँग जोरी । शिवा शंकराणी गिरेन्द्र किशोरी ॥ करूँ रार तोसे बहोरी२ थके बाहु ना तेग्र टूटी न मोरी ॥

दो०—अब बिलम्ब मतना करे, चक्र त्रिशूल सम्हार।
मलखे आयो लड़नको, हो भगवती तयार ॥

चौ–होभगवती तयार लड़न आयो बछराज दुलारो
लागत चक्र मूर्छा गत में भयो न भुजबल हारो ॥
टूटो मेरो दुधारो ना मैं क़दम समर से टारो ।
सम्हर समर को श्रीअम्बे रण होगो मेरो तुम्हारो॥
दो०–हटोना मैं रण तजके । गयो ना मलखे भजके।
तेरा सन्मुख पकडूंगा ।
धजी २ तन होजावैगा तो भी समर लडूंगा ॥

देवी का मलखान से

दो०–सिंह कनकदे ने जनो; ता सम शूर न अन्य ।
कुल भयङ्क बछराजके, धन्य २ तोइ धन्य ॥
छं–हैधन्यतोय धनि धनि सुभट अनन्यबल सम्पंनतू
धनि २ दऊँ वा कोखको जामें भयो उत्पन्न तू ॥
निज कुल उजाला बीर आला जङ्ग तैं मोसे लई ।
बछराज लाला बिशाला मैं दयाला तोपर भई ॥
बछराज बिक्रमी पराक्रमी बिक्रम पराक्रम खानतू ।
बरमांग ले बर मांगले बरमांगले मलखान तू ॥

मलखान का देवी की स्तुतिकरना

दो०–जो तू मात दयाल है, कहूँ युगल करजोर ।
साष्टांग दराडवत तब, करूं बहोर बहोर ॥
छं०भुजंग प्रयात–नमो काल काली नमस्ते २ ।
नमो मुंडमाली नमस्ते २ ॥ नमो भद्र काली नमस्ते
नमस्ते ॥ नमो सृष्टि पाली नमस्ते २ ॥ नमोशङ्करी
हं नमस्ते २ ॥ नमो जे करी ऽहं नमस्ते २ ॥ नमो
ईश्वरहिं नमस्ते २ ॥ नमो अम्बाश्री ऽहं नमस्ते२ ॥
नमो शूल पानी नमस्ते२। नमो बिश्वजानी

नमस्ते २।नमो रुद्ररानी नमस्ते२। नमो वाक्यवानीं नमस्ते २॥

छं०हरिगीतिका-श्रीजगतमाता खल निपाता ऋद्धि दाता अम्बिका।रजचरणबालिजाता चढ़ातशीशमाता अम्बिका॥ हरवाहिनी दुख दाहिनी जो दाहिनी तू होरही। मम अष्ट घाता अङ्ग हो बर देउ बरदाता यही॥ तेरा अखे कर रण विषे झेले न कोई चोट है॥ मद मर्दि राजन के दऊँ करगर्द बामन कोटहै बरदे अमर करदे मुझे मारो किसीको ना मरूं। कर जोरकर निहोर बारम्बार चरणममें परूं॥

देवी का मलखान को वर देना

दो०-अमर होतमें कसरइक,तनक भई मलखान।
बिनय करी तैने मेरी, पहरें पादत्रान॥

छं०-तें पहर पादत्रान मम विनती करी कीनीकसर। नहिं तो तुझे बछराज सुत मैं आज कर देती अमर अबतो कुमर इतनो ही बर सब बज्र तन तेरोभयो। दीनों विजय बर तोइकर अक्षय तेरो खांडो दयो॥ तलवार तेरी की किसीपै ना झिलेगी चोट है। भागै नहीं रणसे कभी जीतैगो बामन कोट है॥ तरबा तेरो कच्चो रह्यो एक पाप पादत्रान से। जग नाम करके मरे तू सम्राट के नृप बान से॥ तुम दाहिने पद पद्म सुत ताही में तेरो काल है। फाटे पदम जबतक नहीं तबतक अमर तू लाल है॥

कोपका

दोहा–दे बर मंदिर को गई, श्री जगदम्बा मात ।
मूर्छा से इतमें कटक; उठो सकल हरषाय ॥

चौ०–उठो सकल हरषायकटक इतनेमेंछिपोदिवाकर ।
महुबे वारे दल समेत तँबुअनमें पहुँचे आकर ॥
अबसर पाय भूप माहिल लिल्ली घोड़ी सजबाकर ।
महा उपद्रव की जड़ पहुँचे नेनागढ़ में जाकर ॥

दौड़–भूपकी जहां कचहरी । तहांगयोमाहिल जहरी
मधुर बोला बिष घोला ।
मयाराम ने नेनागढ़ में कपट पिटारा खोला ॥

माहिल का राघवमच्छ से

दोहा–डूबत दीखे आपके, पुरखन तक का नाम ।
ब्याहेंगे मछुलावती, टुकड़ेखोर गुलाम ॥

चौ०–ब्याहें सुता गुलाम काम उनके मारिजौहरके ।
किसी तरह से जीत न सक्के तुम उनसे लड़ करके॥
देबी से भी लड़े खूब ना भगे रहतबा डरके ।
अब मोइ मालुम परी बनें कुल पूज्य आपके घरके॥

दौड़–अगर कुछ ख्याल आपको।बताऊं चालआपको
सीख मेरी चित दीजे ।
भूपति चतुर सुजानमदद कुछ दिल्लीपति की लीजे॥

कवि का

सो०–कीयो सोच अघाय, सुनकर माहिल के बचन।
अमरढोल पुनि याद, आयो तब राघव कहे ॥

राघवमच्छ का माहिल से

दोहा–द्वापर हमें बनावने, खूब सिखायो ज्ञान ।

महुबे बारेन की तरफ़, मिलो आय चौहान ॥
चौ०–मिलो आय चौहान हानि तोभी सबकीकरछोड़ूं
अबतक रहा भरोसे औरनके अब निज रणजोड़ूं ॥
गाल भाल कपाल उदर सबके भाले न से फोड़ूं ॥
एक २ के बीन पकर कर सर भुट्टा से तोड़ूं ॥
दौड़–कभी नहिं हारनको रना।मनुज क्या जीतूं देवन
न मोसे काम परो है ।
अमर ढोल इन्द्रर को दीनों मेरे पास धरो है ॥

माहिल का राघवमच्छ से

दोहा–अमर ढोनो दीनों तुम्हें, देवनपति देवेन्द्र ।
क्या प्रताप तामें कहो, राघवमच्छ नरेन्द्र ॥
चौ०–राघवमच्छ नरेन्द्र वो कैसा ढोल करामातीहै ।
भूपति तुमने बात कही नहीं मेरी समझ आतीहै ॥
उन पाजिन से फ़तह पावनी मुशिकल दिखलातीहै ।
जो कोई बिधि मरजांइ कमीना शीतल होय छातीहै
दौड़–भूपवो ढोल तुम्हारो । करेगो कहा बिचारो ॥
वो आल्हा नृपति अमर है ।
जीते जांइ न टुकड़खोर उनको देवी का बर है ॥

राघवमच्छ का ढोल के गुण गाना

दोहा–प्रथम बजे जब ढोल ये, बैरी कायर होय ।
बजे दूसरी बार जब, बुद्धि जाय सब खोय ॥
चौ०–बुधिबल अरिको नाशहोय हो हमकोजोरजबरहै
बजत तीसरी दफ़े शत्रु गिरजाय खाय चक्कर है ॥
अमरढोल को बजा नर कहा करूं देवतन सर है ।
चाहे जैसे बरदानी हों भागें त्याग समर है ॥

दो०—एक बस यही कसरहै।न इसकी रहै खबर है।
इन्द्र ये दीना बर है।
आवै याद ढोलकी जब कोई संकट परै जबर है॥
माहिल का
दो०—अमरढोल ऐसो नृपति, तो फिर क्यों घबरात
पातर कर प्रात चलः सबको करो निपात॥
चौ०—सबकोकरोनिपात प्रातही सैन सकल सजवाओ।
मार पछार रहतवन को जोगा भोगा छुटबाओ॥
राचो युद्ध कराल भाल भुजदण्ड मेह बरसाओ।
सबरो झगड़ो मिटै केर कर जा आल्हाको खाओ॥
दौड़—हाल वाको यह कीजे। तोप धर उड़बा दीजे॥
काम सब बन जावैगो।
दूल्हा मारो जाय कौन मछुला ब्याहन आवैगो॥
कवि का
दो०—कहि इतनी माहिल चलो, दलमें पहुँचो आय।
प्रात होत राघव नृपति लई सैन सजवाय॥
छंद—साजाकटीला कटकसबराघवनृपति बिक्रालका।
मानिंद घन के गर्जनी साजी हैं तोप बिशाल का॥
बिजली तड़क्कनसज सर्जी कौंधालपक्कन ज्वालिका
गिरि फोरनी गढ़ तोरनी नकटी भयंकर कालिका॥
इक दन्त और दुइदन्त मकुना मेरुसे गजराज सज।
कुम्मेत मुश्की सब्ज गर्रा गए नुकरह बाज सज।
सारे शुतर गज अस्प अति दिल चस्प सजकरत्यारहैं
तिनपर लड़ाके शूर बांके भट बिकट असवार हैं॥
राघवनृपति तन साजि बख्तर फ़ील ऊपर चढ़बको

ले अमरढोल बिशाल दे डङ्का समरको बढ़ चलो।
दो०—संग ले लश्कर भारो। पहुँचो नैनागढ़ बारो॥
करी रण गर्जन घनसी।
बाईसौ बेटन समेत इत पकरी तेग तलनसी॥

तालो का अपने बेटों से

दो०—चलो जङ्गको मत करो, अली शेरखां देर।
भूरेखां शमशेरखां, लेउ हाथ शमशेर॥
चौ०—लेउ हाथ शमशेर सजो मीरखां अजी मुल्लेखां
दुल्लेखां बादुल्लेखां तुल्लेखां फैजुल्लेखां॥
बुंदेखां दुंदेखां शमशुद्दीन रहमतुल्लेखां।
सरफुद्दीं फ़य्याज़ अलाउद्दीन हबीबुल्लेखां॥
दो०—अलामतखांबज़ीरखां मीरखां जहांगीरखां॥
मुहम्मद तेग सम्हालो।
दुश्मन के लश्कर के अन्दर कर बिसमिल्ला चालो॥

कवि का

दो०—सहित कुटम सैयद तजन, हल्लाकीनों धाय।
बनरस बारो कहै यों, राघव सन्मुख जाय॥

तालो का

दो०—महरबानमन बन्दगी, नैनागढ़ के शाह।
दुरुतर अपनी का करो, आल्हा साथ निकाह।
चौ—आल्हासाथ निकाह शाहकरदो अपनीदुरुतरका
दो निकाल गुस्सां गुबार सारा दिलके अन्दर का॥
अगर न शादी करो रज़ा से चखो मजा खञ्जर का
देख अलम शमशेर यही क़तलाम करेगी सर का॥

दोड़—चहै तुम झगड़ा ठानों। चहै राजी से मानों।
बात सच २ बतलादी।
मछुला की आल्हा के सँग तुमको करनी हो शादी।

राघव का ताला से

दोहा—क्या इस दल के आपही, हो मींयां सरदार।
आए सुतनी हलावत, ले करमें तलवार ॥
चौ०—ले करमें तलवार मियांजी बारम्बार उछारो।
हिला २ कर डाढ़ी क्यों गर्दन को तोरें डारो ॥
अगर खैरियत चाहो तो रण से करजाउ किनारो।
इलिलला अकबर अल्ला मसाजिद में जाय पुकारो॥
दोड़—इबादत रबकी कीजे। हाथ तसबी ले लीजे ॥
मेरा दिल हँस जाता है।
देख जईफी मियां आपकी तरस मुझे आता है ॥

तालासैयद का

दोहा—दस्त अलम शमशेर है, सोई तशबी जान।
मार २ रन में करूं, येही पढ़ूं कुरान ॥
चौ०—येही पढ़ूं कुरांन पंज हथियार कमरपरधरना।
ज्वानों का कतलाम करूं है सोई सिजदा करना ॥
अल्ला अकबर करना है शाहों के शीश कतरना।
यही यबादत करूं आज अब रक्खुं जरा कसरना ॥
दोड़—खतम कर तेरे दमको। रवा ह करूं अदम को
पड़ा है मुझसे पाला।
निका कराऊं आल्हा का तो बनरस बाला ताला ॥

राघव का सूर्ते सं

दोहा—सकल मुसल्लनपर सुभट, हल्ला करोप्रचण्ड।

डाढी इनकी पकरके, करो मुंड भुज खंड ॥

चौ०—करोमुंड भुज खंड रुंड धरनी पर देउ गिराके ।
करना अल्ला खुदा नबी बिसमिल्ला देउ भुलाके ॥
मार पछार सबन को लो जोगा भोगा छुड़वाके ।
नैनागढ पर चढ़नेका दो इनको मजा चखाके ॥
दो०—करे सबको शिरहीने । बहुत बढ़रहे कमीने ॥
म्यान जब तेग्रा धारो ।
आल्हा ऊदल मलखे ब्रह्मा जागन सहित संहारो ॥

कवि का

दो०—सुनकर भूपतिके बचन, सुभटन पकरी तेग्र ।
इतमें तालाको कटक, जुटो तेग्रले बेग ॥

छं०—दोउ दल समरमें जुटगये रहे मारमारपुकारहे ।
कोई मारता कोई भागता कोई धरत पैर अगारहे ॥
कोई किसी के शीशपर देता उछल तलवार हे ।
तेग्रा करें छेला छटे कायर रहे चिक्कार हे ॥
डटडट लड़ें राघव के भट कट कट करें रणमारहे।
तालन को दलहो बिकल भागो छोड़कर हथियारहे।

आल्हा—भजत कटक तालाको देखोतब आलाऊदल मलखान। ब्रह्मा जागन नवले ढेबा एकदम झुके सिरोही तान।पूरब बृह्मा पश्चिम जागन उत्तरगयो उदेचन्द ज्वान । अगल बगलमें नवले ढेबा दक्षिण गयो बीर मलखान ॥ बीच गोल में आला पहुंचो वो दिवलाको राजकुंवार । ताकी श्री भगवती मातने रणमें करी अखे तलवार । जब चहुंदिश से झुके महुबिया रणमें मारहि मार पुकार ।मार मार छोना

छत्रिन के सन पोना से दीने डार। दल प्रश्वारतो आल्हा छत्री राघव नृप पर पहुँचो जाय ॥ तान सिरोही दई आल्हा ने होदा ओट भूप हैजाय। छाती फटगई हंडा कटगये अतिमन भूपगयो घबराय। शीश नवाकर के सुरपति को अमरढोल को दयो बजाय ॥ अमरढोल जिसदमपरबाजो जिसके कानपरीआवाज। सोई शूरमा कायर होकर समर भूमिसे दीनों भाज ॥ ताला ऊदल ब्रह्मा जागन नवले ढेवा अरु मलखान। सबदल भाजो बनाफलोंका भाजो मराडलीक बलवान दोरों ज्वान सङ्गले भूपति आल्हा तुरत लियो घिरवाय। बजा दयो पुनि अमरढोल को आल्हाचका भकाहो जाय। तिस्सर अमरढोल के बाजत आल्हा गिरो मूर्छा खाय। तादम राघवमच्छ नृपतिने हनि२ लीनी मुश्क चढ़ाय ॥ ढोल बजाय भगाय कटकनृप भोगा जोगा को छुड़वाय। बिजय नगाड़ो बजा समरको पहुँचे नैनागढ़ में जाय ॥ हाथ हथकड़ी पैरन बेड़ी गल आल्हा के तोख गिराय। खम्भकचहरी से बँधवायो हरियल बांस लिये मं.वाय ॥ दो जवान ठाड़े करदीने मारें बांस धड़ाक २। हाय २ आल्हा चिल्लावे आंसूं गिरें भड़ाक २ ॥

दोड़—भूप ये गति करवावे। बिकल आल्हा डकरावे॥
परो तन सङ्कट भारी।
कर करुणा राघव से बोला मराडलीक ब्रह्मचारी ॥

आल्हा का राघव से

दोहा—कठिन करारी बांसकी, लगबाओ तनमार ।
मत अधरम कर अधरमी; नेंकतौ धर्म बिचार॥
कं०—धर्मज्ञ होकर धर्मके बिपरीति मत राजा करो ।
अनरथ पै मत बांधो कमर भगवान के डरसे डरो॥
जगदीश है या आप हैं मेरो न कोई है यहां ।
पिटबामना बंधुआ को नृप ये नीति में हैगा कहां ॥
तुम्हरे भी सुत बंधुआ भये उँगली छुवाई तक नहीं।
मेरी कराई ये दशा तुमको दया आई नहीं ॥
मलखान ऊदल जियतहैं तिनिहीपे प्रभु छत्तर धरे ।
कहैं इन्द्र नृप सोचो हृदय जाने बिधाता क्या करै ॥

राघव का

दोहा—देखूं कैसे बलीहैं, ऊदल और मलखान ।
तबतक इसको डालदो; भकसीके दरम्यान ।

कवि का

दोहा—पकर भटन आल्हा तुरत, भकसी दीनों डाल॥
लखो सखी निजजा कह्यो, मछुलाबति से हाल

सहेली का मछला से

दोहा—सुघड सहेली नवेली; मछलाबति, सुकुमार ।
महुबे बारे न की सखी, अबदे आस बिसार ॥
कू०—अबदे आस बिसार चितधार मेरी होनी अपर
बल किसी की नहीं कसूरी । एकबार मुश्किल बचो
मीन पैसे परती जात है बिपतिपर बिपति पूरी ॥
धांधू कठिन जीतो सो भयो क़ैद भैना. मछुला

लिखालाई ओछो कर्म जूरी। कहैं इन्द्र आलीआरहा।
सँग मेरे जानेतो नहीं बिधि वरी जूरी ॥
दादरा—राचवमच्छ कुमारिरी, अलबेली सखी सुन।
तेरे ऊपर बहन मछलदे रूठगयो करताररी ॥अल०
करके क़ैद सखी तेरे बरको लायौ पितातुम्हाररी।अल।
बांसनसों पिटवाय बिचारो दयौ भाकसी डाररी।अल।
इन्द्रकहैं तोय मिलत नदीखे मंडलीक भरताररी।अल

मछला का बचो स

दो०—क्या तैने आली कही, मो दुखिया से आय।
हाय सखी पति प्रानकी, सूरत दे दिखलाय ॥
छं०—दरशन बिनाउस चन्द्रके बेकल चकोरी होरही।
जलहीन मीन मलीन जिमिसो दशा मेरी होरही ॥
देके जनम जगमें जनमविधि ख्वारसबबिधि से किया
परियोपितापर गज़ब गोला जिनपियाको दुखदिया।
दिखलायदे मिलवायदे बलि जाउँ मैं भैना तेरी।
या बिपति में दे सङ्ग हा हा खाउँ मैं भैना तेरी ॥
टेरमारबाड़ी—श्रीपति गिरधारी मछुला सुकुमारीकी
सुधि लीजियो। दोहा—जैसे द्रोपति की रखीद्वापरमें
पति आय। तैसे मो पति राखियो जगपति जादोराय
सहाई कीजियो॥ श्रीपति० ।दोहा—जलडूबतगजराज
को जैसे लियो उबार। तैसे मोइ उबारियो करुणा।
निधि करतार।बेठ मत रीजियो ॥ श्रीपति० ॥

सहेली का मछला से

दोहा—उत्तर दिशि में भाकसी, तामें तो भरतार ।
कैसे लाऊं दिखाकर, बैठे पहरेदार ॥

छं०—तहां पहरुआ आली मेरी शमशेर लेकर हैंखड़े
जाने न पावे कोई बंदोबस्त हो रहे हैं बड़े ॥
तज आसरो बरवह सखी अत्र तोइ पावैगो नहीं ।
डूबेगो लाज जहाज़ को कुछ हाथ आवैगो नहीं ॥
आंसू न डारो सुन्दरी अब मोहके बस मत परो ।
जो लिखी थी सो होगई ऐ बहन मन धीरज धरो॥
तुमसखी हिलकी भरतिहो गिर २ धरण परपरातिहो।
धीरज न मनमें धरतिहो हा ये ग़ज़ब क्याकरतिहो॥

मछला का सखी से

दोहा—बिरह बिथा ब्यापी बदन, बेकल तड़फै जान।
प्राणनाथ के दरश बिन, बचै न मेरे प्राण ॥

छंद—नहिं प्राण राखुंगी सखी गलमें कटारचलाऊंगी
निश्चय ज़हरको खाऊँगी जो बर नहीं ये पाऊंगी ॥
याही पती के सङ्ग में आली मैं जान गमाऊंगी ।
दूजे को मुख देखूं नहीं अपनो न उसे दिखाऊंगी ॥
बस मोहके में फँसी में अनुचित उचित जानूं नहीं ।
लज्जा शरम कुलकी तजूं देखे बिगर मानूं नहीं ॥
जो पहरुआ रणधीर हैं धरदऊं सबों पर बीर है ।
वह वहींपर नहिं यहींपर मैं त्याग दऊं शरीर है ॥
राग रामकली—दिखला सुवन बलम कहां पाऊं मैं ।

दीनोंबर मेरो प्रभु छीनोंफटजाय धरनतो तुरत समाऊँ में। दिवला०॥ वय किशोर चितचोर दरश बिन या मन को कैसे समझाऊँमैं॥ दिवला०॥ लेचल मोइ तनक ऊभे तक हाथ जोर हाहा तेरी खाऊँ मैं॥ दिवला०॥ मंडलीक पति बिना इन्द्रमन खाय ज़हर नहिं अब मरजाऊं मैं। दिवला०

सखी का

दोहा—सुनकर तेरे रुदनको, हिलकी भरे हमारि।
चल भकसी पर ले चलूं, राघवमच्छ कुमारि।

छं०—राघवकुमारी दुलारी प्यारी मेरी रोवै मती।
घर धीर मन दलगीर हो जीजान को खोवै मती॥
चल भाकसी तोसङ्ग चलूँ ब्याकुल बिकल होवै मती।
जल धार नैनन डार मोती हार से पोवै मती॥
जोकुछ पिता तुम्हरे हमें दुख देइगे सो सहूंगी।
चाहें प्राण निज तज दऊंगी ना पीठ तुमको दऊँगी॥

कवि का

दोहा—सखी सँग मछुला चली. रोवत आंसू डार॥
चितवत चकित सभीत अति, चहुँदिश आंखें फार॥
चौ०—आंखें फारत राम पुकारत आरति बोलतबानी
निकट भाकसी के पहुँची सुन्दर मछलावति रानी॥
छोड़ी भैरवकी पुरिया बीरन पर अवसर जानी।
भये पहरुआ मूर्छागत तनमनकी सुरति भुलानी॥
दोह—धूर गिर धरण परे जबाबढी आगे मछलातब
शिला भकसी की खोली।

राघवमच्छ नृपाल सुता तब बचन बिलख कर बोली

मछला का

दो०—अति अधीन आरति खड़ी, दासी रही पुकार।
प्रियतम प्यारे प्राणपति, बोलो प्राण अधार ॥

ला०व०लँ०—दासी रोबे खड़ी भाकसी गढ़ महुबे बासी बोलो। प्रेम प्रकाशी पियारे प्राण सुक्ख राशी बोलो॥ मीन मरैया सिंधु कुदैया ऊदलके भैया बोलो। मोरे सैंया गले जैमाला पहरैया बोलो। कँडलीकपति प्राणनाथ धांधू के जितबैया बोलो। मोरी नैया खिवैया दिवला के छैया बोलो ॥

शेर—प्यारे मेरे बोलो ज़रा अब कैसे पाओगे हमें।
सूरत सुघड़ मन मोहनी कैसे दिखाओगे हमें ॥
तुमतो परे अब भाकसी कैसे बिवाहोगे हमें।
निज चरण बन्द पलोटनी कैसे बनाओगे हमें ॥

ला०—मीन पिलासी सी तड़फै दरशनकी अभिलाषी बोलो ॥ प्रेम०

आल्हा का मछला से

ला०व०लँ०—कोकलबैनी मृगनैनी खञ्जननैनी सुंदर सुकुमारि। क्यों दुखपाओ महल जाओ प्रिय राघवः मच्छ कुमारि॥ कर्म लिखी ना मिटे प्रिया क्यों नाहक जान गमातीहो। होकर बेकल धरणपर पलट पछारें खातीहो ॥ कहि २ बैन बियोग भरे क्यों रोती मुझे रुलातीहो। घबरातीहो बिलबिलातीहो नीरबहातीहो

शेर—मन धीर धारो शशिमुखी जो कुछ था

होना होगया । दिनरात भर २ हिलकियां भकसी में
रोना होगया ।।भूखेपियासेतड़फेतदुशवारसोनाहोगया।।
प्यारी तुम्हारे सङ्ग में सब ब्याह गौना होगया ।।
ला०—मरनेकेसामान होरहे सुरपुर चलनेकोतैयार।क्यों

मछला का आल्हा से

ला०—प्राणनाथ तुम बिन अनाथहो रो २ कर मर
जाऊंगी।तुम्हें छोड़कर अब कहां दूजे कंथ बनाऊंगी।।
प्राणघात मैं करूं उमरभर कहांतक दुक्ख उठाऊंगी ।
घबड़ाऊंगी तड़फड़ाऊंगी जान गमाऊंगी।।
शेर—देखे बिना पति आपको मनको सबरहोनानहीं।
जो प्राण तज दूंगी पिया दुख उमर भर होना नहीं।
मनक्रम बचन मम आप पति दूजा तो बर होनानहीं।
यदि प्राण रहे तो मेरे कहने का होना नहीं ।।
ला०—कटें फन्द गोबिंद नंद नँदन जै अबिनाशी।
बोलो ।। प्रेम प्रकाशी पियारे ।।

आल्हा का मछला से

ला०—राजदुलारी तन सुकुमारी हाय २ मत करो
प्रिया । देख मेरो दुख आपने नैन नीर मत भरोप्रिया
क्वारी कन्या बर सहस्र ये समझ धीरमन धरोप्रिया।
पिता तुम्हारे बैरें तुमको ता बरको बरो प्रिया ।।
शेर—मेरा तेरा संयोग ना क्यों होय दिल दलगीरहै।
दुख सुख परेसब भोगना जो लिखा बिधि तक़दीरहै।।
धर धीर क्यों दृग नीर तज प्यारी भिगोवे चीरहै ।
होगी वही पङ्कजमुखी जो कुछ रची रघुबीर है ।।

ला०—राम मिलावैं मिलूँ फेर प्रिय अबतो दीजे आश बिसार ॥ क्यों०

मछला का

दो०—सुन सुन तुम्हरे बचनको, ब्याकुल होय शरीर।
धीर छुटत उमगत हियो; नैनन बरसत नीर॥

सो०—नैनन मेरे रही बरसके जलधार अब मेरेपिया।
मन आवती ऐसी मरूं तन फार अब मेरे पिया॥
कीनों गज़ब ऊमै मैं दीने डार अब मेरे पिया।
गेरे पिता पर बीजुरी करतार अब मेरे पिया॥
दुख देख छाती फटत बारम्बार अब मेरे पिया।
का दिन या दुखसे करें प्रभु उद्धार अब मेरे पिया॥
भोजन करों भकसी में फांसू धार अब मेरे पिया।
या गहों रेशम डोर लऊँ निकार अब मेरे पिया॥
फीके किये भगवान ने श्रृंगार अब मेरे पिया।
कवि इन्द्र बिन जग जीवनों धिक्कार अब मेरेपिया

आला का

दो०—क्यों रोओ छाती धुनों, धीर धरो मन मांहिं।
हाय हाय के करे से. अब कुछ होना नाहिं॥

सो०—होना नकुछ धीरज हृदयमें धारअबमेरी प्रिया
इस विधि लिखाथा काल मम करतार अब मेरीप्रिया
निकसूं न मैं क्योंकर कहो हरबार अब मेरी प्रिया।
ऊदल निकाले तो निकलना सार अब मेरी प्रिया॥
निकसूं तुम्हार हाथ धर्म बिसार अब मेरी प्रिया।
डूबे सकल कुल कान रण तलवार अब मेरी प्रिया॥
जग उठगया अनजळ क्यों फांसे थार अब मेरीप्रिया

अहसान कर दीजे कटारा डार अब मेरी प्रिया ॥
कहैं इन्द्र मरजाऊँ कटारी मार अब मेरी प्रिया ।
बहतरहै मरना जीवना धिक्कार अब मेरी प्रिया ॥

मछला का भगवानसे करुणाकरना

दो०—पड़ी आय पति मेरपै, बिपति बड़ी गंभीर ।
होत अपति कमलाबती, श्रीपति श्रीरघुबीर ॥

छं०—रघुनाथमोय सनाथकरियो श्रवण धरियोबीनती
सङ्कट हरो सङ्कट हरो सङ्कट हरो फेरा रती ॥
तुमहीं बिधाता बिष्णु तुमहीं तुम्हीं हो शङ्करजती ।
रच्छाकरो रच्छा करो रच्छा करो भूलो मती ॥
आरत पुकारत नीर डारत गायसी मछलाबती ।
पति राखियो पतिराखियो पति राखियो दीननपती ॥

आल्हा को

दो०—करि २ करुणा शीशधुनि, खाओ मती पछार ।
धरि धीरज जाओ महल, राघवमच्छ कुमारि ॥

इति श्रीतृतीय माञ्जिल समाप्त

चतुर्थ माञ्जिल प्रारम्भ

कबि का

दो०—इत मछला महलन गई, सीरे लेत उसास ।
उतै प्रात माहिल गए, प्रथीराजके पास ॥

प्रथीराज का माहिलसे

दो०—दीनी ना कोई खबर, उरही के भूपाल ।
अब कुछ हमें सुनाइये: नैनागढ का हाल ॥

माहिल का प्रथीराजसे

दो०—दिल्लीपति सम्राट नृप, प्रथीराज महाराज ।

अब गुलमनके शीशपर. चौगिरही रहीगाज ॥

चौ–चौगिरहीरही गाज काज बिनश्रम बनगयोतुम्हारो
राघवनृपकर क़ैद लयो आल्हा जसराज दुलारो ॥
ताला, ब्रह्मा, ऊदल, मलखे कायर होगये चारो ।
हारे टुकड़े खोर जीत गयो नृप नैनागढ बारो ॥

दो०–करी घांघू सँग जैसी । अगारी आई तैसी ॥
देखो क्या अक़्ल चलाऊं ।
आज कल्लमें घांघूका मछला सँग व्याह कराऊं ॥

कवि का

दो०–आपसमें बतरात इत, प्रथीराज परिहार ।
ऊदलसे बोले इते. तालन गिरा सम्हार ॥

ताला का

दो०–सुभट शूर रण बांकुरे, जस्सराजके तात ।
तिनको कल कैसे परे; जिनके बँधुआ भ्रात ॥

चौ०–जिनके बँधुआ भ्रात तिन्हें कैसे आरामसुहावै।
मूँछ रहो मरोर बेशरम शर्म न तोकूं आवे ॥
मौज उड़ावे यहां आप आल्हा वहां दुक्ख उठावे ।
धिक २ जीवन तेरो कोन बिरतेपै शूर कहावे ॥

दो०–जो जनती दिवलाछेरि। कहन कुछनाहीं मोरी
भार ताते में जातो ।
अगर न होतो मैं बूढो अपनोंही म्होंडो भुरसातो।

ऊदल का

दो०–आल्हा भैयापै करूं, तनमन जान निसार ।
चाचा जानेमें मुझे, ज़रा नहीं इनकार ॥

चौ०—जरा नहीं इनकार आपसे ज्यादामुझे फ़िकरहै।
नैनागढ जाते में चाचा कांपे मेरा जिगर है ॥
अमरढोलहै उनके घर में सिर्फ़ उसी का डर है ।
नहीं अकेला अबतक जाकर देता रोप समर है ॥
दो०—भयङ्कर तेग़ चलाके । लावतो बीर छुड़ाके ।
न बस कुछ रह्यो हमारो ।
सङ्कट मोचन जतन कोई चाचाजी तुम्हीं बिचारो ॥

ताला का ऊदल से

दो०—निवल शत्रु से विजयहो,भुजवल से संग्राम ।
सवल शत्रु मद दलन हित,छलबल आवैकाम
चौ०—छलबल आवै काम बिना छल चलैन ईचारा
वृन्दा सँग छल कियो बिष्णु तब शम्भु जलंधरमारा।
मानों मेरी अक्ल क़ैद से छूटे भ्रात तुम्हारा ।
इन्शा अल्लाः ताला ऊदल काम जाय बन सारा ॥
दो०छिपाओअपनीहुलिया।कुमरबन खांनकबुलिया।
अस्प अपनाआल्हाका ।
ले नैनागढ जाउ ध्यान धर मनमें जगदम्बाका ॥

कवि का

दो०—तालन की सिख शिर धरी,ऊदल करीन देर ।
पाजामा लीनों पहन,सोलह गजका घेर ॥
चौ०—सोलह गजका घेर प्याजके चिपटेजापे छुलका ।
अस्सी गजका साफ़ा तामें उरसे कलिया फुलका ॥
कुर्त्ता पहना भावक झल्ला बना खांन काबुलका ।
रस्सा लीना पकड़ हाथमें हंसामन बेंदुल का ॥
दो०—निडर नैनागढ जाता । दाऊ घोड़े कुरकाता ॥

जाय बस्ती अंदर है ।

कहताफिरे बज्जार बीच यों डोले इधर उधरहे ॥

ऊदन का

दो०-काबुल का हम खांनहे, नाम बख्तर अब्बास ।

याबू कोई खरीदिये, बढ़िया मेरे पास ॥

चौ०-बढ़िया मेरे पास खास काबुलका असलीजोड़ा ।

मिस्ल परंद आसमां को जाते खाते ना कोडा ॥

होते हवा रासका जिस दम मिले इशारा थोड़ा ।

बिला ऐबखुशनुमां शक्ल अनमोल अजायब घोड़ा ।

दौ०-खूबसूरत अयालहैं । शान आली विशालहैं ।

अस्प ये ला मिसालहैं ।

कहें चिरञ्जीलाल चाल चलते करते कमालहैं ॥

कवि का

सो०-कमठ उदैचंद राय, घूमत फिरै बज्जार में ।

तबतक प्यादे आय, दिवला छैयासे कहे ॥

प्यादे का ऊदन से

दो०-क्या रक्खा बाजारमें; ओ काबुलिया ज्वान ।

यहां तुम्हारे अस्पये, कौन खरीदे खांन ॥

चौ.कौन खरीदेखानन यहां कोईकदरदान अस्पनका ।

कौन सेठ ऐसा यहां पर जो मोल देइगा इनका ॥

चलो तुम्हें ले चलूं साथ दरबार जहां राजन का ।

मांग लेउ दिलखोल मोल अपने अमोल घोड़नका ॥

दौ०-यहां कोई सेठ न आला, घोड़ेका लेने वाला ॥

अनोखी जो शै आवे ।

और न कोई लेइ राज दरबार खरीदी जावे ॥

कोवका

दो०—सुनत बचन ऊदल चलो; पकड़े दोऊ तुरङ्ग ।
झूमत जात गयन्द सो, वा प्यादे के सङ्ग ॥
चौ०—वा प्यादेके संग चलोकरि बंदन जगदम्बाको ।
बीर बेंदुलाको चढ़वैया भारी समर लड़ाको ॥
रारि उठैया जनम जलैया चलवैया तेग्रा को ।
गयो कचहरी को निशङ्क बांको छैया दिवलाको ॥
दो०—नृपति आदाब बजाकेअस्पको रहा नचा के॥
कुदावत इत उत डोले ।
जस्सराज फ़रज़ंद उदेचँद सकल सभा से बोले ॥

ऊदल का सभा से

दो०—नृपति सहित दरबार सब, अरज सुनों देकान
बेचन को लाया यहां घोड़े आलीशान ॥

रागखम्माच—लेलो घोड़े बेचूं मोलः कोई है खरीदने वाला ।मैं अफ़गानिस्तानी खान । आकर पहुँचा हिंदुस्तान । घोड़ा लाया आलीशान । हूं क़ाबुलका बसने वाला । लेलो०। दोनों घोड़े पचकल्यान ।लीजे शालिहोत्रसे जान । सारे ऐब हुनर पहचान ॥ कोई होय परखने वाला । लेलो०। अनोखे क्या खुशनुमा अयाल । दुम के क्या बरीक हैं बाल । चलते अजब अचपला चाल ॥ चढ़ो हो कोई चढ़ने वाला ।।लेलो०॥ लाया घोड़े ला मिसाल । देखो इंद्र चिरञ्जीलाल ॥ चढ़ें द्विज नथाराम ये रूपाले । हाथरस बस्ती रहने वाला ॥ लेलो० ॥

ताबवमल्ल का

दो०—के घोड़े हैं आ पर, ऐसे आली शान ।
एक एककी बतादो, क्या क्या क़ीमत खान ॥
चौ०—बतलादोक्या दाम खानतुमनेइनका रखछोड़ा
वाजिब बोलो मोल आपके लऊं बहुत से घोड़ा ॥
महुवेवालों ने हम से संग्राम भयङ्कर जोड़ा ।
तसनस कर बसकर उनके चाहूं घमण्ड को तोड़ा ॥
दौड़-किसतरह है दुम छोटी । हुई क्यों चमडीमोटी ।
रखै क्यों कल्ला टेढ़ा ।
सच बतलादो खान भये हैं के के दांत बछेड़ा ॥

ऊदल का

दोहा—दुम सुम चमड़ी में कहीं, कसर न शाहजहान ।
शालिहोत्री को बुला, करवालो पहँचान ॥
चौ०—करवालो पहचान कदरदां अस्पकोई बुलवालो ।
ऐब हुनर अरु दांत वग़ैरह सारे दिखा भरा लो ।
बढ़िया चढ़ने वाले हों घोड़ों पर उन्हें चढ़ालो ।
क़दम चला तहक़ीक करा दिलका संदेह मिटालो ॥
दौ०—आपके पसन्द आमें ! मोल मुख मांगा पामें ।
नहीं वापिस ले जावें ।
हार हमारी जीत तुम्हारी रही राव सौदावें ॥

कवि का

दो०—ऊदलके सुनकर बचन; भूपति चतुर सुजान ।
शालिहोत्री को बुला, करवाली पहचान ।
चौ०—करवाली पहचान फेर बुलवाये चढ़ने वाले ।
जोगा भोगा आदि बहुत से शूर चढ़नको चाले ॥

करन सवारी ज्यों रकाब में पैर कोई भट डाले।
फेंक दुलत्ती उछल बेंदुला दोनों टाप उछाले ।।
कड़ा—प्यारेजी रह्यो कनौती फेर बाज चञ्चल हंसामन
हिनहिनाय ऊधम कर लागा लात चलामन ।।
दु०—उछलें कूदें धरती खोदें हय पलभर कल नहिं लेतेहैं। दोनों घोड़े नहीं किसी शूरको पास आमनें देते हैं ।।
दौड़—देख जौहर घोड़न के। उड़े औसान सबन के।।
कँपे नैनागढ़ वारे।
श्रीजसराज दुलारे ऊदल ने ये वचन उचारे ।।
ऊदल की
दो०—अजब अनोखे अस्प ये, लाया हूं कोई चीज़।
चढ़ने की नहीं किसीको. यहांपर शाह तमीज़
चौ०—यहांपर शाह तमीज़दार नहिं घोड़ाचढनेवारो
देखतकी ऊंची दुकान फीको पकवान तुम्हारो ।।
धोके की टट्टी लगाय राखो गुजराती तारो।
नाम बड़ो करतब न कछू मैं आय यहां झकमारो।।
शेर—चला अस्प ले मैं काबुल से एकसौ एक घोडा।
तरुत दहली में बेचा था सिर्फ गर्रा का एक जोडा।।
फेर कन्नौज को आया लिये जैचन्द नौ टट्टू।
गया महुबे बनाफर के अस्प लखि होगए लट्टू ।।
उन्होंने छांटकर कट्टर खरीदे अस्प अट्ठासी।
छिकामन यहां लाया हूं सुनो नृप नीति गुणरासी
चढैया इनका तुमरे ह्यां नज़र सोभी नहीं आता।
महुविया गर कोई होता तो चढ़कर सैर दिखलाता।

दो०—महोवे के रहवैया । बडे बांके चढ़वैया ॥
घूमता फिरा जहां में ।
उनकी सानी ना कोई चढ़वैया हिंदुस्तां में ॥

राधवमच्छ का

दो०—आडियल सडियल लतखने, ऐवदार मुँह जोर ।
घोडे लाए बेचने, करते आये शोर ॥
चौ०—करते आए शोर अस्प लेआए यहां छिकामन
बदतमीज़ यहां के चढ़वैया लगे खान बतलावन ॥
बार बार जस बनाफलों का हमको लगे सुनावन ।
सिफ्त गुलामन की करते आये गुस्सा उपजावन ॥
दौड—चढैया बीर बडेहैं । सो मेरें क़ैद पडे हैं ॥
मेरे चत्री हिय हारे ।
इन घोडन पर कहा बिचारे, चढ़ें महोवे वारे ॥

उदेराज का

दो०—अगर क़ैद कोई आपके, महुवे का सरकार ।
तो लाओ उसको यहां, होय ज़रा असवार ॥
चौ०—होय ज़रा असवार देखना क्या नाचेंगे घोडा ॥
कदम रेबिया दुरकी कैसी चाल चलेंगे घोडा ॥
ज़रा नहीं उछलेंगे कूदेंगे फडकेंगे घोडा ।
चढ़त महुबिया जौहर क्या २ दिखलावेंगे घोडा ॥
दौड—क़ैद से उसको लाओ । अस्प पर ज़रा चढाओ
यदी तुमको आवैगा ।
सांच झूठ सब अभी हमारा यहांपर तुल जावैगा ॥

राघवमच्छ का जोगा भोगा से

दो०—जोगा भोगा जाउ तुम; ले सँग सुभट अपार ।

भकसी में आल्हा पड़ा, लाओ उसे निकार ।
चौ०—लाओ उसे निकार ऐ बरखुरदारमेरे भकसीसे।
कर नङ्गी शमशेर घेर कर बड़ी सावधानी से ॥
अगल बगल अरु आस पाससे साल न रहे कहींसे।
बँदोबस्त से इन्तिजाम से बड़ी होशियारी से ॥
दौड़—यहां मह्लुबियाज्वानकी । बड़ाई बड़ी खानकी॥
झूठ सच जान पड़ैगा ।
देखूं इन ऐबी घोड़ोंपर क्या कर हुनर चढैगा ॥

कवि का

दोहा—आयुस शिरधरि भूपकी; जोगा भोगा ज्वान।
भकसी के ऊपर गये, सङ्ग अपरि बलवान ॥
चौ०—संगअपरिबलवाननगिनकिरपानसब्रनकरधारी
भर गोलिन से त्यार करें पिस्तौल तमञ्चा भारी॥
बड़े २ बानें ते शूर खांड़े ले खड़े अगारी ॥
श्रीजगदम्बा सुमिर तुरत जोगा ने शिला उघारी ॥
दौड—उजीतो भकसी छायो। आल्हाको दमघबरायो॥
जोगा ने रस्सी डारी ।
आल्हा कम्पौऔर दबको भोगाने गिरा उचारी ॥

भोगा का

दो०—श्री राजाजी का हुकम, भारी तुझसे काम ।
लेवैं तुझे निकार कर, बँधुआ रस्सी थाम ॥

आल्हा का भोगा से

दोहा—ग़ज़ब करो ग़ज़बी मती, है कुछ बाक़ी श्वास
धर्म बिचारो अधर्मी, दीजे मोइ न त्रास ॥
ला०—करजोर कहूं मोइ भारी त्रास न दीजे। तासे

एकदम से काट मेरो शिर लीजे ॥ महाराज करो खञ्जर से मोइ हलाल ।बिकल होय बिसमिलसा दिल दुख सह्यो न जाय कराल ॥ क्या हैगा मोसे काम बताओ भारी । मत करो हँसी बोदी तक़दीर हमारी महाराज बुला मेरी कुगति करावेगो । जानलई मन बांसनसे मोकूं पिटवावेगो ॥ मतदीनदुखीकोबारम्बार सताओ । आरत हो बिनती करूं तरस मन लाओ॥ महाराज मोइ ज्यादे कलपाओगे । कलपाओ तुम नहीं करो जैसा फल पाओगे ॥ अब तो अधम तुम कर नेक धर्म बिचारो । हत्यारे क्यों मुझ मरे हुए को मारो॥ महाराज महा दुख सहूं आकसीपर। अब खटु में दुख देउ मती इतनो अ... न करो ॥

मोगा आला का

दो०—किसी बातका डर फ़िकर, करै मती मनमांहिं ।
तोसे कोई सभा में, हाथ छुआवे नाहिं ॥
चौ०—हाथ छुआवे नाहिं मान सचतू मेरे कहेते ।
काबुल के घोड़ा आये बिकने सो राजा लेते ॥
ऐसे चपल तुरङ्ग किसी को पासन आने देते ।
क़दम चला चढ़कर बतलाना हो गुण अवगुण जेते ॥
दौड़—परख उनकी करदेना । होय सो सांचीकहना ॥
निकस मत करे अबारी ।
बांका अस्प चढ़ैया तू तारीफ़ सुनी अति भारी ॥

आला का मोगा से

दो०—उतर गये सब करमसे हाथी और तुरङ्ग ।

बांस लिखे तक़दीर में; टूटें मेरे अङ्ग ॥

छं०—टूटेंगे मेरे अङ्ग हरियल बांस लीनी जान के ।
मोसे यही है काम बस गाहक हो मेरे प्रान के ॥
सो चार छै दिन में यहीं मरजाऊंगा दुख पाइके ।
अबतो कनासो मत करो ख्वारी मेरी पिटवाइके ॥
मत ले चलो मोकूं वहां मम बीनती उर में धरो ।
मोइ जान अति दुर्बल दुखी इतनी कृपा मोपै करो।

जोगा का भोगा से

दोहा—ऐसे निकलेगा नहीं, पाजी बेईमान ।
जोगामल धस जाउ तुम, भकसी के दरम्यान।
छं०—भकसी केअन्दर जाइये भ्राता न देर लगाइये ।
पग हाथ इसके बांधकर ऊपर तुरत चढ़ आइये ॥
अधवर खुलैना गांठि अति मजबूत देना खेंच के ।
कहैं इन्द्र फिरदो ज्वान इसको तुरत लेंगे खेंच के ॥

कवि का

दोहा—जोगा सुन लागो धसन, भकसी के दरम्यान ।
अति आरत करुणा करे, मराडलीक बलवान।

आल्हा का करुणा करना

दोहा—दीननपति मो दीनकी, आज दीनता हेर ।
दीनबन्धु सङ्कट हरो, कहां लगाइ देर ॥
छं०—कहां देर मेरी वेर कीनी रमापति रघुबीर तुम
द्रोपदि पुकारी थी मुरारी अखै कीनों चीर तुम
गजराज घेरो ग्राह जब पलमें बिपति दई टारके
भारई के अन्डन पै प्रभु गज घंट दीनों डार के
मैं दीन हूं दीननपती मत मेरी सुधि बिसारिये

करुणायतन करुणा कहूं बधिकन से मोय बचाइयो।

कवि का

दोहा—आल्हा करुणा कररह्यो, नैनन नीर बहाय ।
जोगा कर पगबांध चट, चढ़ ऊपर गयो आय।
चौ०—जोगा ऊपर आय तुरत आल्हा छत्री खिचवायो
कर प्रबन्ध ले चले कचहरी तनक न विलम लगायो।
लाये राघवमच्छ पास आल्हा को बँधो बंधायो ।
देख दुर्दशा भैया की ऊदल द्रग जल भरलायो ।
कड़ा—प्यारेजी लोचन को जल रह्यो धवल के लोचन
कोना । यथा महा मंजूस गुप्त राखे निज सोना ।।
दुबोला—कञ्चन को कृष्ट छिपावै जिमि ऊदल द्दग
नीर छिपाय लयो । उत आल्हा ने पहचान भ्रात
नैनन से नीर बहाय दयो ।।
दौड़—निरखि नैनागढ़वारो।भयो क्रोधित अतिभारो।
म्यान से खञ्जर खोला ।
लाल २ लोचन बिसाल करके मसाल से बोला ।।

राघवमच्छ का ऊदल से

ोहा—अब मुझको मालुम परी, पाजी बेईमान ।
छल करने आया यहां, बन काबुल का खान।
ो०—बनकर आया खान जगाया आनसिंहसोताहै।
ब खुलगया फ़रेब न हरगिजखाउँ तेरा गोता है।
देखकर तु रोया ये देख तुझे रोता है ।
क तु महाबिया कोई मालूम मुझे होता है ।।
—खरीदूं कैसे घोड़े । दऊं मोरन के तोड़े ।।

कपटका मज़ा चखाऊं ।
तुझको इसको एक साथ गोले के साथ उड़ाऊँ ॥

ऊदन का राघवमच्छ से

दोहा—क़नबज से देखन चला, महुबे का दरबार ।
इससे मेरी डगरमें, हुई भेट सरकार ॥
चौ०—भेट हुई सरकार मुझे ये लेगया हाथ पकर के ।
ये आल्हा चढ़ने वाला सब से आलाहै बढ़के ॥
सबरे अस्प हमारे इसने निरखे परखे चढ़के ।
इससे दाम लिए घोड़न के मैंने झगड़ २ के ॥
शेर—एक दिनतौ ये मालिकथा चंदेले के खज़ानेका ।
आज दिन सो हुआ आकर निवासी क़ैदखाने का॥
एक दिन इसके बैठन को बिछे थे पाल बिस्तरहै ।
आज दिन इस बिचारेको मयस्सर खाक बिस्तरहै ॥
किसी दिनकुछ किसीदिनकुछ सोचये सोचादिलछाया॥
देख भगवानकी माया मेरे दृग नीर भर आया ॥
सबब मेरा ये रोने का सो मैंने तुमको बतलाया ।
भली पहंचान तुमने की महुबिया हमको बतलाया॥
दौड़—लड़ैया बिकट महोबिया बनें क्योंखानकबुलिया
मिटै भ्रम नृपति सकलहै।
पूछो महुबे वाले से क्यों डाला दृग से जलहै ॥

राघवमच्छ का आल्हा से

दोहा—कहि बँधुआ किस सबबसे, तू इस तरफ़निहार।
होकर अति ब्याकुल बिकल, रोयो आंसू डार॥

आला का।

दोहा—कल कल टूटी बदनकी, पड़ी बांसकी मार।
अन्न नीर मुख ना गयो, दिना होगये चार॥

चौ०—दिना होगये चार मुसीबत पड़ी बड़ी या तनपै।
ना बल इतनों रह्यो बदन जो चढ़ो जाय घोड़नपै॥
बंधुआ करके प्रान लेउ जो ठठराखी ये मनपै।
मती चढ़ाओ घोड़नपै धरदेउ तेग़ गरदन पै॥

दौड़—देखकर चपल तुरङ्गा। गिरे आंसू एक संगा॥
लगामन हाथ न देंगे।
जान लई छै चौक ये नाहर जान हमारी लेंगे॥

राघमच्छ का

दोहा—दोनों की सुन बातको; कर लीनी पहचान॥
ये महुबे का ज्वानहै. तू काबुल का खान॥

छं०—विश्वास हमको होगया सुनलो सुभट चितधारकै।
हथकड़ी बेड़ी तोख सब आल्हा की लेउ उतार के॥
तारीफ़ मैं भारी सुनी जसराज के छैया तेरी।
घोड़े पर चढ़ जौहर दिखा तबियत करै राजी मेरी॥
तो भाकसी की सज़ा तेरी माफ़ सब कर देऊंगा।
करके नज़रकी क़ैद फिर रख पास अपने लेऊँगा॥

कवि का

दोहा—सुनत हुकम छत्रिनतुरत, तनकन करी अबार
काटी बेड़ी हथकड़ी; दीनों तौक उतार॥

छं०—दीनोंहै तौक उतार गलको चैन आलाकोभयो।
तबही न्रपति राघव ने बन्दोबस्त ये करवा लयो॥
चहुंदिश नगिन शमशेर वारे भटनको ठाढ़ो कियो॥

घोड़ापे चढ़ने को नृपति तब हुक्म आल्हाको दियो।
आल्हा चलो तादम उठा कल्ला तुरङ्ग देखन लगे।।
कूदन लगे उछलन लगे होकर खुशी हींसन लगे ।।
जाकरके हंसामन तुरङ्ग ऊपर चढ़गयो पुचकार के ।
तादम उदैचन्द कहै राघव नृपति से उच्चार के ।।

ऊदल का राघवमच्छ से

दो०–इस तुरङ्ग ऊपर चढ़ा, महोवे वाला आय ।
इसपर चढ़ने के लिये, लेउ और बुलवाय ।।

राघवमच्छ का

दो०–इस तुरंग पर खान अब, तुम्हीं होउ असवार
चाल चला दिखलाइये, ज़रा न करो अवार ।।

कवि का

दो०–आल्हा और कनका धवल, लगे नचावनबाज।
चाल चालपर नृपति को; ऊदल देत अवाज़।।

ऊदल का

दो०–जाओ करते जापना, चाल २ पर ख्याल ।
अरगम चल सागाम चल, चलन लगे रोहाल।।
चौ०–चलन लगे रोहाल चालअब चलें रेबियाखासे।
चल लेरी चाल चलें दुरकी क्या अजब अदां से ।।
फरबट चांस सांस सँग जाते बातें करें हवा से।
मोर चाल चल हंसचाल चल क्यार करें तमासे ।।
दौड़–मेरे सरकार बछेड़ा। क्या जौहरदार बछेड़ा।।
हुक्म हज़रत का पावें।
तो इन घोड़ोंकी तुमको कुछ कुछ उडान दिखलावें।।

राघवमच्छ का ऊदल से

दो०–जो जो जौहर भरे ये, घोड़े आलीशान ।
सो सो सब दिखलाइये, क़सर न राखो खान ।।

ऊदल का आल्हा से

दो०–सम्हर अस्पपर बैठना. महोवे वाले ज्वान ।
अबके मेरे अस्पकी, होगी चाल उडान ।।
चौ०–होगी चाल उडान दिखा सब जौहर थोड़ा २।
किसका ऊपर जाय तुरङ्ग को छोड़ो होड़ी होड़ा ।।
करो न तनक अबार अस्प में मार तानकर कोड़ा ।
धरमन गुरुका ध्यान महोबिया ज्वान उड़ादो घोड़ा।।
दो०–गिरनका दिल अंदरकुछ्छानमानों खौफ़खतरकुछ्छ
उडा घोडा अम्बर में ।
करो हशर मत रखो क़सर जौहर में इल्म हुनरमें।।

कवि का

दोहा–दोनों भट घोडानपे, कोडा मारे तान ।
आसमान में जाइ यों, कहे उदैचंद ज्वान ।।

ऊदल का

दो०–देखी घोड़न की ससुर, राघवमच्छ उडान ।
साफ निकर कर क़ैदसे, जाय तेरो महमान।।
चौ०–जाय तेरो महमान निहारो जस्सराज छैयाको।।
मंडलीक को आल्हा को जयमाला पहरैया को ।।
देखो खान कबुलिया को घोडन के बिकबैया को।
जाय बेंदुला चढ़वैया अपने लुटाय भैया को ।।
दो०–लखे जौहर घोडनकोहुनर सब चढ़बैयन के ।।

आय अब रोको कोई । जोगा भोगा जाय तुम्हारो मंडलीक बहनोई ॥

कबि का

दो०—आल्हा ऊदल मिले इत, अपने दलमें आय ।
राघवमच्छ नृपाल उत, लीनों कटक सजाय ॥

चौ०—लीनों कटक सजाय चलद्यो मारू बम्बबजाके । जोगा भोगा सङ्ग शूर ले रण में पहुँचो आके ॥ कटक निहारि महुबियन ने दीना मोरचा लगाके । दोउतरफ़ से दई तुरत तोपन बत्ती लगवाके ॥

ला०—दोऊ तरफ़ समर में बजे दनादन गोला। जैसे कराल बादलसे बरसे ओला ॥ महाराज छूट बंदूकें रहीं अपार।जिनके गोली लगैं बदन में निकल जात वापार॥लगरही मेहमीफड़ी कहीं तीरों की कहींमारर होरहीहै शमशीरोंकी महाराज सैफ बरछी कटार त्रिशूल ॥बिछुआ भाले संगीनें भट देत उदरमेंहूल दोनोंदलमें चलरही सिरोही खट खट। नौजवांछबीले छैल गिरेहैं कट कट।महाराज होरही कठिनसमर मेंमार। कायर रहे पुकारसुभट भट लड़ैं प्रचारप्रचार। ताला आला मलखे ऊदल भट मारे। ब्रह्मा ढेबा जागन कररहे गिरारे ॥ महाराज सकल दल नृपको दयो भजाय।भजत कटक राघव देखो तब दीनोंढोल बजाय ॥ जिस घड़ी समर में बाजा ढोल अमरहै। सुन धार महुबियन को भाजो लश्कर है। महाराज भगे ताला आला मलखान। ऊदल ब्रह्मा जागन

ढेवा और नवलसिंह ज्वान । तंबुअनको तज भज
गए भूपपरमाला।करलईलूट तब राघवमच्छनृपाला
महाराज विजय डङ्का बजवा करके । नैनागढ नृप
नैनागढ में गयो आय करके ॥
दो०—इतै नृप परमाला ने । और आल्हा तालाने ।
सुभट सब भगे भगाये।
ढुंढ़वाए इकठे कीने तबताला बचन सुनाये ॥

ताला का ऊदल से

दो०—आल्हाको ब्याहन चहो, चाहोजै संग्राम ।
तोकर दिवलाके कुमर, उदैराज ये काम ॥
चौ०—उदैराजये काम करोजो काम बनामन चाओ ।
अबमतकरो विलम्ब पास तुम मछलावातिके जाओ।
आधीनी कर अमरढोल को पतो पूछकर आओ।
यातोफार टूंक करआओ या चुरायकर लाओ ॥
दो—हैक़ायम ढोल जबतलक।बिजयना मिलैतबतलक
जो मम सिख चित धारोगे ।
डारोगे भांवर आलाकी नृपति मान मारोगे ॥

ऊदल का ताला से

दो०—चाचाजी तुम हुकमसे, नैनागढ़ हमजांहिं ।
जबतक धरपै शीशहै. उज्जर करैंगे नांहिं ॥
चौ०—उज्जरहमारे नांहिं करूँ नहीं किसी बातकाडरमें
जस्सराज फरजन्द असल जो लाऊं ढोल अमरमें ।
कायम रहे बेंदुला घोड़ा और ये तेग़ा कर में ।
नैनागढ़ की कौन चलाई धसूं काल के घर में ॥
दो०—पास मछला के जाऊं । ढोलको पतो लगाऊं।

हाथ शिरपर रख दीजे । जिन्दे रहे तो मिल
आय अब चचा बंदगी लीजे ॥

कवि का

दो०—कहि इतनी बेंदुल चढ़ा, ऊदल धवल प्रचण्ड ।
मछलाके महलन चलौ, आधीरात निखण्ड ॥

चौ०—आधीरात निखँड कमठ दीना उड़ायकर घोड़ा।
सररर २ जाय रहा आसमां छाय कर घोड़ा ॥
टूटा लक्कासा मछला के महल आय कर घोड़ा ॥
हिन हिनाय करके अम्बरसे गिरह खायकर घोड़ा ।

दो०—टाप ध्वनि सुनकर भारी। जगी मछला सुकुमारी
धवल ऊदल को चीन्हा ।
राघवमच्छ नृपाल नंदनीने जवाब ये दीना ॥

मछला का

दो०—उदैराज हमसे कहो, अपने मनकी बात ।
आए मेरे महल क्यों, देवर आधीरात ॥

चौ०—देवर आधीरात अटा टूट समबिज्जु छटाके ॥
नीको भयो चन्द्रमुख फीको घेरे किस बिपताके ॥
कांतिहीन छबिहीन भये कैसे छैया दिवला के ।
कम्पत सकल शरीर मुसीवत भीर पड़ी क्या आके॥

दो०—हमारे दिवरहजारी । हुई क्या दशा तुम्हारी॥
न निशिमें दहशत खाई।
मती छिपाओ हमें सुनाओ क्यों तकलीफ़ उठाई ॥

ऊदल का

दो०—जो करने के कामसो, भाभी करैं तमाम ।
अब दीखे मोइ डूबतो, गढ़ महोबेको नाम ॥

चौ०—गढ़ महोवे को नाम रहे जो राखो राजदुलारी।
घरमें डार फ़िसाद लयो मैंने राजी करी तुम्हारी ॥
दरवाज़े पर लड़ो धवत धांधू से तेरे अगारी ।
तेरे पिता के अमरढोल से जाय न पेश हमारी ॥
दो०—तोर आशा कर आयो । रातमें दुक्ख उठायो।
महर नेंक हमपर कीजे ।
अमरढोलकी संशय सब भाभी मिटाय तुम दीजे ॥

मछला का

दो०—तजो सोच धीरज धरो, उतर बाजसे आउ ।
मोपति भ्राता अतिसुखद,क्यों घबड़ायेजाउ ॥
चौ०—क्यों घबड़ाये जाउजीत सब तरह जंगकरवाऊं
सात सहेलिन सहित प्रात मैं देवी पूजन आऊं ॥
दोसो सङ्ग सुभट बल बङ्का अमरढोल भी लाऊँ ।
रूपछिपाय आप आजैयो कारज सिद्धि कराऊं ॥
दो०—दिवर जैसे द्वापर में। भगवती के मंदिर में ॥
नृपति भीषम की लाली ।
हरी रुक्मणी बन माली तुम हरो ढोल बन माली ॥

कवि का

दो०—सुनकर मछला के बचन; उदेराज बलवान ।
घोड़ा के कोड़ा दिया; दलमें पहुँचा आन ॥
चौ—दलमेंपहुंचाआन ध्यान ताला को दिया सुनाके।
फिर कीनों विश्राम प्रातःदश चत्री चलो लिवाके॥
पेड़ २ की पींड़ ओट में दीने शूर छिपा के ।
घर माली को भेष आप मंदिरमें बैठो जाके ॥
दो०—सजा फूलनकी डाली। बैठो ऊदल बन माली ।

उते मझला सुकुमारी ।
जाय पिता के पास गिरा मुखसे ऐसे उच्चारी ॥

मझला ोका

दो०—क़ैद तुम्हारीसे निकस, कहत बहुत दुर्वाद ।
गयो महोविया जिसघडी, मोकूं भयो विषाद ।
चौ०—मोकूं भयो विषादरुकोंना। दिनभर हगसे पानी।
तब मैंने देवी को पूजन बोलो अति भय मानी ॥
कही मैंने ये पिता मेरे जीतें संग्राम भवानी ।
तो अमरढोल बजवाइ तुम्हारे पद परसूं रुद्रानी ॥
दो०—काज सो भए तुम्हारे । भजगए महोवे वारे ॥
सुनी जगदम्बा टेरी । पिता अब करो न देरी ॥
सखिन सँग मंदिर जाऊं ।
अमरढोल सँग करो हमारे पूज भगवती आऊं ॥

रायबमल्ल का

दोहा—अमरढोल इन्दर दियो, बिजय करन संग्राम।
पूजन में ताको नहीं. ले जाने को काम ॥
छं०—पूजन करन जाओ सुता आनन्द मङ्गल गाइके
दूं ढोल तासे नफ़ीरी बाजे बिबिधि मगवाइके ॥
इनको सुता बजबावती जा पूजअइयो भगवती ।
तिन अमरढोल बिशाल की मुखपर जिकरलइयोमती॥

मझला को

दो०—जा बिधि बोलो अम्बको, पूजन मैंने तात ।

ताही बिधि पूजन पिता; जांउ भगवती मात ।

मांड—म्हाने द्योजी अम्मर ढोल । जास्यां पूजन अम्बिका।करे बीनती लाड़ली तुम्हरे पिता निहोर२ म्हारी टेक निभाइदो कहूं दोऊ करजोर ॥ जास्यां ॥ थारे कारज सिधि करे भगे महोबिया ज्वान । मनै करो थे ढोलकी कठे तुम्हारो ज्ञान । जास्यां । अमर ढोलकी तरफ से थारे दिलकी दुबिधा जाय । जोगा भोगा बीरने म्हारे सागे देउ पठाय । जास्यां । अमर ढोल बजमामणो म्हाने राखो बोल । इनके थे नाहीं करो पी जाऊं बिष घोल ॥ जास्यां ॥

राघवमच्छ का

दो०—तेरी मैं राजी करूं, मछलाबति सुकुमार ।
बजवाना मत ढोलको, बेटी गली बज्जार ॥
छं०—बजवामना मत ढोलको इसमें सुता येही कला ।
बिन रण बजायो जाइतो अपने को फिर नाहींभला
संग शूरमा ले जाइयो जगदम्ब जे जांय बोलते ।
हुशियार रहियो लाड़ली इतउत महोबिया डोलते॥
चाहे भलो मेरी सुता ये कहन मेरी कीजियो ।
जब गवरि पूजन कर चुके तब मार डङ्का दीजियो ॥

कवि का

दो०—अमरढोल दीनों नपति; लिये पुत्र हंकार ।

मछला के सँग में करे, छत्री एक हजार ॥
चौ०—छत्री एक हजारमछलदे गवरि पूजने चाली ।
एक हाथ कञ्चन की झारी एक हाथ में थाली ॥
पहुंची देवी भवन जहां ऊदल बैठो बन माली ।
नृप लाली रखवाय ढोल लीनी फूलनकी डाली ॥
दौड़—सखिन सँग मछला सुन्दर।गई मन्दरके अन्दर।
अम्बको तुरत न्हवायो ।
उसीवक्त मछलावति को ऊदल ने बचन सुनायो ॥

ऊदल का

दो०—देवी ने सपनों दयो, दिवस भये हैं सात ।
अब यहां बाजे बजतहैं, सब माली के हाथ ॥
चौ०—सब मालीके हाथ बजें बाजे खुशहोयभवानी ।
एक टका सोने का मेरा बँधा मछलदे रानी ॥
टका देउ तो ढोल बजाऊं करूं खुशी रुद्रानी ।
नहीं बिघ्न पूजा में होगो सत्य उचारूं बानी ॥
दौड़—जोफल मनबांछितपाओ।तोराजीमेरी कराओ।
न बैसे ढोल बजाऊं ।
करौ घरो सब मिले घूरमें पहले तुम्हें सुनाऊं ॥

मछला का

दो०—अमरढोल में जाय लग, नीच जात को हात ।
गुण प्रभाव याको सकल, छीन हीन होजात ॥
चौ०—छीनहीन होजातढोलको गुण अमोलमालीके ।

खबरदार मत हाथ लगैयो कहूं खोल माली के ॥
बांधनको दस्तूर नयो रह्यो झूठ बोल माली के ।
जो चाहै निज खैर छुइयो मती ढोल माली के ॥
दौड–यहां पर पहले माली । लगाकर सुन्दर डाली ॥
फूल बेचै थे खाली ।
बाजे यहां बजामनकी दैने नई रीति निकाली ॥

उदल का

दो०–बजन दऊं बाजा नहीं, पहले कहूं पुकार ।
पूजा में होगो बिघन, देवी के दरबार ॥
चौ०–देवी के दरबार रैन दिन सेवा करत रहूं मैं ।
बियाबान बनखड़ उजाड़ में दुख सुख सकल सहूं मैं ।
दयो भगवती को खाऊं नहिं मांगन जाउं कहीं मैं ।
सोने को ले लऊं टका तब पूजन होन दऊं मैं ॥
दौड़–बजादऊं ढोल ज़रूरी । लऊं अपनी दस्तूरी ॥
समझ लीजे ये मनमें ।
और किसीको नहीं बजामन बाजो दऊं भवन में ॥

कवि का

दो०–ऐसे ऊदल कहि रहा; मछलावतिसे बैन ।
सुनकर जोगा ने करे, अरुण बरण निजनैन ।
चौ०–अरुण बरण करनैन तमाकि ऊदलकोधक्कामारो
लुड़कत फुड़कत गिरो ढोलपर छैया दिवला बारो ।
दांनो हत्थी टेक तानकर दयो दचोका भारो ।

फारो ढोल निहारो तादम राघवमच्छ दुलारो ॥
दौड़–क्रोधकरके अति भारी म्यान से तेग निकारी॥
करी घनसी गर्जन है ।
महा कोप कर उदेराज से जोगा कहै बचन है ॥

जोगा का ऊदल से

दो०–माली के कीन्हों ग़ज़ब, अमरढोल दयोफार ।
अब पाजी तेरो लऊं, घरसे शीश उतार ॥
चौ०–धरसेशीश उतार लऊं अति तामसछयोबदनमें
तैं अमरढोल दयो फार कहा माली के समभ्कामनमें।
तनक देर जा ठहर तोय यमपुर पहुँचाऊं छनमें ।
या कृपान से बेईमान तब प्राण न छोडूं तन में ॥
दौड़–न अशगुन सगुन बिचारो।बिघ्न पूजामें डारो।
मजा सब तुझे चखादूं।
पूरी दस्तूरी तुझको दूं धरसे शीश उठादूं ॥

ऊदल का

दो०–माली के धोखे मती, रहि जोगासिंह ज्वान।
ऊदल बहनोई ठढो; नैन खोल पहचान ॥
चौ०–नैन खोल पहचान देख श्री जस्सराज छैयाहूं ।
ब्रजनन्दन का मरबैया तो गाल दुचिलबैया हूं ॥
घोडनको बिकबैया हूं भैया को छुडबैया हूं ।
तेरे बापके नगर जमैया आला को भैया हूं ॥
दौड़–चलावे क्यों न सिरोही । ठढो सनमुख बहनोई

कुटिल कायर कुल बोरा ।
खोल इरादा मनको सब मत बक २ करे पिटोरा ॥

जोना भोगा का

दोहा—सकल शूर घनसे सिमिट, कर नङ्गी शमशेर ।
जान न पावे गुलमटा, लेउ अकेलौ घेर ॥
चौ०—लेउ अकेलौ घेर ढेर करदेउ मार सारे को ।
चंदेले के जनम रहतवा टूक खान हारे को ।
जाति कुजाति बनाफलको छैया दिवला बारे को ।
शीश उड़ादो मजा चखादो अमरढोल फारे को ॥
दौड़—एकसङ्ग झुकोज्वान सबातान छोड़ौ कृपानसब
न ऐसो मिलै सुभीतौ ।
घिरो अकेलो आन रहतवा जानन पावे जीतौ ॥

कवि का

दो०—सुनत सुभट रूरे सकल; करके कोप महान ।
घेर उदैचँद ज्वानपै छोड़न लगे कृपान ॥
ला०बसीकरन—सुभट सब करके कोप अपार झुके
ऊदलपर एक हजार । चलामैं बरछी तेग कटार ॥
मचामन लागे मारामार । लड़ैया श्रीजसराज कुमार
ढालपर रोके सब के बार ॥
दो०—बेंदुल चढ़वैया घिरो, देवी के दरबार ।
देख दसौ भट महबिया, टूटे ले तलवार ॥
ला०—समरमें रूपभयङ्कर धार।झुके०।तमञ्चाचटकरहे

चट २ । गली बाजनें तेग्र खट२ ।। छबीले छैल
गिरे कट २ । शूर झेलें चोटें डट २ ।।

दोहा—अम्बाके मठ रक्तकी, सरिता बही अपार ।
मार २ भट मझुबिया, दये समर में डार ।।

ला०—सिंहसम शूर रहे ललकार । झुके०। कुमरछैया
एिवलाबारे करदिये रणमें गिरयारे । धराधर धरधवल
भारे । बीर मतवारे संहारे । दो०—नैनागढ़ को सब
कटक जल काईसम फार, जोगा भोगाको कसो,
तनक न करी अबार।।गर्जना कीनी अपरम्पार।झुके।
चला।फिर धवल उदेचँदज्वान।हाथमें नगिनसिरोहीतान
धसादेवी मंदर दरम्यान।पकड़ लीनी मछलाबतिआन

दोहा—तँबुअनको लेकर चलो, माखिन बहाये नैन ।
ऊदल से लागी कहन तब मछुलाबति बैन ।।

छंद गोविंद कियातैयार।झुके ऊदलपर सुभट हजार।

मछला का

दो०—बट्टा दोनों कुल लगे; बिगरे जनम हमार ।
नाम भजोरी होय मम, ऊकेगो सन्सार ।।

चौ०—ऊकेगो संसार रहूं सुसरार न मैं पीहर की।
डूब जायगी लाज उदेचँद माता पिता सुसरकी ।।
नैनागढ़ हो ब्याह बढ़े मढहे तर धार रुधिर की।
तादिन में तो तेग्र सराहूं उदेराज देवर की ।।
दोड़—छत्रपति की हूं छोरी । जाऊं ना चोरा चोरी।

न यों भट तुमको मानूं ।
कन्यादान पितापे करवाओ तब क्षत्री जानूं ॥

ऊदल का मछला से

दो०—ऐ भाभी जो असल में, जस्सराज को लाल ।
कल्ल तेरी भांवर लऊं, नैनागढ में डाल ॥
चौ०—नैनागढ़ में डाल भामरें लऊं अन्न जबखाऊं ।
प्रात होत ब्रे चढूं सैन भारी संग्राम मचाऊं ॥
सांगन के खम्मा गढ़ वाऊं ढालन मंडप छाऊं ।
राघवमच्छ बाप तेरे पे कन्यादान कराऊं ॥
दौड़—जो बलहै मेरी भुजनमें । तोय ब्याहूं महलनमें।
कठिन तलवार चलाऊं ।
महलन चौक द्वार गिरियारे सब में रक्त बहाऊं ॥

कवि का

दो०—ऊदल के ये बैन सुन, मछला मगन शरीर ।
सखिन सहित जाकर महल, लगी बहामन नीर
चौ०—लगी बहामननीर भिगोवत कोरकुँवरि चूंदरकी
माता से सब कही हालियत देवी के मन्दिर की ॥
नृप से जाय भटन जोगा भोगा ढोलकी खबरकी ।
इते छोड़ उत कहूं कैफ़ियत उदैराज बिषयरकी ॥
दौड़—जोगा भोगा को लाकर। नजर ताला की आकर
किये सब हाल सुनायो ।
निशिभर कर आराम प्रात फ़िर कहे दिवलदे जायो

दिवल का

दोहा—अब विलम्ब कीजे मती, चाचाजी सुज्ञान ।

ढेवा ब्रह्मा जगनसी, सहित बीर मलखान ॥

चौ०सहित बीरमलखान ज्वानसब दलकोचचासजाओ

म्हौर काकनों बांध बीर आल्हा को दुल्हाबनाओ॥

चार अनी कर अनी चहूंदिश नैनागढ़ घिरवाओ॥

राघवमच्छ कोट ऊपर एकदम गोले बरसाओ ॥

दौड़—आज भांवर ले लूंगा। अन्नजल जभी करूंगा।

क़सम ये मैंने खाई।

नैनागढ़ पै करो चढ़ाई सुमिर भगवती माई ॥

कवि का

दोहा—सुनकर ऊदल के बचन, क़मर धार तलवार।

महुबे बारेनको भयो; सब लश्कर तैयार ॥

चौ०—सब लश्कर तय्यार करो चलदए गणेश मनाके।

हाथी घोड़ा शुतर सजा चराखिन तोपें धरवाके॥

मारू नक्कारा बजाय नैनागढ़ घेरो जाके ।

करी न पलकी देर दई तोपन बत्ती लगवाके ॥

दौड़—दनादन गोला छूटें। कंगूरा गढ़के टूटें ॥

तोर परकोटा डारो ।

तब अपनो दल सजा नृपति आयो नैनागढ़ बारो॥

राघवमच्छ का सब महुबियो सै

दो०—आओजी होवे कोई, इस दल का सरदार ।

तातै बरणी है मेरी, कर पकड़े तलवार ॥

चौ०-कर पकड़े तलवार बार करले मोपर जम २ के
हलकी २ मेरी भी चोटें झेलो थम २ के ॥
जिसदम रण में मेरी सिरोही चमचमाइ कर चमके ।
भागजाय तो बसकी नहिं ओटेसो पहुंचे यमके ॥
चौ०-कहूं पहले में जितनी होयगी पीछे तितनी ॥
आइ अब ओटो साखो ।
टुकरखोर रहतवा बहुत ऊधम उठाय तुम राखो ॥
कवि का
दोहा-ऐसे राघवनृप कहे; कर गर्जना अपार ।
सुन इतसे आल्हा धवल, कर पकड़ीतलवार॥
आला का राघव से
दोहा-या दलके सरदार हैं, चन्देले भूपाल ।
रणके मालिक के नृपति, मोर बंधरहा भाल ॥
चौ०-मोर बंधरहा भाल डरनहीं मानूं कालबलीको।
अहङ्कार तज भूप देउ कर कन्यादान लली को॥
लीजे जस भांवर दीजे जैसे कर दीनों टीको ।
ना मानों तो तोपन से चौपट्टा करूं गढ़ी को ॥
दो०-मुझे देवी का बरहे । क्या तुमको नहीं खबरहे
न मुख रणसे मोडूंगा ।
नेनागढ़ की कौन चलाई बामनगढ़ तोडूंगा ॥
राघव का आला से
दो०-चन्देले के रहतवा, जरा जबां को थाम ।
चबर २ क्यों कररहा; टुकड़ेखोर गुलाम॥
चौ०-टुकडखोर गुलाम माल खा २ हरामके फूले ।

मती जमावे आफ़त मूला बाल बैन प्रतिकूला ॥
पड़ा भाकसी रोता था पाजी उस दिलको भूला ।
मौर शीशपर बांधआज तू फिर बनआयो दूल्हा॥
दौड़—हाथ ऐसा तकि मारूं।मौर सिर सहितउतारूं।
मान सब तेरो झारूं ।
ठहर कमीने कुलहीने अब कैसी भांवर डारूँ ॥

आला का

दो०—अमरढोल अब है नहीं; जाको तुम्हें घमण्ड ।
अब भूपति दोघडी में, कसूं तुम्हारे दण्ड ॥
रागनी—कसूं तुम्हारे दंड सुता तुम्हरी को ब्याहूंगा। बेशकहैं हम रहतथा टुकडेखोर गुलाम । बनूं जमाई आपको तो जस्सराज को जाम ॥ पांव अपने पुज बाऊँगा॥कसूं०। मेरी श्रीभगवानने करी अखैतलवार। कहूं देखते आपके नैनागढ़ बिसमार । मारही मार मचाऊंगा।कसूं०। हाथी और साथी टरै टरै धरा असमान। टरै निशाकर दिवाकर तौऊ टरै न आल्हा ज्वान । तान किरपान चलाऊंगा । कसूं० । त्रैलोचन लोचन खुले होन लगे भूडोल । कमठ कंपै दिग्गज कंपै कंपै धराधर कोल ॥ गोल भट धरा गिराऊंगा ॥ कसूं०। तेग्रा मन्द्राचल रई नेती भुजा फणिन्द । मथ डारूं तुम्हरी सकल सेना रूपी सिंघ । इन्द्रमन के गुन गाऊंगा ॥ कसूं आपके दंड०

कवि का

दो०—दोऊ ओर छत्रीनमें, आयो क्रोध अपार ।
आला राघवमच्छ में, चलन लगी तलवार ॥

चौ०—चलन लगीं तलवार बार अब्बल राजानेकीनों
तमकि ताकि तकिके निशङ्क आल्हाके खांड़ो दीनों॥
काट पैंतरा हाल बनाफल लाल ढालपर लीनों ।
तड़तड़ाय आल्हा कोपौ तब कंपौ भूपको सीनों ॥
दो०—तेग्र आल्हाने लेकर । एड घोड़ा में देकर ॥

पहुंच गयौ हाथी ऊपर ।
मार ढाल औफड़ गिराय चट बैठा छाती ऊपर ॥

आल्हा का

दो०—जी चाहे जैसौ करूं; नृपति तुम्हारो हाल ।
कहां घबलई धस गई, नैनागढ़ भूपाल ॥

राघवमछ का

दो०—सुतन सहित छोड़ो हमें: भांवर दूंगा डार ।
तुम जीते हारे हमीं, श्रीजसराज कुमार ॥

आल्हा का

दो०—कपट दग़ा फिरना करो, लीजै गंग उठाय ।
उतरूं छाती से तभी, नैनागढ नृपराय ॥

राघवमच्छ का

दोहा—किसी भांति का कपटजो, करूं आपके संग।
जन्म २ भोगूं नरक, सत्य शपथ श्रीगंग ॥

कवि का

दोहा—आल्हा ने लेकर क़सम, छोड दियो भूपाल ।
तंबुअन आकर दल सहित,छोडे न्रपकेलाल ॥
चौ०—छोडे नृपके लाल फेर परमाल बरात सजाई ।
उतमें राघवमच्छ ब्याह की तय्यारी करवाई ॥
पंडित बुला भूप महलन में दयो चौक पुरवाई ।
मंगल गामन लगीं सखी मछुलाबति उबट न्हवाई॥

दो०—तब तलक महुबे बारे । महलमें जाय मंझारे ॥
सांग मंडप गढ़बाई । ढाल से दियो छबाई ॥
ब्याहकी भई तयारी ।
उतमें उरही पातिजा दिल्ली पातिसे गिरा उचारी ॥

माहिल का प्रथीराज स

दो०—तसनस कीनों महुबियन राघवमच्छ नृपाल ॥
आल्हाकी भांवर परें; नृप सम्राट बिशाल ॥
चौ०—नृप सम्राट बिशाल हुकमशूरनको जल्दचढाओ
नौलख दलको साज भूप को महल कोट घिरबाओ।
करो जायतो करो जतन नहिं फिर पीछे पछताओ।
आल्हा बरले मांग तो देखत के देखत रहजाओ ॥

दो०—समर कीजेनृप चलके महुबियनको दलदलके
दुल्हा आल्हाको मारो ।
धांधूको बैठार चौके मछलाकी भांवर डारो ॥

कवि का

दो०—सुनकर माहिलके बचन, सजवाई नृप सैन ।
तादम बोला चन्द्रकबि,प्रथीराजसे बैन ॥

चन्द्रभाट का प्रथीराम से

दो०—दिशाशूलहै दाहिनों, चलो न अभी नृपाल ॥
पीठ पिछारी चन्द्रमा, सन्मुख जोगिन काल।
चौ—सन्मुख जोगिन कालजीत भूपालनहोयतुम्हारी।
दो घंटा में बदल चन्द्रमुख के आ जाय अगारी ॥
तब तंबुअन से गवन कीजियो मानों सीख हमारी।
या नक्षत्र में जाउ राबतो बनके होगी ख्वारी ॥
दो०—इसघड़ी मिथुनलगनमें कुशलना होयगवनमें

दशा खोटी में जाओ।
इज्जतको बट्टो लगवाओ धांधू ब्याह न लाओ ॥

माहिल का प्रथीराज से

दो०—जबतक बदलैगो यहां चन्द्रकाल दिकशूल।
तबतक भांवर जांय पर, खाक रहैना धूल ॥
चौ०—खाक रहैना धूल भलो चंडूल भटाको पालो।
बात २ पर ज्योतिष खोले हरदम बैठो ठालो ॥
जाति भिकमंगा नङ्ग बने विद्याधारी को सालो।
सगुन समय असगुन बोले तम्बू से इसै निकालो ॥
दो०—जो धांधू ब्याहन चाओ चलो गन्नेश मनाओ।
मेरी सच मानो कैनों।
दो घंटामें महाराज वहां लेना रहै न देनों ॥

कवि का

दो०—सुनकर माहिलके बचन, हुक्म दिया भूपाल।
नौऊलाख दल सिमिटके, कीना कोप कराल॥
चौ०—कीनों कोप कराल चलो दल मेघमालसों बढके।
आदि भयङ्कर गर्ज बढ़ि चालो प्रथीराज भी चढके॥
नैनागढ में धसो कटक कोठा से कोठा अड़ के।
जब तक महलनपर पहुँचे गईं पांच भावरें पड़के ॥
दो०—सैन महलन अराई। मानों कोई आंधी आई।
खर्ग धांधूने भड़का।
महा कठोर घोर करक बादल सम ऊदल तड़का ॥

ऊदल का

दो०—सब भट महुबे के सुनों, समय न बारम्बार।
जिंदगानीकी आस तजि, सूँत लेउ तलवार॥
चौ०सूंतलेउ तलवार अरिन कुलकार मार कर्डारो।

सुभट गयन्दन में केहरि बनि तिग्र रूप लेउ चांटो॥
कटे २ छट्टा पट्ठन के शिर मुट्टा से छांटो।
भावरपे ये मूड़ कमीने चौहानन को बांटो॥
दो०—चलो कर क्रोध प्रचण्ड॥ करो मुंडनके खंड॥
सुनों चाचाजी तालन।
तुमतो भांवर डलबाओ मैं रोकूं हूं चौहानन॥

कवि का

दो०—ऊदल धांघू पर चलो, करके क्रोध कराल॥
तादम कहने लगो यों, बिंदुमती को लाल॥

धांघू का

दो०—अबइकलो धांघू नहीं, देगो धक्का मार॥
मालुम होवे धवलपन, ले दो भांवर डार॥
चौ०—लेदो भांवर डारतो जायो बिंदुमती को नाऊं।
पट्टा से दयो मोइ ढकेलमैं भांवर परत हटाऊं॥
बदलो लऊं बेईमानी को मछलावति को ब्याहूं।
करूँ काठिन तलवार धार श्राणित गम्भीर बहाऊँ॥
दो०—मछलदे बर ले जानों। आपने घर ले जानों॥
न समझो दूध बतासो।
अब धांघू से रुपे यहांपर पूरो २ रासो॥

ऊदल का

दो०—कटक सहित चौहानके, बनूँ तुम्हारा काल॥
आल्हा सङ्ग मछुला बरूं,तो जस्सराजकोलाल
चौ०—जस्सराजको लाल कालसे लड़ूं लड़ाई रन में।
मछलावतिको बिदा करा डोला रख दऊं खेतनमे।
ले जावे डोला को वह जिसके बल होय भुजन में।
भांवर रुक नहीं सकें पूरे आल्हाकी हसी लगन में॥

दो०—कदम दें आगे कोई । ठांस मुख दऊं सिरोंह ॥
छटौ फेरो ये जावै ।
जल्दी रोक गुलाम सातवीं भांवर अबके जावै ॥

कवि का

दो०—सुन इतनी धांधू धवल, बडो निशङ्क अगार ।
काट पैंतरा उदैचन्द, मारी सर तलवार ॥
चौ०—मारी सर तलवार खर्ग मानिंद चुरी के चटको।
धांधू चोट चलाय धवल ऊदलको धरणी पटको ॥
मंडप तर बढगयौ आय आल्हाको पहुंचौ झटको ॥
तब मलखान जवान सामनौं लीनीं धांधू भटको ॥
ला०—मलखान धवल जब किपो सामनों आकर । धांधू क्षत्रीने मारो गुर्ज घुमाकर।महाराज गुर्जकेतीन टूक भये हाल। महा क्रोध खा खांडो मारोबच्छराज के लाल। गई मुरक्क सिरोंह सो धरनी पर पटकी ॥ कुस्ती होने लगी मलखे धांधू भटकी ॥ महाराज होश भयो इत ऊदल को आन । एकदम टूटा चौहानन पर केहरिके अनुमान । तबतक आल्हा सातौं भांवर फिरआयो । गणपति को सिरनवाय खांडोले धायो।।महाराज उधरसे झुको चौंडियाराय। इतसेमहा कराल के.पकर ब्रह्म छूरी आय ।चौहानकटकसेधीरा क्षत्री आयो । इतसे रिसखा जागनने खर्ग उठायौ। महाराज झुके उत लोहा बूंदा ज्वान । ढेबा इतमें से दोंड़ो कर नागिन दुधारी तान।दोऊ तरफ सुभटअति कहांतक नाम गिनाऊं । भयो कठिन समरपर युद्ध सूक्षम गाऊं । महाराज चली भारी महलन तलवार